

ISSN: 3107-7560

KalaSopan

"Arts Evoke the Mystery"

KALA SOPAN

MULTI DISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

Volume - 01, No. 1
January-March 2025

A Peer- Reviewed Bilingual Quarterly Research Journal
Year - 01, Issue - 01





Kala Sopan Multi Disciplinary Research Journal

Volume – 01 No. 01

January-March 2025

A Peer- Reviewed Bilingual Quarterly Research Journal

Year – 01, Issue - 01

ISSN : 3107-7560

Advisory Board

1. Dr. Avadhesh Mishra, Associate Professor, DSMNRU, Lucknow, UP
2. Dr. Uttma Dixit, Head, Department of Painting, Faculty of VisualBHU, Varanasi, UP
3. Dr. Mahaveer Singh, Ex Director, All India Radio, Bhopal, MP
4. Prof. Munna Tiwari, Dean, Faculty of Arts, Bundelkhand University, Jhansi, UP
5. Dr. Prashant Mishra, BJR Institute of Law, Bundelkhand University, Jhansi, UP
6. Dr. Yatendra Mishra, Associate Professor, Dr. B. R. Ambedkar Institute of Social Sciences (Department of Social Work), Bundelkhand University Jhansi Uttar Pradesh
7. Dr. Neeta Yadav, Associate Professor, Department of History, Siddharth University, Kapilvastu, Siddharth Nagar, Uttar Pradesh
8. Prof. Jitendra Tiwari, Department of Sociology, Bundelkhand Degree College, Jhansi, Uttar Pradesh

Editor

Dr. Shweta Pandey

Assistant Professor, Institute of Fine Arts,

Bundelkhand University Jhansi Uttar Pradesh

drshwetapandey@bujhansi.ac.in, shwetapandeygkp@gmail.com

Kala Sopan Multi Disciplinary Research Journal

Joint Editor

Dr. Umesh Kumar

Associate Professor, Department of Mass Communication and New Media,
Central University of Jammu, Jammu and Kashmir
umesh.mcnm@cuammu.ac.in, umesh.or.kumar@gmail.com

Editorial Board

Dr. Anupam Pandey

Senior Assistant Professor, Department of Commerce,
Sikkim Manipal University, Sikkim
anupamsarnath@gmail.com, anupam.pandey@smudoe.edu.in

Dr. Gaurav Ranjan

Assistant Professor, Department of Journalism & Mass Communication,
Central University of Odisha, Sunabeda,
NAD Post Office, Koraput – 763004, Odisha, India
granjan@cuo.ac.in

Dr. Anjani Kumar Jha

Associate Professor & Head,
Department of Media Studies School of Computational Sciences,
Information and Communication Technology,
Mahatma Gandhi Central University, Dr. Ambedkar Administrative Building,
Near OP Thana, Raghunathpur, Motihari, District- East Champaran,
Bihar- 845401 (INDIA)
anjanikumarjha@mgcub.ac.in
<https://www.mgcub.ac.in/academics/faculty/49>

Prof. Paramveer Singh

Professor, Department of Mass Communication and New Media,
Central University of Jammu, Rahya-Suchani (Bagla), District Samba, Jammu,
Jammu & Kashmir- 181143, India
paramveer.mcnm@cuammu.ac.in

Dr. Ratnesh Yadav

Associate Professor, Department of Hindi and Other Indian Languages,
Central University of Jammu, Rahya-Suchani (Bagla),
District Samba, Jammu, Jammu & Kashmir- 181143, India
ratnesh.hnd@cuammu.ac.in

Subscription

Single Copy: Rs. 500/-

Annual: Rs. 1500/-

Institutional Membership: Rs.2000 (Annual)

Please remit your subscription through draft in favour of kala sopan.

Cover Design : Shivay Design Maker, Jhansi, UP

Publisher: Kala Sopan

Chief Editor- Dr. Shweta Pandey, Publisher- Kala Sopan and printed at
M/S Print Labs, Jeevan Shah Tiraha, Jhansi, Uttar Pradesh

About us

Starting Year of Publication 2025

Subject : Bilingual (Hindi & English)

Frequency : Quarterly

Aim And Objectives of Kala Sopan Multi Disciplinary Research Journal Aim of Kala Sopan Multi Disciplinary Research Journal. The aim of the Kala Sopan Multi Disciplinary Research Journal (KSMRJ) is to be a leading source of scholarly articles and research papers through the promotion of research publication at affordable or at no cost in long run. In another word to make research publication hassle free for financially constrained researchers and scholars. The published article will always be open access, free under Creative Commons License and archived for future generations.

Objectives of Kala Sopan Multi Disciplinary Research Journal

1. To provide publishing platform to researchers and scholars from different field.
2. To give scholars a chance to be part of the scholars community ho assists and helps others in publication and review.
3. To make research papers and scholarly articles available.
4. To create avenues for promotion and publication of research papers about and from social, economically and culturally weakened sections of the society across the world.
5. To make research publication hassle free to ensure sharing of knowledge in due time. Scope of Publication Kala Sopan Multi Disciplinary Research Journal is a Multi Disciplinary journal and hence wide scope of publication.

Original research articles, reviews and short communication in all areas of Science, Social Science, Engineering and Management are most welcome in for publication in the Kala Sopan Multi Disciplinary Research Journal.

Authors are encouraged to submit complete unpublished and original works, which are not under review in any other journals. The scopes of the journal include, but not limited to, the following topic areas: science & technology, social studies, planning and development, English language and literature.

Title	Kala Sopan Multi Disciplinary Research Journal
Frequency	Quarterly
ISSN	ISSN: 3107-7560
Publisher	Kala Sopan (A NGO Registered in Jhansi, Uttar Pradesh)
Chief Editor	Dr. Shweta Pandey
Copyright	Kala Sopan
Starting Year	2025
Subject	Multi Disciplinary Subjects
Language	Bilingual (Hindi & English)
Publication Format	Print
Email ID	kalasopan@gmail.com
Mobile No.	9935032832
Address	38 C, Nizampur, Badri Kushwaha ki Gali, Gorakhpur 273005 Uttar Pradesh

अनुक्रमणिका

क्रम सं.	विवरण	पेज नं.
1.	बुन्देलखण्ड में गोसाईयों का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक परिचय – माधवी निराला एवं डॉ. श्वेता पाण्डेय	06
2.	पूर्वांचल के प्रखर सचेतक राहुल संकृत्यायन और उनकी इतिहास दृष्टि— डॉ. राजेश कुमार शर्मा	14
3.	रामकिंकर बैज की कला यात्रा : प्रमुख चित्रों और मूर्तियों के सम्बन्ध में – रेखा आर्या एवं डॉ. श्वेता पाण्डेय	24
4.	कलाकारों का स्क़ैप आर्ट : एक विश्लेषण – रीमा सिंह	33
5.	दतिया की छतरियों में बुन्देली कला का अध्ययन – बृजेश पाल एवं डॉ. श्वेता पाण्डेय	40
6.	बुन्देलखण्ड क्षेत्र से प्रकाशित समाचार पत्र 'खबर लहरिया' का विवरणात्मक अध्ययन – विजया एवं डॉ. उमेश कुमार	50
7.	Studies on Replacement of water by Butter Milk to prepare Chapatti – Dr. Shubhangi Nigam & Riya	61
8.	Developing Ethical Frameworks for AI Rooted in Indigenous Values of Reciprocity, Responsibility, and Relationality - Vijaya & Dr. Umesh Kumar	75

सम्पादकीय



शोध नवीन ज्ञान को खोजने के साथ ही साथ स्थापित मूल्यों, सार्वभौमिक सत्य की सत्यता की जांच करने का भी कार्य करती है। शोध समाज को दिशा देने और सामाजिक उत्थान को बढ़ावा देने में सहायक होता है।

कला सोपान द्वारा इस शोध पत्रिका का प्रकाशन कला, सामाजिक विज्ञान जैसे कि साहित्य, जनसंचार, इतिहास, राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र के साथ ही साथ विज्ञान, वाणिज्य, कृषि एवं अन्य क्षेत्रों में होने वाले नवाचारों को प्रस्तुत करने के उद्देश्य से किया गया है। शोध पत्रिका कला सोपान मल्टीडिस्प्लिनरी रिसर्च जर्नल का यह प्रथम अंक है जिसमें जनसंचार विज्ञान और कला विषयों के शोध पत्रों को शामिल किया गया है। शोध पत्रों का प्रकाशन मात्र प्राप्त शोध पत्रों का ही नहीं किया जाता है। इसके लिए सर्वप्रथम शोध पत्रों को तत्संबंधित विषय विशेषज्ञों के पास भेजा जाता है। विषय विशेषज्ञों से प्राप्त टिप्पणी से शोधकर्ता को अवगत कराया जाता है और जो सुधार अपेक्षित होते हैं, उनको करने के पश्चात ही शोध पत्र का प्रकाशन किया जाता है। पत्रिका का प्रथम और सर्वमान्य सिद्धांत है कि गुणवत्तापूर्ण शोध का प्रकाशन किया जाए।

शोध पत्रिका यह प्रथम अंक आपके हाथों में सौंपते हुए खुशी हो रही है कि आपका पत्रिका के माध्यम से नवीन ज्ञान का प्रसारण हो सकेगा। इसके साथ ही साथ आप के सुझाव और प्रतिक्रिया इस उत्तम कार्य को सर्वोत्तम बनाने में सहायक सिद्ध होगा। पत्रिका के प्रकाशन में जुड़े हुए सभी विशेषज्ञों को बधाई और शुभकामनाएं। कतिपय प्रशासनिक एवं अन्य परिस्थितियों के कारण इसके प्रकाशन में थोड़ा बिलंब हुआ है लेकिन अग्रेतर अंक समयबद्ध रूप से प्रकाशित होंगे।

डॉ. श्वेता पाण्डेय

संपादक एवं अध्यक्ष कला सोपान

बुंदेलखण्ड में गोसाईयों का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक परिचय

— माधवी निराला

शोधार्थी, ललित कला संस्थान, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी

डॉ. श्वेता पाण्डेय

सहायक आचार्य, ललित कला संस्थान, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी

सारांश

गोसाई साधु सन्यासी के रूप में अपना जीवन व्यतीत करते थे। यह शिव के उपासक थे। इनका आगमन बुंदेलखंड में मराठा आगमन के साथ ही मानते हैं। यह बलशाली होने के कारण सैन्य बल भी शासकों को प्रदान करते थे, जिसमें राजेंद्र गिरी और अनूप गिरी की सैन्य टुकड़ियाँ बहुत मजबूत रही हैं। इसी के साथ गोसाई ने वास्तुकला का भी विकास किया जिसके अंदर और बाहर मूर्तिकला, चित्रकला का निर्माण कराया और बुंदेलखंड को एक अनूठी धरोहर का धनी बनाया।

उद्देश्य : गोसाईयों ने राजनैतिक, समाजिक गतिविधियों को प्रभावित किया उतना ही सहयोग इन लोगों का सांस्कृतिक गतिविधियों में रहा है। गोसाईयों ने बुन्देलखण्ड में एक अलग कला शैली को जन्म दिया। शोध पत्र के अन्तर्गत इन सभी विषयों पर प्रकाश डाला गया है।

मुख्य शब्द — गोसाई, वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला, राजनैतिक स्थिति, सांस्कृतिक स्थिति।

गोसाईयों का परिचय : गोसाई परम्परागत रूप से धार्मिक भिक्षुओं का एक समुदाय है जो बेघर भटकने वाले बैरागी साधु तपस्वी हैं। यह साधु बनने के लिए सांसारिक सुखों का त्याग करते थे। यह शिव की उपासना करते हैं। क्योंकि वे उनके इष्टदेव हैं, गुरु हैं और वह लोग इनके शिष्य हैं। सभी गोसाई साधु अपनी भक्ति के लिए शिवलिंग की पूजा करते हैं। साहित्यिक साक्ष्यों के अनुसार गोसाई साधुओं की उत्पत्ति जगतगुरु शंकराचार्य के अनुयायियों से हुई है। कहा गया है कि गुरु शंकराचार्य के चार प्रमुख शिष्य रहे हैं जो इस प्रकार हैं— पदम पाद, हस्तामलक, मण्डन और टोटक। इनके भी शिष्य रहे हैं, जिनमें —

- मण्डन के तीन शिष्य — गिरी, पर्वत एवं सागर

- पदमपाद के दो शिष्य— तीर्थ और आश्रम
- तोटक के तीन शिष्य— भारती, सरस्वती और पुरी
- हस्तामलक के दो शिष्य— वन और आरण्यक रहे हैं।

इन सभी शिष्यों को ही गोसांई सन्यासी के 10 वर्ग कहे गए हैं। ये सभी सन्यासी अध्यात्मिक शक्ति के साथ धर्म और अपने गांव वासियों, राजाओं के रक्षार्थ हेतु शस्त्र भी धारण करते थे। मुख्य रूप से यह एक सैन्य टुकड़ियों के रूप में भी जाने जाते थे। यह अधिक बलशाली सन्यासी भी होते थे। देश वासियों के ऊपर अधिक शोषण किया जा रहा था। देशी उद्योगों को नष्ट करना, कठोर राजस्व प्रणाली लागू करना, इन्हीं सब कारणों एवं प्राकृतिक आपदाओं के कारण अकाल, बेरोजगारी, भुखमरी जैसी कई समस्याओं से जनमानस परेशान था। इसी सभी परेशानियों को देखकर धर्म कार्य में लगे बलशाली गुसांई साधु सन्यासियों ने जनमानस रक्षा हेतु एकत्रित होकर अपने संगठन का निर्माण किया और यहीं से यह लोगों के हितों के लिए सैनिक कार्यों में लग गये।

बुंदेलखंड में गोसांई सन्यासियों का आगमन एवं राजनैतिक स्थिति : बुंदेलखंड में गोसांई सत्ता का उदय तथा पतन इस क्षेत्र के इतिहास की एक गौरवमयी गाथा है। उत्तर 18वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में बुंदेलखंड के अंदर गोसांई शक्ति का उद्भव एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना मानी जाती है। बुंदेलखंड के मध्यकालीन इतिहास में गोसांईयों का विवरण सर्वप्रथम दतिया के राजा दलपत राव के समय में मिलता है। दलपत राव मुगल सम्राट औरंगजेब (1657–1707) के समय दक्षिण में अदोनी के फौजदार थे। साहित्य अवलोकन के अनुसार 20 जुलाई 1688 ई० में दलपत राव दतिया आए थे और उस समय दतिया के प्रसिद्ध गोसांई साधु महादेव गिरी को भाण्डेर परगने का "डगरई" नामक गांव के मंदिर के लिए जागीर में लगा दिया।

इस समय यह दतिया क्षेत्र में गिरी साधुओं ने कई स्थान पर मंदिर स्थापित कराए और इनमें सबसे प्रमुख मंदिर शिवगिरी का मंदिर जो भगवान शिव को समर्पित है और इस मंदिर में गोसांई साधुओं की घुड़सवार आकृति उकेरी गई है। इस मंदिर का निर्माण राजा शत्रुजीत (1762–1801ई०) ने कराया था। साहित्यिक अवलोकन के अनुसार बुंदेलखंड में गोसांई संतो की परंपरा अति प्राचीन है और शिवगिरी महंत से पहले भी इनकी पीढ़ियां गुजर

चुकी थी जिनमें से एक "बाबा महादेव गिरी" थे।

बुंदेलखंड में गोसाईयों का मुख्य केंद्र दतिया रहा है। राजेंद्र गिरी दतिया के ही निवासी थे। ध्यान गिरी जो दतिया के गोसाई महंत थे इन्हीं के शिष्य राजेंद्र गिरी को बताया जाता है। यह बाद में आकर झांसी में बस गए। राजेंद्र गिरी (1751-1753 ई०) नागा गोसाई सन्यासी था। यह पूर्ण रूप से नागा नहीं होते थे। यह अपने निचले भाग पर लाल रंग का लंगोट पहनते थे; और इनके एक हाथ में शस्त्र दूसरे हाथ में अस्त्र होता था। यही कारण था कि यह लोगों पर अपना विश्वास कायम कर लेते थे। गोसाई की राजनैतिक स्थिति का उदय हम राजेंद्र गिरी से मान सकते हैं। झांसी नगर पर राजेंद्र गिरी का शासन काल ही गोसाईयों का उदय का समय माना जा सकता है। एक कथा के अनुसार— गोसाई सन्यासी राजेन्द्र गिरी कुलपहाड़ गए थे। वहां पर एक विधवा महिला (सनाढ्य) से भेंट होती है और वह अपने दो छोटे बेटों को महंत राजेंद्र गिरी को दे देती हैं जिन्हें राजेंद्र गिरी अपने साथ झांसी ले आते हैं और इनको अपना सानिध्य प्रदान करते हैं और यह दोनों आगे चल कर महान सैनिक के रूप में सामने आते हैं। इन दो बालकों का नाम उमराव गिरी (बड़ा भाई) और अनूप गिरी (छोटा भाई) रखा है। अनूप गिरी ने नवाब शुजाउद्दौला, बांदा एवं मराठा के नवाबों को अपना सानिध्य देकर युद्ध में महान सफलता हासिल की।

सन 1729 ई० में मुगल सूबेदार मोहम्मद खां बंगश जिसने महीने से जैतपुर का किला घेरे हुए था। मोहम्मद खान बंगश से छुटकारा पाने और किले को आजाद कराने के लिए बुंदेला राजा छत्रसाल जी बाजीराव प्रथम से सैन्य सहायता मांगते हैं और बाजीराव प्रथम की सहायता से ही मुगल सूबेदार मोहम्मद का बंगश अपने पैर पीछे हटाने पर मजबूर हो गया। इस सामायिक सहायता के कारण ही छत्रसाल ने अपना राज्य का तृतीय भाग बाजीराव को दे दिया। इस मिले भूभाग पर बाजीराव ने अपने सूबेदार नियुक्त किए। बाजीराव ने 1742 ई० में अपना प्रथम सूबेदार नारो शंकर (1742-1756 ई०) को झांसी का सूबेदार नियुक्त किया। उस समय वीर सिंह देव (1606-1625 ई०) द्वारा निर्मित झांसी दुर्ग के सम्पूर्ण स्थान पर गोसाई साधुओं का आधिपत्य था जिसमें गोसाई के मठ, अखाड़े, हवेलियां, खेत, बाग एवं शिवालय स्थित थे। साहित्य अवलोकन के अनुसार रानी लक्ष्मीबाई से पूर्व गोसाईयों के अखाड़े, मठ मौजूद थे। जिसमें आभात, आखात और नागा

नामक मठ स्थित थे। जिसमें गोसाईपुरा, ओरछा गेट (अंदर-बाहर), फूटा चौपड़ा और गणेश बाजार आदि में स्थित थे।

अमरा (अमरगढ़) भी गोसाई के अधिकार में था। ये सब नारो शंकर से देखा नहीं गया। नारो शंकर ने गोसाई साधु से झांसी खाली करने को कहा। गोसाई साधु को झांसी से हटाने के लिए सैन्य शक्ति (युद्ध) किया। यह युद्ध दो दिन चला। गोसाईयों की सेना का नेतृत्व राजेंद्र गिरी कर रहे थे। नारो शंकर इस युद्ध में झांसी दुर्ग अधिपत्य प्राप्त नहीं कर पाया। इसके साथ राजेंद्र गिरी से इसने एक संधी की जिसमें गिरी को 32 मील दूर मौंठ गांव की जागीर दे दी। यहां पर राजेंद्रगिरी ने एक गढ़ी का निर्माण कर लिया और मोठ से ही राजेंद्रगिरी ने बलशाली अपनी नागा पलटन तैयार की और इन्हीं के साथ मिलकर सैनिक छावनी बना ली।

राजेंद्रगिरी ने मौंठ के आसपास के आस पास गांवों पर भी अधिकार कर लिया। सन 1750 ई० में झांसी के सूबेदार नारो शंकर ने अपने पूरे सैन्य दल के साथ मोठ पर हमला कर दिया। इस अचानक हुए आक्रमण से राजेंद्र गिरी अपने और अपने साथी के बचाव के लिए तैयार ना थे इसीलिए इन्हें मोठ छोड़ कर भागना पड़ा। यहां से भागे राजेंद्रगिरी की सैन्य टुकड़ी इलाहाबाद जाकर नवाब सफदरजंग का आश्रय लेते हैं और इनको अपनी सैन्य सेवायें प्रदान करते हैं।

राजेन्द्रगिरी को सफदरगंज ने अपनी फौज का प्रमुख अधिकारी बना दिया। राजेंद्र गिरी की इमादुल्मुल्क से युद्ध करते समय दिल्ली में 14 जून 1753 ई० में मृत्यु हो गई। इनकी मृत्यु के बाद उमराव गिरी को नवाब सफदरजंग ने सैन्य दल का सेनानायक बनाया और सैन्य संचालन अनूपगिरी करता था। इन दोनों भाइयों में अपने अंत समय तक कोई भी मनमुटाव नहीं हुआ बल्कि अपनी जान से ज्यादा अपने भाई को प्यार करते थे। उमराव गिरी और अनूप गिरी ने लंबे समय तक अवध के नवाबों की सेवा की।

अनूप गिरी को राजा "हिम्मत बहादुर" की उपाधि दी गई। यह दोनों बांदा मराठों के राजाओं एवं अंग्रेजों की सेवा में रहे। इसी के साथ बुंदेलखंड में मराठा सत्ता के पतन और अंग्रेजी सत्ता की शुरुआत तक बुंदेलखंड में कई वर्षों तक यहां की राजनैतिक स्थिति में गोसाई सन्यासी का वर्चस्व रहा।

गोसाईयों की संस्कृति : गुसाई सन्यासियों ने बुंदेलखंड की राजनीतिक, सामाजिक गतिविधियों को जितना प्रभावित किया उतना ही

गोसाई सन्यासियों ने सांस्कृतिक गतिविधियों को भी प्रभावित किया। मूल रूप से यह सन्यासी थे। इसी कारण इनका पहनने-ओड़ने और जीवन यापन का तरीका भी एक सन्यासी के रूप में रहा है। 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में गोसाई सन्यासी



ने झांसी दतिया के आसपास अन्य क्षेत्रों में वास्तु कला, मूर्तिकला और चित्रकला का विकास किया जिसमें उन्होंने मठ मंदिर समाधि, मंदिर, दुर्ग, गढ़ी का निर्माण कराया और इसी के अंदर बाहर चित्रकला और मंदिरों के अंदर मूर्तिकला का भी निर्माण कराया। इनकी सांस्कृतिक गतिविधियों पर चित्रकला, मूर्तिकला, स्थापत्य कला पर बुंदेली शैली, चंदेल कालीन शैली, मुगल शैली, मराठा शैली, राजस्थानी शैली का प्रभाव देखने को मिलता है। मंदिरों का निर्माण नागर शैली में किया गया है।

स्थापत्य शैली : गोसाई शासक शंकराचार्य के शिष्य के रूप में शैव अनुयाई रहे तथा उन्होंने अधिकांश शैव धर्म से सम्बन्धित मन्दिरों का निर्माण कराया और इन लोगों में मृत्यु उपरांत उनके शवों को अग्नि संस्कार ना करके इन्हें समाधिस्थ किया जाता था। उनकी समाधि पर मंदिरों को बनाकर शिवलिंग स्थापित किया जाता था। गोसाई सन्यासी द्वारा अनेक बागों का भी निर्माण कराया। साथ ही यह मंदिर के आस-पास कुंओ का भी निर्माण कराते थे। गोसाईयो की स्थापत्य कला शैली को चार रूप में देख सकते हैं दुर्ग, गढ़ी, समाधि मंदिर, मन्दिर, व मठ।

स्थापत्य कला शैली के नाम :

- पहला मोठ की गढ़ी 1745 राजेंद्र गिरी
- अमरा की गढ़ी राजेंद्र गिरी अमरगढ़ में स्थित है। जिसका निर्माण

गोसाई शासक सन्यासी/सैनिक राजेंद्र गिरी द्वारा करवाया गया था।

- धर्मशाला का मंदिर।
- छनिया पुरा में स्थित गोसाई समाधि।
- फूटा चौपड़ा में स्थित समाधि मंदिर।
- पानी वाली धर्मशाला में शिव मंदिर।
- मढ़िया महादेव मंदिर सुगंधी पुरी के बाग में पांच मंदिर।
- दीक्षित बाग का शिव मंदिर।
- लक्ष्मी ताल का सिद्धेश्वर मंदिर।

मूर्तिकला : गोसाई सन्यासियों ने मूर्तियों का निर्माण ज्यादातर मंदिरों के अन्दर-बाहर करवाया है। जिसमें मंदिर के गर्भ गृह में मुख्य शिवलिंग विराजमान होते हैं। शिवलिंग के पीछे लेटे हुए भगवान विष्णु की प्रतिमा, विचार करते हुए नाभि से सृष्टि की उत्पत्ति करते हुए भगवान ब्रह्मा जी हैं। शिवलिंग के बाएं तरफ भगवान गणेश दाएं तरफ माता सरस्वती जी हैं। अंतराल में नंदी तथा अगल-बगल उत्कृष्ट अष्टभुजी माता देत्य को मारते हुए एवं अन्नपूर्णा जी विराजमान हैं व मण्डप में हनुमान जी, भैरव बाबा विराजमान है। मंदिरों के चारों कोनों में लघु मंदिर पंचतायन शैली में बने जिसमें भैरव बाबा, हनुमान जी, गणेश व एक अज्ञात देवी की मूर्ति स्थापित है।

इनकी मूर्तियां चंदेल, गुप्त, प्रतिहार जैसी मूर्तियों जितनी अलंकृत नहीं हैं, गोसाई कालीन शिव मंदिर ही ऐसे हैं जिनके गर्भगृह तथा आगे के मंडप और प्रतिक्षणा की चर्तुमुखी दीवारों पर विभिन्न देव प्रतिमाओं के दर्शन होते हैं। झांसी के दीक्षित बाग के मंदिर में मूर्तियों के श्रेष्ठतम उदाहरण देखने को मिलते हैं। यह मूर्तियां मंदिर के गर्भगृह के अंदर बृहत् सहस्र-लिंगेश्वर के अतिरिक्त सप्ताश्वारूढ़ सूर्य भगवान अपने सारथी अरुण के साथ, वीणाधर, मां पार्वती, हंस वाहिनी सरस्वती, गणेश भगवान विष्णु, दुर्गा, पद्मासना व मकर वाहिनी गंगा प्रतिमाओं का भी प्रदर्शन हुआ है।

चित्रकला : गोसाई शासकों





द्वारा निर्मित स्मारकों में चित्रांकन किया गया है। गोसाई चित्रकला शैली में भी बुंदेली शैली, राजस्थानी शैली, मुगल चित्रकला शैली का समावेश देखने को मिलता है। चित्रों को ज्यादातर हम गोसाई मंदिर के अंदर बाहर देखते हैं। जिसमें दतिया और झांसी क्षेत्र मुख्य रहे हैं। चित्रों में धार्मिक पौराणिक बेल-बूटे, गुलदस्ते, गोसाई सैनिक, पूजा करते हुए साधु, पशु-पक्षी आदि के चित्र देखने को मिलते हैं। मानवीय चित्रों के मानव

मुख मंडल का अंकन एक क्रम तथा पौने दो क्रम का किया गया है। गोसाई स्मारकों की छतरियों में छज्जों के टुंडों के मध्य छलाई द्वारा चित्र बनाए गए हैं। इनकी सफाई पर प्लास्टर किया गया तथा इसके ऊपर पुनः हिरमिजी मिला हुआ प्लास्टर किया गया उसके बाद मनचाहे रंगों को भरा गया। मंदिरों में बाहर दीवार पर डिजाइन बनाकर चूने के प्लास्टर को काटकर उत्कीर्ण विधि से चित्रों को देखा गया है।

मंदिर में कहीं-कहीं छोटे आलों में भी चित्र मिले हैं जिनमें शिव भगवान से संबंधित अनेक चित्र पार्वती, गणेश, ब्रह्मा, हाथी, मोर, पक्षी, शिव भगवान की बारात आदि चित्रों को देखते हैं। इन चित्रों के धरातल को लाल रंग लगाकर तूलिका के द्वारा सफेद रंग से रेखांकन कर दिया गया है। कहीं-कहीं रंगों को चित्रों में सपाट तरीके से भी भर दिया गया है। रंगों में लाल, पीले, नीले, हरे, काले और भूरे रंगों से चित्रांकन किया गया है।

निष्कर्ष : गोसाई संप्रदाय ने बुंदेलखंड को वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला के रूप में एक विशिष्ट पहचान दिलाई है। गोसाई कलाओं को बुंदेलखंड की धरोहर के रूप में एक अलग स्थान मिलना चाहिए। कुछ मंदिरों पर स्थानीय लोगों ने कब्जा कर अपनी मर्जी से इन धरोहरों को क्षति पहुंचाई हैं। उनके चित्रों के महत्व को ना समझते हुए इन लोगों ने सभी चित्रों पर चूना पुतवा दिया है जिससे इनके मूल तत्व खो चुके हैं। पुरातत्व सर्वेक्षण को गोसाईयों की कलाओं को संरक्षित रखने के लिए कार्य करना

चाहिए जिससे गोसांई साधु द्वारा दी गई कला का संरक्षण हो सके और आने वाली पीढ़ियों को उसके मूल्यों के बारे में समझाया जा सके ।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. त्रिवेदी डॉ०डी०एस०— बुंदेलखंड का पुरातत्व— प्रकाशन राजकीय संग्रहालय झाँसी. (1984), पृ. 63—132
2. जनरल एशियाटिक सोसायटी बंगाल (1789), पृ. 79
3. गुप्ता भगवान दास — मस्तानी बाजीराव और उनके बंशज बांदा के नवाव पृ.49
4. यदु डॉ० हेमू— पर्यटन में देव मंदिर. बी० आर० पब्लिशिंग कार्पोरेशन, दिल्ली (2014) पृ. 05—10
5. शेख सलीम — मैं झाँसी हूँ 1857 से अब तक — बेतवा प्रकाशन झाँसी (2007), पृ.04—07
6. Shah K. Krit: Ancient Bundelkhand – Gain Publishing Hous Delhi (1988) Page No. 50.53
7. शर्मा रोबिन:—सन्यासी जिसने अपनी संपत्ति बेच दी — जयको पब्लिशिंग हाउस मुंबई (2005) पृ० 30—36
8. वर्मा डॉ० महेन्द्र : बुन्देलखण्ड की मूर्तिकला — भारतीय कला प्रकाशन — दिल्ली (2005) पृ. 210—214
9. श्रीवास्तव डॉ० रमेश चन्द्र — बुन्देलखण्ड साहित्यिक ऐतिहासिक सांस्कृतिक वैभव —बुन्देलखण्ड प्रकाशन बृदा पृ० 143—147.
10. गुप्त डॉ० भगवानदास — मुगलों के अन्तर्गत बुन्देलखण्ड का सामाजिक आर्थिक और सांस्कृतिक इतिहास — हिन्दी बुक सेन्टर नई दिल्ली.(1997), पृ० 143—146.
11. हजारी डॉ० राजाराम — प्राचीन भारत में तीर्थ, महाभारत के सन्दर्भ मे. शारदा पब्लिशिंग हाउस दिल्ली. (2003) पृ० 01—10.
12. शर्मा, डॉ. शिवकुमार श्रोतीय, डॉ० शुक्रदेव: चित्रण विधान एवं सामग्री. चित्रायन प्रकाशन आदर्श कॉलोनी, भोपा रोड, मुजफ्फर नगर. (1997), पृ० 66—73
13. मिश्रा, श्याम जी कृष्ण—बुंदेलखण्ड में गुसांई सत्ता के उदय एवं पतन का इतिहास—शोध प्रबन्ध, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी (2002), पृ. 41—45

पूर्वाचल के प्रखर सचेतक राहुल सांकृत्यायन और उनकी इतिहास दृष्टि

— डॉ० राजेश कुमार शर्मा

प्रोफेसर — इतिहास विभाग, राजकीय महाविद्यालय, रुधौली

जनपद —बस्ती (उ०प्र०)

मोबाइल न०—7007450443

Email ID: rajeshrudhauili@gmail.com

सारांश

इतिहास के भौतिकवादी दृष्टिकोण के प्रबल पक्षधर राहुल सांकृत्यायन एक इतिहासकार, दार्शनिक, विचारक, साहित्यकार, भाषा शास्त्री होने के साथ-साथ सुधारवादी जननेता भी थे। स्वाधीनता आन्दोलन के दौरान विशेषकर बिहार के किसान आन्दोलन में इनकी भूमिका और योगदान अत्यन्त उल्लेखनीय और सराहनीय रहा है। महापंडित राहुल सांकृत्यायन ने अपना ज्ञान बढ़ाने के लिए 30 भाषाओं में शिक्षा ली थी। उनके उपन्यास 'बोल्गा से गंगा सभी भारतीय भाषा एवं अनेक विदेशी भाषा में अनुवादित है। वे कुछ समय के लिए आर्य समाज की गतिविधियों से भी जुड़ गए थे लेकिन जल्दी ही वह इससे अलग हो गए थे क्योंकि आर्य समाज की समाज-सुधार की विचारधारा उनके स्वतंत्र चिंतन में बाधा लगती थी। वह तार्किक दर्शन की खोज करना चाहते थे, जिसमें समस्त मानव जीवन के हित को देखा जा सके और यही वजह है, कि उनकी दिलचस्पी बौद्ध धर्म में जागी। वस्तुतः बौद्ध धर्म पर उनके अनुसंधान भारतीय इतिहास में अहम है।

मुख्य शब्द : राहुल, इतिहास, बौद्ध धर्म, चेतना, मानव कल्याण, चिन्तन, भाषा, दार्शनिक आदि ।

प्रस्तावना : राहुल सांकृत्यन का जन्म सन् 1893 ई० में आजमगढ़ के एक रूढ़िवादी ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इनके बहुआयामी व्यक्तित्व पर, निश्चित रूप से इस काल की राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं एवं आर्थिक-सामाजिक परिस्थितियों का प्रभाव



पड़ा होगा। इनके जीवन काल में ही भारत में हड़प्पा सभ्यता की खोज हुई थी, आर्यों की संस्कृति के स्वरूप पर बहस हो रहा था, 1857 की क्रान्ति के बाद देश में विभिन्न प्रकार के आंदोलन हो रहे थे, यूरोप में औद्योगिक क्रान्ति के बाद आर्थिक, सामाजिक क्षेत्र में परिवर्तन हो रहा था, विज्ञान के क्षेत्र में डार्विन ने जगत की उत्पत्ति और विकास की नयी व्याख्या प्रस्तुत कर दी थी और चार



दशकों के भीतर इन्हीं के जीवन काल में दो-दो विश्व युद्ध हुए। भारत में अंग्रेजी शासन के औचित्य को सिद्ध करने वाले साम्राज्यवादी इतिहासकारों (जेम्स मिल, विंसेन्ट स्मिथ आदि) तथा अंग्रेजी शिक्षा पाये राष्ट्रीय विचारधारा वाले भारतीय इतिहासकारों के मध्य संवाद-प्रतिवाद की स्थिति बनी हुयी थी। इतिहास के क्षेत्र में कार्ल मार्क्स ने ऐतिहासिक समाज के विकास में

द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद एवं वर्ग-संघर्ष का सिद्धान्त प्रस्तुत किया था। राहुल जी ने इन सभी का अध्ययन व चिंतन किया। सभी विचारों को तर्क की कसौटी पर कसने के पश्चात उन्होंने मार्क्स के द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद को ही इतिहास को समझने की कुन्जी समझा। वे प्रथम भारतीय विद्वान थे जिन्होंने इतिहास को वस्तुनिष्ठ, भौतिकवादी एवं तार्किकता के आधार पर व्याख्यायित करने का प्रयत्न किया।

राहुल जी को प्रतिगामी रूढ़ियों एवं परम्पराओं को तोड़ने में कभी संकोच नहीं हुआ। इसका प्रारम्भ उनके विवाह के अवसर पर 11 वर्ष की आयु में उनके घर से ही हुआ, जब उन्होंने इसे तमाशा बताते हुए कहा – “ग्यारह वर्ष की अवस्था में मेरी जिन्दगी को बेचने का घर वालों को अधिकार नहीं।” राहुल जी ने पूर्वजों की हर उपलब्धियों को स्वीकार करते एवं सीमाओं को तोड़ते हुए उन्होंने ऐतिहासिक विकास की गति समझकर नयी चेतना प्राप्त की, और उसको अकेले जितना प्रसारित किया उतना किसी अन्य व्यक्ति ने नहीं।

गाँव की प्रारम्भिक शिक्षा के बाद भागकर बद्रीनाथ, केदारनाथ, वाराणसी से छपरा तक की यात्रा में अध्ययन, साधु एवं किसान नेता का अनुभव

प्राप्त किया। घायल हुए, जेल गये फिर वहाँ से नेपाल, तिब्बत, श्री लंका होकर सोवियत गणराज्य तक राहुल जी की रोमांचकारी यात्रा भौगोलिक होने के साथ-साथ महान बौद्धिक सांस्कृतिक यात्रा भी है जो वैष्णव रुढ़िवाद, आर्य समाजी, सुधारवाद, बौद्ध मानवतावाद से गुजरते हुए वैज्ञानिक समाजवाद (मार्क्सवाद) तक पहुँचती है। इसलिए राहुल जी के व्यक्तित्व में उदात्त त्याग, तार्किकता, रुढ़िभंजकता, समता एवं मानवता के उत्थान के लिए समर्पण का भाव मिलता है।

अध्ययन का उद्देश्य : वर्तमान वैश्वीकृत और आधुनिक युग में शिक्षा के विकास और विज्ञान की प्रगति ने जनतांत्रिक मूल्यों को मजबूत ही बनाया है। इतिहास

आओं का अध्ययन की कसौटी पर जी ने इतिहास को एवं तार्किकता के करने का प्रयत्न इतिहास चेतना का कि इन्होंने अतीत लेकिन इनकी की ओर लौट तो अतीत को वर्तमान



लेखन की सभी विधि करने और उसे तर्क कसने के बाद राहुल वस्तुनिष्ठ, भौतिकवादी आधार पर व्याख्यायित किया। यह इनके सकारात्मक पक्ष था से सहायता तो ली दृष्टि में हम अतीत सकते नहीं क्योंकि बनाना प्रकृति ने हमारे

हाथ नहीं दे रखा है। "इस प्रकार यद्यपि उनका व्यक्तित्व बहुआयामी था, तथापि इस शोध-पत्र में हमने केवल उनकी ऐतिहासिक चेतना का ही विवेचन करने का प्रयास किया है।

शोध पद्धति : प्रस्तुत शोध-पत्र हेतु शोधकर्ता की पद्धति ऐतिहासिक, समालोचनात्मक तथा व्याख्यात्मक रही है। ज्ञात तथ्यों तथा इस विषय पर उपलब्ध पूर्ववर्ती लेखकों के विचारों और सरकारी दस्तावेज का विश्लेषण और आलोचनात्मक मूल्यांकन करते हुए प्राप्त परिणामों का सत्य की कसौटी पर परीक्षण करने का प्रयास किया गया है। शोध अध्ययन में सबसे महत्वपूर्ण वस्तु प्रस्तुत अध्ययन की विषय और सामग्री की होती है। इस विषय पर यद्यपि प्राथमिक स्रोत के रूप में विभिन्न रिपोर्ट तथा इतिहासकारों की विभिन्न रचनाओं में पर्याप्त मात्रा में सामग्री मौजूद नहीं दिखती है लेकिन फिर भी जो भी सामग्री

उपलब्ध है, जिसका प्रयोग इस शोधपत्र में किया गया है। इसके अतिरिक्त पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित विभिन्न सम्पादकों के विचारों को विश्लेषण करते हुए सामग्री एकत्र कर उसका प्रयोग द्वितीयक स्रोत के रूप में किया गया है।

राहुल सांकृत्यायन की इतिहास चेतना : राहुलजी की इतिहास चेतना व्यापक अध्ययन, भ्रमण एवं अनुभव से निर्मित हुयी थी। इन्होंने इतिहास को पृथ्वी के विकास के साथ प्रारम्भ किया तथा मानव के इतिहास को पुरातात्विक अवशेषों की प्राप्ति के साथ सीमित न करते हुए एक कोशिकीय जीवों से उसकी विकास यात्रा को देखा। किसी समय घोर ईश्वरवादी रहे राहुल ने जब ईश्वर के अस्तित्व का खण्डन किया तब इनके इतिहास चेतना की पूर्णता दिखाई पड़ता है। इन्होंने मानव के प्रत्येक स्थिति का जिम्मेदार मानव को मानते हुए ऐतिहासिक भौतिकवाद एवं द्वन्द्वात्मक संघर्ष से समाज के विकास के मार्क्स के मत

इतिहास उनके अनुसंधान एवं विषय नहीं, बल्कि आगे पुनर्निर्माण इनकी दृष्टि में विकसित नहीं अपने में लपेट है। वह इतिहास धरातल पर खड़े उसके अनुभवों



को समर्थन दिया। लिए केवल खुदाई, अध्ययन मनन का विकास और इससे का भी विषय है। जो इतिहास को करता, उसे इतिहास कर पीछे ले जाता को वर्तमान के होकर देखते हैं और को लेकर भविष्य की

बात करते हैं। यही कारण है कि इतिहास उन पर हावी नहीं, वह इतिहास पर हावी हैं। उन्होंने हड़प्पा, मोहनजोदड़ों, तक्षशिला, श्रावस्ती, कोसल, वैशाली, नालंदा, विक्रमशिला तथा अन्य बहुत से पुरास्थलों के पुरावशेषों एवं खंडहरों की इंटों, टीलों, सिक्कों आदि का अध्ययन यही समझने के लिए किया कि भारतीय इतिहास के विकास की गति और गतिरोध का रहस्य क्या है।

राहुल जी की ऐतिहासिक रचनाओं जैसे पुरातत्त्व निबन्धावली(1936), बौद्धदर्शन(1942), मध्यएशिया का इतिहास भाग— एक एवं दो(1951–52), भारत में अंग्रेजी राज के संस्थापक (1955 में अनुवाद), ऋग्वैदिक आर्य(1956) अकबर(1956) इत्यादि के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि उनमें एक उच्च

कोटि के इतिहासकार के सभी गुण विद्यमान थे। उनका पूरा लेखन प्रत्यक्ष अनुभवों एवं इतिहास-पुरातत्त्व के प्रमाणों से पुष्ट है। उनकी दृष्टि में इतिहास की कसौटी परम्परा नहीं, पुरातत्त्व है। जिस ऐतिहासिक बात को पुरातत्त्व का समर्थन प्राप्त नहीं है उसकी नींव बालू पर है। उनके अनुसार पूर्वाग्रह — दुराग्रह तथा ऐतिहासिक अनुसंधान साथ-साथ नहीं चल सकते। हमें वही निष्कर्ष निकालने चाहिये जो तथ्यों पर आधारित हों। इतिहास ऐसा विषय है, जिसमें कि अधिकांशतः निष्कर्ष को सत्य के समीपतम होने का ही दावा किया जा सकता है। वही सत्य हो सकता है जिसके लिए पुरातत्त्व, पुरालिपि, मुद्रा या तुलनात्मक भाषा तत्त्व स्पष्ट समर्थन प्रदान करते हों। राहुल जी की इतिहास चेतना में, इतिहास का सबसे महत्वपूर्ण उपयोग मानवता के कल्याण में है। इन्होंने अतीत के प्रति आग्रह से होने वाले नुकसान की ओर संकेत करते हुए कहा कि इतिहास हमारे समाज की पुरानी बेड़ियों को मजबूत करता है। अतीत के प्रति आग्रह हमारी मानसिक स्वतंत्रता का सबसे बड़ा शत्रु है। जिस जाति की सभ्यता जितनी पुरानी होती है उसकी मानसिक दासता के बंधन उतने ही अधिक होते हैं। भारत की सभ्यता निश्चित रूप से पुरानी है इसलिए इसके आगे बढ़ने के रास्ते में रूकावटें भी अधिक हैं। मानसिक दासता प्रगति में सबसे अधिक बाधक होती हैं। हमारे कष्ट हमारी आर्थिक-राजनैतिक सामाजिक समस्याएँ इतनी अधिक और इतनी जटिल हैं कि हम तब तक उनका कोई हल नहीं सोच सकते जब तक कि हम साफ-साफ और स्वतंत्रतापूर्वक इन पर सोचने का प्रयत्न न करें। उनका मानना है कि हमें अपने अतीत के महिमा मण्डन में अपनी उर्जा खर्च न करके भविष्य के निर्माण में खर्च करनी चाहिये।

रूढ़िवादिता का प्रखर विरोध : राहुल जी ने मानवता के उत्थान में बाधक सभी धार्मिक एवं दार्शनिक सीमाओं पर कड़ा प्रहार किया। उनका मानना था कि धर्म परिवर्तन की गति को नहीं मानता और अगर वह मानता भी है तो चक्रीय ढंग से (द्वापर — त्रेता — कलियुग — सतयुग)। इसमें विकास और प्रगति करने की गुंजाइश नहीं है। दर्शन को धर्म की तुलना में उन्होंने उदार बताया। उन्होंने कहा आज का यह वैज्ञानिक युग प्रेरित करता है कि हम स्वप्नजगत को छोड़े और स्वाभाविक जगत में आये। यह संसार जो प्रतिक्षण परिवर्तित हो रहा है, और परिवर्तन भी ऐसा कि इसका अतीत हमेशा अतीत ही रहेगा, वर्तमान रूप नहीं धारण कर सकेगा, ऐसी स्थिति होने पर स्थिरतावादी धर्म हमारे लिए कभी सहायक नहीं हो सकते। जगत की गति के साथ हमें भी सरपट दौड़ना

चाहिये किन्तु धर्म हमें खींचकर पीछे रखना चाहते हैं। क्या हमारे पिछड़ेपन से संसार—चक्र हमारी प्रतीक्षा के लिए खड़ा हो जायेगा?

राहुल जी ने समाज के विभिन्न पक्षों को देखा—परखा ही नहीं, समाज के विकासक्रम और इसके बदलते स्वरूप का भी व्यापक अध्ययन किया, विशेषकर भारतीय समाज का। इसके लिए उन्होंने इतिहास पुरातत्त्व का गंभीर अध्ययन किया, कई भाषाओं का ज्ञान अर्जित किया। 'महापंडित' की उपाधि उन्हें काशी की महासभा ने दी थी। वेदों के अध्ययन के आधार पर राहुल ने अपने ग्रन्थ 'ऋग्वैदिक आर्य' में वैदिक समाज का ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन प्रस्तुत किया। इन्होंने लिखा कि ऋग्वेद के जिज्ञासुओं को अपनी कल्पना की सीमाओं को जान लेना आवश्यक है। ऋग्वेद हमारे देश के ताम्र—युग की देन है। उस समय ताम्र—युग अपने अंत की ओर था जब सप्त सिंधु (पंजाब) के ऋशियों ने ऋचाओं की रचना की और जब सुदास ने 'दाशराज्ञ युद्ध' में विजय प्राप्त करके आर्यों के जन व्यवस्था की जगह एकताबद्ध सामंती व्यवस्था कायम करने का प्रयत्न किया। सप्तसिंधु के आर्यों की संस्कृति प्रधानतः पशुपालकों की संस्कृति थी। आर्य खेती जानते थे और जौ की खेती भी करते थे। पर, इसे इनकी जीविका का मूल नहीं, बल्कि गौण साधन ही कहा जा सकता है। वह अपने गौ, अश्वों, भेड़—बकरी को अपना परम धन समझते थे और ये ही उनके खान—पान, पोषाक एवं देवताओं को संतुष्ट करने के सबसे बड़े साधन थे। पशुधन को परम—धन मानने के कारण ही आर्यों को नगरों की आवश्यकता नहीं थी। इस प्रकार ऋग्वैदिक आर्यों की संस्कृति पशुपालनों एवं ग्रामों की संस्कृति थी। इन सीमाओं को ध्यान में रखना चाहिये।

भारतीय धर्म व दर्शन और राहुल जी : राहुल जी के अनुसार ऋग्वैदिक आर्यों का सम्बन्ध ईरानियों, शकों, ग्रीक, जर्मन, फ्रेंच, मेसोपोट्यामिया आदि से कम से कम भाषायी तौर पर तो था ही। आर्यों के समानान्तर सप्त सिंधु प्रदेश में एक नगरीय सभ्यता भी विद्यमान थी साथ ही इनका सम्बन्ध और संघर्ष दास—दस्युओं से भी था। हिमालय की खस व किरात जातियों में ऋग्वैदिक देवता आज भी पूजे जाते हैं। वैदिक समाज के स्वरूप के बारे में इन्होंने लिखा— उस समय वर्ण—व्यवस्था कर्म पर निर्भर थी, ब्राह्मण, क्षत्रिय हो सकता था और क्षत्रिय, ब्राह्मण। ऋग्वेद के प्राचीन मंत्रों में किसी एक देवता को सर्वोपरि मानने का ख्याल नहीं था। किन्तु बाद में मंत्रों (दशम् मण्डल) में बहुदेववाद के एकेश्वरवाद की ओर प्रगति दिखाई पड़ती है। सभी जातियों

के देव लोक में उनके अपने समाज का प्रतिबिम्ब होता था। भौतिक परिवर्तनों के कारण समाज के बदलने के साथ-साथ दार्शनिक-धार्मिक मान्यताएं भी बदलती हैं। ऋग्वेद का 'ब्रह्मा' एक साधारण देवता हैं किन्तु उपनिषदों में 'ब्रह्म' एक अद्वितीय निराकार शक्ति बन जाता है। ऋग्वेद में 'आत्मा' शब्द प्राणवायु या शरीर के लिए प्रयुक्त हुआ है। वैदिक काल के ऋषि पुनर्जन्म से परिचित नहीं थे। शायद उनकी सामाजिक विषमताओं के इतने जबरदस्त समालोचक पैदा नहीं हुए थे जो कहते कि दुनिया की यह विषमता, अमीरी-गरीबी, दासता-स्वामिता, जिससे चंद को छोड़कर बाकी सभी दुःख की चक्की में पिस रहे हैं, सख्त सामाजिक अन्याय है और समाधान कभी न दिखाई देने वाले परलोक से नहीं किया जा सकता। जब इस तरह के समालोचक पैदा हो गये तब उपनिषद काल के धार्मिक नेताओं को पुनर्जन्म की कल्पना करनी पड़ी। पुनर्जन्म के माध्यम से इस विषमता का समाधान विषमता के द्वारा किया जाना बड़े ही चतुर दिमाग का आविष्कार था। वैदिक कर्मकाण्ड के विरोधी, बुद्धि-विवेक के पक्षधर, दुःख के कारण व उपाय ढूंढने वाले बुद्ध ने उनका ध्यान खींचा, वह बौद्ध हो गये किन्तु शीघ्र ही बौद्ध धर्म की सीमाएं उनको समझ में आयी और मोह भंग हो गया।

बुद्धकालीन सामाजिक-धार्मिक क्रान्ति के सम्बन्ध में राहुल जी ने कहा कि बुद्ध ने दुःख और उसकी जड़ को समाज में न ढूंढकर, व्यक्ति में देखने की कोशिश की। भोग की तृष्णा के लिए राजाओं, क्षत्रियों, ब्राह्मणों, वैश्यों सारी दुनिया को झगड़ते, मरते-मारते देख उस तृष्णा को व्यक्ति से हटाने की कोशिश की। मानों काटों से बचने के लिए सारी पृथ्वी को ढकने के बजाय अपने पैरों को चमड़े से ढका जा सकता है। दूसरी बात यह कि सामाजिक ढांचे को बदलना उनका उद्देश्य भी नहीं था। बात यह है कि जो अपनी इच्छाओं और जरूरतों का दमन कर देगा, वह समाज को बदलने की जरूरत क्यों महसूस करेगा? इसी कारण बुद्ध के दर्शन में भी औरों की तरह यह त्रुटि आ गयी कि उसे समाज पर लागू करने की कोशिश नहीं की गयी। इस तरह राहुल जी ने महसूस किया कि 'दुःख सत्य' के साक्षात्कार से दुःख हेतुओं को संसार में दूर करने का जो सवाल था, वह तो खत्म हो गया। बुद्ध ने औरों से आगे बढ़कर दुःख के कारण और निवारण के उपाय को स्वीकार किया था लेकिन व्यवहार में उसे छोड़कर (बल्कि दुःख से पीड़ित लोगों को ही अपने अभियान के दायरे से निकालकर) दुःख दूर करने में अपनी असमर्थता स्वीकार कर लिया।

बुद्ध ने क्षणिकवाद को समाज की आर्थिक व्यवस्था पर लागू नहीं करना चाहा। इससे स्पष्ट है कि राहुल जी की इतिहास चेतना बुद्ध की विचार-धारा छोड़कर आगे क्यों बढ़ी। राहुल जी मूलतः शोषक परजीवी वर्गों के खिलाफ संघर्ष के और उनसे शोषितों पीड़ितों की मुक्ति के तरफदार हो गये। इसलिए वह मेहनतकश जनता के मुक्तिमार्ग और उस पर चलने के लिए मुक्ति

के दर्शन की खोज कर रहे थे ।

आध्यात्मिक चेतना और धर्म प्रभावित दर्शन से मुक्त होकर राहुल जी आर्य समाज की ओर आकृष्ट हुए, क्योंकि स्वामी दयानंद सरस्वती सामाजिक रूढ़ियों और कुसीतियों को तोड़ने और मिटाने का अभियान चला रहे थे। लेकिन उनकी सबसे बड़ी सीमा यह थी कि वह वैदिक मान्यता के आधार पर वैसा कर रहे थे। वैदिक समाज में जात-पात नहीं थी, भेद-भाव नहीं था, यह तो ठीक है लेकिन जात-पात, भेद-भाव मिटाने के लिए, वैदिक समाज में लौटकर जाना सम्भव नहीं। यही कारण है कि राहुल जी यहाँ से भी आगे बढ़ गये। वास्तव में जिस नयी चेतना का प्रसार राहुल जी ने किया, वह मानव-समाज के इतिहास में एक नये युग का प्रवर्तन करती है। उनका मत है कि आधुनिक मनुष्य की चेतना विज्ञान, जनतंत्र एवं मानवीय पुरुषार्थ से नियंत्रित और उन्हीं की आवश्यकताओं से विकसित होती है। इस युग में पहली बार मनुष्य सबके ऊपर तब प्रतिष्ठित हुआ जब समाजवाद का निर्माण शुरू हुआ।

राहुल जी ने भारत में मनुष्य की चेतना को प्राचीनता और मध्यकालीनता से मुक्त कर आधुनिक बनाने का अथक प्रयास किया। वैज्ञानिक चेतना की विशेषता है— कार्य—कारण श्रृंखला में सोचना। इन्होंने सामाजिक प्रसंग में कहा— संसार में बिना कारण कोई कार्य (बात) नहीं हुआ करता। पूँजीवाद भी तब उत्पन्न हुआ जब उसके उत्पन्न करने वाले कारण पैदा हो गये थे। इसी तरह साम्यवाद (वैज्ञानिक—साम्यवाद) तब पैदा हुआ जब उसे प्रगट करने वाले कारण मौजूद हुए।

आज का नवशिक्षित भारतीय भी, वेद व उपनिषद के ऋषियों को ही अनंतकाल के लिए दार्शनिक तत्वों को सोचकर पहले से रख देने वाला समझता है। जबकि आज का यूरोपीय विद्वान प्लेटो और अरस्तू को दर्शन की प्रथम व महत्त्वपूर्ण ईंट रखने वाला समझता है। हमें भी अपने समय के अनुसार सोचना—विचारना है और प्राचीन ऋषियों, दार्शनिकों, विद्वानों आदि को अपनी चिंतन परम्परा में महत्त्वपूर्ण सोपान समझना है न कि अंतिम सोपान समझ कर विकास की गति को अवरुद्ध करना है।

राष्ट्र के प्रति राहुल जी का दृष्टिकोण : राहुल जी का इतिहास चिंतन सारात्मक था। उन्हें विश्वास था कि प्रतिगामी शक्तियों के प्रयासों के बावजूद समाज आगे बढ़कर रहेगा और ये चाहते थे कि भारतीय समाज की प्रगति तेजी से हो। आर्थिक शक्तियाँ पुराणपंथी समाज के अंडे को फोड़कर बाहर निकल चुकी हैं। वे सहस्राब्दियों के रुके विकास को फिर से चालित कर रही हैं। तेजी से आगे बढ़ने के लिए जनता का शिक्षित होना आर्थिक ढाँचे का समाजवादी होना आवश्यक है।" राष्ट्र को सुदृढ़ और जनता के जीवन को सुखी बनाने के लिए हमें बड़े कदम, बड़ी तेजी के साथ उठाने होंगे। यह तब सम्भव है जब कृषि में वैज्ञानिक पद्धति अपनायी जाये, भूमि की प्राकृतिक सम्पदा का

समुचित उपयोग किया जाय, कल-कारखानों का विस्तार हो।

आज के समय में राहुल जी की इतिहास चेतना को आत्मसात करना एक नये क्रान्तिकारी बौद्धिक सांस्कृतिक आंदोलन के सूत्रपात की आधारभूत शर्त हैं। राहुलजी इतिहास के एक ऐसे संक्रमण काल के साक्षी थे, जब राष्ट्रीय आंदोलन के मुख्य धारा की सीमाएँ क्रमशः ज्यादा से ज्यादा स्पष्ट होती जा रही थी। इस प्रक्रिया को राहुल जी ने समझा और राष्ट्रीय जागरण से भी आगे बढ़कर उन्होंने मेहनतकश अवाम की अगुवाई में एक नये सामाजिक सांस्कृतिक परिवर्तन का स्वप्न देखा तथा सर्वथा नये संदर्भों में एक नये जनवादी एवं आलोचनात्मक विवेक की पुनर्प्रतिष्ठा की।

राहुल जी की इन्हीं ऐतिहासिक अवदानों के लिए डॉ० काशी प्रसाद जायसवाल ने 1937 ई० में लिखा था 'राहुल एक बुद्ध पुत्र ही नहीं, प्रमुखतः एक भारत पुत्र हैं।.....जनता के आदमी हैं, एक मायने में गाँधी से भी बड़े। उनका व्यक्तित्व बुद्ध से मिलता जुलता, जीव मात्र के प्रति दुर्बलता से मुक्त हैं। उनका दृष्टिकोण विश्वव्यापी, सुस्थिर एवं शांत हैं।'

निष्कर्ष : राहुल जी की इतिहास चेतना का स्वरूप ऐसा है कि उन्हें इतिहास पुरुष कहा जा सकता है। अनेक पीढ़ियों के ज्ञान, आशा-आकांक्षा आदि का जो सार वर्तमान में हमें मिला है, आगे ले चलने के लिए वही वास्तव में इतिहास-पुरुष है। इनकी इतिहास चेतना हमारे समस्त इतिहास एवं ऐतिहासिक ज्ञान का ऐसा तत्व है, जो हमें भविष्य की दिशा दिखा रहा है। उन्होंने अपनी कृतियों द्वारा मानवीय, करुणा, समता और अधिकारों की लोकतांत्रिक व्यवस्था को विश्व पटल पर अभिव्यक्त किया। एक व्यक्ति कितने आयामों वाला हो सकता है इसे समझने के लिए हमें राहुल सांकृत्यायन के पास जाना पड़ेगा।

एक सचमुच का क्रान्तिकारी व्यक्तित्व जिसने अपने जीवन में ही असंभव को संभव कर दिखाया। आत्मशक्ति व्यक्ति के विकास की कितनी अनन्त सम्भावनाएँ खोल सकती है राहुल इसके अनन्य प्रमाण थे। वस्तुगत स्थितियाँ शायद ही कभी उनके अनुकूल रही हों पर आत्मगत शक्ति की मानो उनके हाथ में लगाम हो- जिधर चाहा मोड़ दिया। आज का समय सारी दुनिया में संक्रमण का है।

सारे पुराने मूल्य-मान्यताएँ-संस्थाएँ प्रश्नों के घेरे में हैं और नई राहें प्रशस्त नहीं हो पा रही हैं। भारत में नवजागरण की बात की जा रही है लेकिन इस नवजागरण के लिए प्रेरणा का स्रोत कहाँ है?

राहुल की सबसे बड़ी प्रासंगिकता यह है कि उनके ग्रंथों की, उनके कार्यों की, आज भी उतनी जरूरत है। जब तक 'जोकों का राज्य' समाप्त नहीं होता, जब तक दुनिया को बदलने की जरूरत बाकी है तब तक एक दिशा संकेत और समर्पित जिजीविषा की प्रेरणा के रूप में राहुल जिन्दा रहेंगे।

उनके जीवन का सूत्र वाक्य था— ' भागो नहीं दुनिया को बदलो।' आज इस एक वाक्य की अत्यन्त प्रासंगिकता दिखती है।

सन्दर्भ :

1. राहुल सांकृत्यायन, सेलेक्ट एजेस ऑफ राहुल सांकृत्यायन, पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, पृ० 16
2. राहुल सांकृत्यायन, मेरी जीवन यात्रा भाग-1, राधाकृष्ण प्रकाशन, पृ० 32-33
3. प्रभाकर मैकवे, पुरातत्त्व निबन्धावली, साहित्य एकेडमी प्रकाशन, पृ० 227-28, 231,
4. ब्रजेश कु. श्रीवास्तव, राहुल सांकृत्यायन: एक इतिहास परक अनुशीलन, किताब महल प्रकाशन, पृ० 288-92
5. राहुल सांकृत्यायन, दर्शन-दिग्दर्शन, किताब महल प्रकाशन, पृ० 05, 364, 388, 511, 542
6. राहुल सांकृत्यायन, ऋग्वैदिक आर्य, साहित्य एकेडमी प्रकाशन, पृ० 1-3, 34
7. अलाका अत्रेय चुडाल, ए प्रीथिकिंग कल्चरल नेशनलिस्ट, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, पृ० 240-46
8. जानकी पाण्डेय, राहुल सांकृत्यायन घुम्मकड़ शास्त्र और यात्रावृत्त, जनाना भारती पब्लिकेशन, पृ० 31, 112
9. राहुल सांकृत्यायन, मानव समाज, किताब महल प्रकाशन, पृ० 221
10. राहुल सांकृत्यायन, फ्राम वोल्गा टू गंगा, लेफ्टवर्ड बुक्स पब्लिकेशन, पृ० 42-48
11. दृटव्य, राहुल का लेख, 'इतिहास - पुराण', विविध प्रसंग, संकलन (नयी दिल्ली, 1988) पृ० 33-35

रामकिंकर बैज की कला यात्रा : प्रमुख चित्रों और मूर्तियों के सम्बन्ध में

— रेखा आर्या

शोधार्थी, ललित कला संस्थान, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी

डॉ. श्वेता पाण्डेय

सहायक आचार्य, ललित कला संस्थान, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी

सारांश

रामकिंकर बैज एक महान व्यक्तिवादी चित्रकार व मूर्तिकार थे। आपने शान्ति निकेतन कला भवन में कला परम्परा में एक नये प्रयास का आवाहन किया व शिल्पाकृतियों में अमूर्त रूपों को ढालने का प्रयास किया और उसमें सफलता प्राप्त की। मेरे इस शोध पत्र का शीर्षक "रामकिंकर बैज की कला यात्रा, प्रमुख चित्रों और मूर्तियों के सम्बन्ध में है। मैंने इस शोध में रामकिंकर बैज की चित्रण कला व मूर्तिकला का विवरण प्रस्तुत किया है। रामकिंकर बैज प्रमुख के मूर्तिशिल्प व चित्र जो शान्ति निकेतन के कला भवन की शोभा बढ़ाते हैं और विभिन्न संग्रहालयों में संरक्षित हैं।

'यक्ष-यक्षिणी', की दो विशाल प्रतिमाएँ नई दिल्ली में इस स्थित रिजर्व बैंक की बिल्डिंग के द्वार पर हैं, बैज के चित्रों की अनेक प्रदर्शिनियाँ देश विदेश में हुई हैं। सन् 1947 ई० इनके चित्रों की एकल प्रदर्शनी दिल्ली में हुयी सन् 1950 ई० व सन् 1951 ई० में पेरिस की रियलिटीज नौबलेस के टोक्यो एशियनों कला प्रदर्शनी में चित्र प्रदर्शित हुये। इसके अतिरिक्त ललित कला अकादमी की वार्षिक कला प्रदर्शनी में इनके चित्र प्रदर्शित किये गये हैं।

मुख्य शब्द : रामकिंकर बैज,

शिल्पाकृतियाँ, शान्तिनिकेतन, यथार्थवाद, कलाकार



प्रस्तावना : कलाकार को यह भूल जाना चाहिए कि वह किस जगह जन्मा है वह क्या है; यह सब भूलकर उसे सबसे पहले अपने आपको समर्पित करना होगा। उस मूल परम्परा के प्रति, जिससे उसने कला सीखी है और उस कला का अर्थ उसके लिए केवल मान या प्रतिमान नहीं है,

उसका अर्थ ध्यान व तथ्य भी है, क्योंकि ध्यान का योग जिसे कलाकार ने सीखा उसने यह भी सीखा है कि सामने मिट्टी नहीं है जिससे हम मूर्ति बना रहे हैं, कलाकार के लिए मिट्टी का रूपान्तरण पहले ही हो चुका है अब वह रूपान्तरित मिट्टी से कुछ निर्मित करने जा रहा है जो मिट्टी में प्राण डालेगा और वह प्राण कलाकार का है, समाज का है, कला का है। कलाकार को इस निश्चय के साथ कलाकारी करनी चाहिए। तब जाकर वह सम्पूर्ण कलाकार बनकर एक सम्पूर्ण कलाकृति का निर्माण करता है। इस स्थिति में आकर जब एक कलाकार रचना करता है तो वस्तुतः वह रचना 'रूपान्तरण' ही होती है, फिर वह कला कृति चाहे मिट्टी की हो या फिर स्याही और कागज की, चाहे रंग और तूलिका के द्वारा बनी हो। रामकिंकर ऐसे ही विरल कलाकारों में से एक थे जिनको कला ईश्वरीय देन है।

रामकिंकर ने अपनी कला के द्वारा कलाकृति में प्राण डाले हैं फिर वह सीमेन्ट कंकरीट की मूर्तिशिल्प हो या फिर जलरंग, तैलरंग या टेम्परा रंग प्रविधि हो। वे सभी कलाओं में सिद्धहस्त कलाकार थे। रामकिंकर बैज चित्रकार की भांति प्रशिक्षित और मूर्तिकार के रूप में प्रतिष्ठित भारत के ऐसे सफल मूर्तिकार हैं, जिन्होंने शिल्पाकृतियों में अमूर्त रूपों को ढालने का प्रयास किया और उसमें सफलता पायी। भारत के प्रसिद्ध कला केन्द्र शांतिनिकेतन से प्रशिक्षित चित्रकार होने के कारण वह मूलतः आकृति मूलक चित्रों के चितरे रहे और उन्होंने इसी रूप में अपनी कला यात्रा प्रारम्भ की थी। रामकिंकर बैज ने अपना जीवन स्वतन्त्र रूप से कला क्षेत्र में ही बिताया। आपने

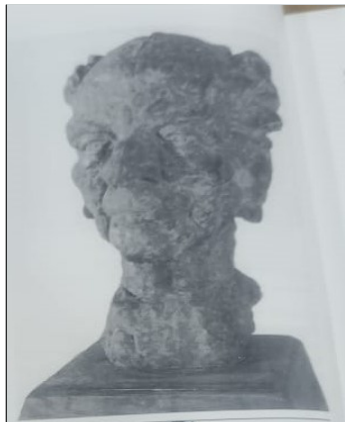


74 वर्ष की आयु में 2 अगस्त 1980 ई० को महानगर कलकत्ता में इस दुनिया से विदा लेकर पंचतत्व में विलीन हो गये।

उद्देश्य : यह शोध पत्र रामकिंकर बैज की कला यात्रा, उनके प्रमुख चित्रों और मूर्तियों के सम्बन्ध में एक परिचय है जिसका मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित है –

1. रामकिंकर बैज के चित्रों का वर्णन व कलात्मकता का वर्णन करना।
2. रामकिंकर बैज के चित्रण में प्रयोग होने वाले रंग माध्यम तकनीक व कला शैली का अध्ययन करना।
3. रामकिंकर बैज ने शांतिनिकेतन में चल रही कला परम्परा के विपरीत चलकर स्वयं की कला शैली को विश्व कला जगत में विख्यात किया।
4. मूर्तिकला के क्षेत्र में रामकिंकर बैज ने किस प्रकार साधारण सी सामग्रियों व विधि का प्रयोग कर मूर्तिशिल्प में प्राण डाले हैं जो कला जगत के लिए एक मुख्य मार्ग है।
5. रामकिंकर बैज ने किस प्रकार अमूर्त रूपों से आगे बढ़कर कल्पनाजन्य चित्रों का चित्रण किया है।

रामकिंकर बैज का जीवन परिचय व प्रारम्भिक कला यात्रा : रामकिंकर की कला अंतर्मुखी और व्यक्तिवादी है जिसका मूलाधार उनके व्यक्तित्व में निहित था। वह केवल एक सफल मूर्तिकार ही नहीं अपितु एक सफल चित्रकार भी थे। रामकिंकर ने शांतिनिकेतन कला भवन में कला परम्परा में एक नये प्रयास का आवहन किया व शिल्पाकृतियों में अमूर्त रूपों को ढालने का प्रयास किया और उसमें सफलता प्राप्त की। "उच्च रूप से बढ़ते हुए कल्पना-जन्य एवं वैयक्तिक शैली से प्रेरित उनके मूर्ति शिल्प नवीन कला जगत में नयी रचना द्वारा गति शक्ति और स्फूर्ति देने के लिए अपना एक विशिष्ट स्थान रखते हैं।



रामकिंकर बैज का जन्म 25 मई 1906 ई० को पश्चिम बंगाल के एक जिला बाँकुरा के जुगगीपाड़ा गाँव में हुआ था। इनके पिता का नाम चंडीचरण



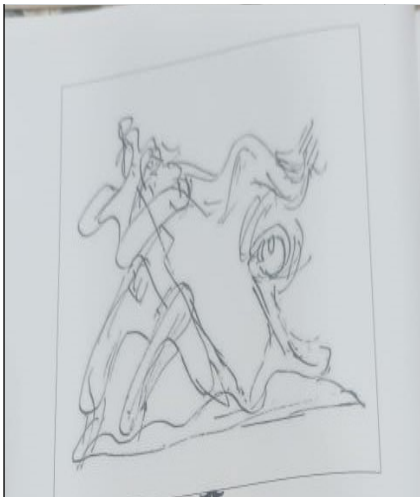
एवं माता का नाम संपूर्णा देवी था। पिता पेशे से नाई थे व माता शिव भक्त थी। रामकिंकर बचपन से ही कला प्रतिभा के धनी थे। “जब वह अपनी माँ के गर्भ में थे तब एक साधु ने उनकी माँ से कहा था कि “जो बच्चा आपकी गर्भ में है वह एक दिन विश्वप्रसिद्ध हो जाएगा”। रामकिंकर की माँ इन्हें कभी राम तो कभी नीलमणि कहकर बुलाती थी। रामकिंकर का कला के प्रति लगाव बचपन से ही था। इनके पिता जब इनका पढ़ना लिखना सिखाते थे तब आपका मन पढ़ने लिखने से ज्यादा रेखा

चित्र बनाने में लगता था। इनकी रुचि पढ़ने लिखने से ज्यादा कला में थी। एक दिन रामकिंकर पढाई के समय चित्र बनाने में गहराई से तल्लीन थे। उन्हें पिताजी का अपने पास खड़े होने का एहसास भी ना हुआ जबकि उनके पिताजी उन्हें बहुत समय से देख रहे थे। जब चित्रण कार्य पूरा हो गया तब पिताजी ने उनका कान पकड़ा और चिल्लाकर बोले कि “तुमने अपनी पढाई छोड़ दी है और ये है”। उस दिन रामकिंकर का कला के प्रति लगाव के लिए यह उनकी आखिरी डाँट थी।”

इसके बाद उनका लगाव कला के प्रति बढ़ता ही चला गया व दिन प्रतिदिन वह कला के नये नये आयाम सीखने में लग गये।

“रामकिंकर के घर के पास ही कुम्हारों का इलाका था जहाँ घरों की दीवारों पर देवी देवताओं के चित्र बने हुये थे। वह चित्र रामकिंकर को बहुत ही आकर्षित किया करते थे, वहाँ जाकर उन चित्रों की नकल किया करते थे। इस जगह को रामकिंकर बैज ने अपना प्रथम विद्यालय कहा है।” रामकिंकर का प्रकृति के प्रति गहरा लगाव था।





वह अपने घर के आस पास लगे पेड़ पौधों हरियाली को बहुत पसंद किया करते थे। अपनी प्रारम्भिक चित्रण कला में खनिज रंगों का प्रयोग किया है व तूलिका भी आप स्वयं बनाते थे। इस तरह बचपन से ही रामकिंकर कला की दुनिया में सम्मिलित हुए, रामकिंकर मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् सन् 1925 ई० में शांतिनिकेतन के कला भवन में कला शिक्षा प्राप्त करने के लिए चले गये। शांतिनिकेतन में रविन्द्रनाथ टैगोर, नन्दलाल बॉस जैसे महान कलाकारों

के सानिध्य में रहकर कला शिक्षा ग्रहण की। साथ ही साथ रामकिंकर बैज ने मूर्तिकला की शिक्षा उन प्रगतिशील यूरोपीय मूर्तिकारों से प्राप्त की जो कला भवन में कुछ समय के लिए मूर्तिकला की शिक्षा देने आये थे। रामकिंकर बैज मूर्तिकला की शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् गंभीरता के साथ इसी ओर प्रवृत्त हो गये, और अपनी कुशल प्रतिभा का परिचय दिया। शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात् आप शांतिनिकेतन के कला संकाय के सदस्य बन गये तथा वहाँ मूर्तिकला की शिक्षा प्रदान करने लगे।

रामकिंकर बैज को सन् 1970 ई० में भारत सरकार ने पद्म भूषण से सम्मानित किया, सन् 1976 ई० में ललित कला अकादमी का फेलो बनाया गया, इसके अतिरिक्त सन् 1976 ई० में ही विश्वभारती द्वारा देशिकोत्तमा से सम्मानित किया गया, सन् 1979 ई० में एक मानद डी. लिट से रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालय द्वारा सम्मानित किया गया। रामकिंकर बैज को मूर्तिकला के क्षेत्र में पुनरुत्थान का श्रेय दिया जाता है।



रामकिंकर बैज के चित्रों एवं मूर्तिशिल्प का परिचय

चित्रण कला : रामकिंकर बैज स्वभाव से उत्साही और आवेशपूर्ण थे। रामकिंकर परम्परा से हटकर चलने वाले ऐसे कलाकार थे जिन्हें शांतिनिकेतन में चल रही किसी भी कला परम्परा ने कभी भी प्रतिबद्ध नहीं कर पाया। उनके इस स्वभाव और व्यक्तित्व से उनकी कला व्यापक रूप से प्रभावित रही है। भारत



के प्रसिद्ध कला केन्द्र शांतिनिकेतन से प्रशिक्षित चित्रकार होने के कारण वह मूलतः आकृति – मूलक चित्रों के चितरे रहे हैं और उन्होंने इसी रूप में अपनी कला यात्रा प्रारम्भ की थी। सन् 1935 ई० में उनकी कला में एक असामान्य परिवर्तन आया, जिससे इनके सृजन कला में एक नये दौर का आरम्भ हुआ।

रामकिंकर बैज यथार्थवादी रूपों से आगे बढ़कर अतियथार्थवादी आकृतियों की और इससे आगे अंततः अमूर्त रूपकारों को अपनी चित्रण कला व मूर्तिशिल्प में शामिल करने लगे।

रामकिंकर बैज ने कला सृजन के लिए उन पदार्थों, माध्यमों, तकनीकों तथा प्रक्रियाओं को अपनाया जो उनके स्वभाव के अधिक अनुरूप थे।

रामकिंकर बैज को प्रायः मूर्तिकार के रूप में जाना जाता है, परन्तु वह एक कुशल चित्रकार भी थे। वह मूर्तिशिल्प की रचना करने के साथ ही चित्रों की रचना भी करते थे।

इनके कुछ चित्र निम्नलिखित हैं : 'शीतकालीन मैदान', 'मेघों से घिरी संध्या', 'संरचना', 'माँ और बेटी', 'कृष्ण जन्म सन् 1947 ई०', यह तैल रंग चित्र धनवाद से प्रभावित है, 'कुत्ता और बालिका', 'पिकनिक डे सन् 1938 ई०', 'अकाल' यह सन् 1937 ई० टैम्परा माध्यम है, 'महिला और चित्रकार' यह जलरंग माध्यम में है। सन् 1945 ई० में, 'गपशप' यह भी जलरंग माध्यम में है, 'शिलोग' जल रंग माध्यम सन् 1947 ई० 'मातृत्व' तैलरंग माध्यम में। रामकिंकर बैज के चित्रों की प्रदर्शनी देश-विदेश में कई बार प्रदर्शित हुई है। सन् 1947 में इनके चित्रों की

एकल प्रदर्शनी दिल्ली में हुई, इसके अतिरिक्त ललित कला अकादमी की एक वार्षिक कला प्रदर्शनी में इनके चित्र प्रदर्शित किये गये। सन् 1950 व 1951 ई0 में पेरिस की रिपब्लिकीन नौवलेस के टोक्यो की एशियनों कला प्रदर्शनी में चित्र प्रदर्शित हुए।

मूर्तिकला : रामकिंकर बैज के मूर्तिशिल्पों की कहीं कोई प्रदर्शनी नहीं हुई। इनके मूर्तिशिल्प अधिकतर शांतिनिकेतन में ही संरक्षित हैं। इसका मुख्य कारण मूर्तिशिल्पों का विशाल आकार—प्रकार व भारी—भरकम होना है। दूसरा कारण यह है, कि इन्होंने मूर्तिशिल्पों की रचना किसी प्रकार के पारिश्रमिक व पुरस्कार के उद्देश्य या उन्हें बेचने के उद्देश्य से नहीं की थी। रामकिंकर के कुछ प्रमुख मूर्तिशिल्प जो विभिन्न संग्रहालयों में सुरक्षित है। 'मिस मथुरा सिंह' राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय में संरक्षित है। बैज द्वारा बनायी गयी 'टैगोर की आवाक्ष मूर्ति' भारत सरकार द्वारा हंगरी सरकार को भेंट की गयी थी। 'यक्ष—यक्षी' की दो विशाल प्रतिमाएं नई दिल्ली में स्थित रिजर्व बैंक की बिल्डिंग के द्वार पर हैं, इसके अतिरिक्त आपके द्वारा बनाये गये अनेक मूर्तिशिल्प शांतिनिकेतन के कला भवन में संरक्षित है जो आज वहाँ की शोभा को बढ़ाते हैं और आने वाले नये कलाकारों के लिए प्रेरणा का स्रोत बने हुये हैं।

बैज द्वारा बने हुये अनेक अनगिनत मूर्तिशिल्प हैं परन्तु यहाँ कुछ प्रमुख मूर्तिशिल्पों का उल्लेख किया गया है। 'कुत्ता', 'लड़की व कुत्ता', 'मिल कॉल— सन् 1954 ई0', 'सुजाता— सन् 1935 ई0', 'संथाल परिवार सन् 1938 ई0', 'लैम्परोड सन् 1941 ई0', 'धान निकासी सन् 1943 ई0', इनके अतिरिक्त 'दाण्डी मार्च' कांस्य प्रतिमा, व 'रवीन्द्रनाथ ठाकुर', 'सुभाषचन्द्र बोस', 'अवनीन्द्रनाथ ठाकुर', 'गांगुली महाशय', 'मधुरा सिंह', 'प्रीतिपाडे', 'विनोदिनी' आदि की प्रतिकृतियों (शबीह) का निर्माण किया है।

1. "मिल कॉल" यह एक बहुत ही आकर्षक मूर्तिशिल्प है। यह मूर्तिशिल्प दर्शक को न केवल अपनी ओर आकर्षित करती है अपितु उस अनुभव में भी खींचती है जो इसका प्रतिनिधित्व करती है। इसकी ऊँचाई 292 सेंटीमीटर है और इसका निर्माण सन् 1955—56 ई0 में 'रामकिंकर बैज' के द्वारा किया। यह मूर्तिशिल्प शांतिनिकेतन के कला परिसर में स्थित है। यह मूर्तिशिल्प संथाल जाति के लोगों के प्रति प्यारा और उन महिलाओं की जीवंतता और उल्लास को दर्शाता है। इस मूर्तिशिल्प को सीमेन्ट कंकरीट लोहा आदि सामग्री के मिश्रण द्वारा एक ही तकनीक में बनाया गया है।

2. रवीन्द्रनाथ टैगोर की प्रतिमा रामकिंकर बैज समय-समय पर अपने चित्रों की प्रदर्शनी भी करते रहते थे। वह चित्रों के विषय का चुनाव हमेशा स्वयं ही किया करते थे। रामकिंकर बैज की हमेशा से ही रवीन्द्रनाथ का एक चित्र बनाने की महत्वकांक्षा रही है परन्तु कभी रवीन्द्रनाथ टैगोर से कहने का साहस नहीं जुटा पाये। उन्होंने अर्थ-अमूर्त रूप में अपनी कल्पना से रवीन्द्रनाथ के चेहरे को पहले ही पूरा कर लिया था। एक बार रवीन्द्रनाथ अपने जीवन के अन्तिम दिनों के समय में शांतिनिकेतन के भ्रमण पर निकले तब उन्होंने रामकिंकर को बुलाया और पूछा 'तुम बहुत सारे चित्र बना रहे हो मेरा चित्र कब बनाओगे' तब रामकिंकर ने रवीन्द्रनाथ के कार्य कक्ष के एक कोने में अपनी चित्रण सामग्री लेकर बिना किसी औपचारिक बैठक के रवीन्द्रनाथ के चित्र को पूर्ण किया। रामकिंकर बैज ने रवीन्द्रनाथ की एक अवाक्ष मूर्ति का भी निर्माण किया है जिसमें रवीन्द्रनाथ आगे की ओर झुके हुये हैं यह मूर्तिशिल्प उन्होंने अपनी कल्पना से बनाया। यह मूर्तिशिल्प उन्होंने किसी अनुपात सिद्धान्त को लागू किये बिना ही बनाया था।

रामकिंकर किसी भी मूर्तिशिल्प को केवल एक अच्छी शारीरिक समानता में नहीं देखते थे अपितु आत्मनिरीक्षण व अपने जीवन के सबसे परिपक्व चरण में देखते थे जिससे वह मूर्तिशिल्प सदा के लिए कलाकार की याद दिलाता रहे।

3. रामकिंकर बैज का एक अन्य चित्र **“पिकनिक”** है। उनका यह चित्र आधुनिक युग में घनवाद कला की शुरुआत के रूप में माना जाता है। यह कैनवास पर चित्रित एक तैल चित्र है। इस चित्र में दो वृक्षों के बीच में तीन युवतियाँ कमश; खड़ी, बैठी और लेटी हुई हैं। इनमें से एक युवती वायलीन लिये हुये हैं ऐसा प्रतीत हो रहा है। वह संगीत में मस्त है। और सूरज की किरणें एक सुनहरा जादू बिखरे रही हैं। आकृतियों के शरीर सुडौल हैं। यह चित्र रामकिंकर की चित्रण कला की स्वयं व्याख्या करता है।
4. **“संथाल परिवार”** रामकिंकर बैज ने यह मूर्तिशिल्प सन् 1938 में सीमेन्ट व कंक्रीट का प्रयोग करके बनाई है। इसकी ऊँचाई 425 सेमी0 है। इस मूर्तिशिल्प में 2 महिलायें जिसमें से एक महिला अपने सिर पर भारी बोझा लिये हैं तथा एक महिला एक लडकी को डोली में बैठाए हुये हैं साथ में एक कुत्ता है।

5. रामकिंकर बैज के द्वारा निर्मित प्लास्टर ऑफ पेरिस की मूर्तियों में सबसे प्रसिद्ध “**पार्श्व**” मूर्तिशिल्प है इसके अतिरिक्त इनके द्वारा तैयार एक और प्रसिद्ध मूर्ति “**दोपहर की विश्रान्ति में श्रमिक है**” जो मेहनत करके मजदूरों व किसानों के जीवन को दर्शाती है।
6. रामकिंकर बैज ने बंगाल में सन् 1942 में हुए युद्धों को भारी गहनता से महसूस किया इस युद्ध के कारण जो अकाल बंगाल में पड़ा और उस अकाल में मानवता डगमगा गयी। उस घटना को देखा है। इसी के रूप में उन्होंने विरोधी चित्रों की एक श्रृंखला बनाई। इसके साथ “**हार्वेस्टर**” नामक उनकी मूर्ति 1943 के कुख्यात बंगाल अकाल की प्रतिक्रिया व्यस्त करती है।

मूर्तियों के छोटे नमूने : रामकिंकर बैज बड़ी-बड़ी रचनाओं से पूर्व बहुत सारे छोटे-छोटे मूर्तियों के नमूनों तैयार किया करते थे। जैसे एक कलाकार चित्र रचना करने से पूर्व उसका रेखा चित्र बनाकर तैयार करता है। सम्भवतः उसी तरह रामकिंकर ने भी बड़े-बड़े मूर्तिशिल्प बनाने से पूर्व छोटे-छोटे मॉडल तैयार किये।

उदाहरणतः गणेश — 17 सेमी0 ऊँचा ,एक महिला आकृति 24 सेमी0 ऊँची मछली — 11 सेमी0 और कुत्ता 113 सेमी0 ऊँचा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. मुखोपाध्याय, अमित. (2007). रामकिंकर बैज बर्थ सेन्चुरी. भुवनेश्वर (खरवेला नगर). ललित कला अकादेमी रिजनल सेन्टर 3/4 खरखेल नगर भुवनेश्वर. पृ. 9-10
2. प्रसाद, देवी. (2007). रामकिंकर बैज स्कल्पचर. नई दिल्ली. तुलिका बुक 35।/1 सहारनपुर जार नई दिल्ली 110049. पृ. 13-25
3. विश्वास, अनामिका. (2006).रामकिंकर बैज हिज लाइफ, टाइम एवं आर्ट गुरुग्राम. पृ. 59-62
4. समकालीन कला, (2006). 28 वॉ अंक, नई दिल्ली. ललित कला अकादेमी रवीन्द्र भवन नई दिल्ली-110001 पृ. 6-8
5. कला दीर्घ. (2006). बंगाल शैली की चित्रकला. नई दिल्ली. पृ. 66-68

कलाकारों का स्क्रेप आर्ट : एक विश्लेषण

— रीमा सिंह

सहायक आचार्य, ललित कला विभाग,
डॉ० राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या

प्रस्तावना

स्क्रेप आर्ट का अर्थ होता है— कलाकार द्वारा अनुपयोगी वस्तुओं से कलाकृतियों का निर्माण करना। कला के क्षेत्र में वर्तमान समय में स्क्रेप आर्ट प्रचलित शब्द हो चुका है परन्तु इसकी शुरुआत 1950 के दशक के United State में जन्में संयोजन कला आंदोलन से सम्बंध रखती है। सन् 1950 के दशक में कलाकार Dubuttet ने Scrape Art शब्द का प्रयोग किया। यही वह समय था जब कलाकार ने रोजमर्रा की वस्तुओं को अपने कला में प्रयोग करना शुरू किया। कला क्षेत्र में किया गया यह नवीन प्रयोग समकालीन कलाओं को एक नई दिशा प्रदान करता है, इन नवीन प्रयोगों ने Ready & Made Art, Junk Art, Installation Art, Assemblage Art जैसे नए कला प्रवृत्तियों को जन्म दिया। कला की इस नई विधा को पारम्परिक चित्रकला और मूर्तिकला से जोड़ कर देखना संभव नहीं है, क्योंकि कला की ये पारम्परिक विधाएं कुछ खास तकनीकों पर ही आधारित है जैसे कि अगर चित्र बनाना है तो कागज, कलम, रंग, तूलिका, मिट्टी, लकड़ी और उससे संबंधित उपकरणों की आवश्यकता होती है जबकि “SCRAPART” Assemblage and Labrication की तकनीकों पर आधारित होती है, जिससे हम त्रिआयामी “Ready & Made” (पहले से बनी-बनाई वस्तु) और “Found Objects” को जोड़कर एक नयी आकृति तैयार करते हैं। कला की यह नई विधा पुराने सभी पारंपरिक माध्यमों को चुनौती देते हुए नए संभावनाओं को जन्म देने के साथ ही पर्यावरण को बनाने के लिए पुनः उपयोग और पुनःप्रयोज्य की संस्कृति को प्रभावित करते हैं।



अध्ययन का उद्देश्य :

- (1) स्क्रेप आर्ट के उपयोग के बारे में जागरूकता फैलाना।
- (2) **reduce, reuse, recycle** की अवधारणा का कला के द्वारा प्रदर्शन।
- (3) स्क्रेप आर्ट आज के समय में पर्यावरण के लिए किस प्रकार लाभदायक है इसे जनमानस तक पहुंचाना।
- (4) अपशिष्ट सामग्री का कला के माध्यम से उचित निराकरण हेतु रणनीति प्रस्तुत करना।

अध्ययन क्षेत्र : प्रस्तुत लेख हेतु अयोध्या क्षेत्र को चुना गया है, शेष अध्ययन हेतु, देश, प्रदेश तथा वैश्विक स्तर के अध्ययनों का समावेश भी किया है।

शोधविधि : यह अध्ययन विशेषतः द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित है। प्रमुख तथ्यों का संकलन विभिन्न प्रकाशित पुस्तकों, समाचार पत्र, पत्रिकाओं, लेखों, सरकारी प्रतिवेदन एवं इंटरनेट पर उपलब्ध सामग्री का उपयोग किया गया है।

आँकड़ा स्रोत एवं प्रविधि : विश्व की लगातार बढ़ती जनसंख्या

जिस प्रकार अपने आस पास विभिन्न तरह के उत्पादों से घिरी है, ये उत्पाद रोजमर्रा की जिन्दगी को आसान तो बनाते हैं लेकिन क्या कभी किसी ने यह सोचा कि इनके उपयोग के बाद जब ये अनुपयोगी हो जायेंगे तो इसका निस्तारण कैसे होगा? इन उत्पादों में से कुछ बेंच दिया जाता है कबाड़ी वाले को, कुछ रीसायकल हो जाते हैं लेकिन कुछ मैटेरियल्स को रीसायकल करना मुश्किल होता है या कहा जा सकता है कि उत्पादन के तादात के अनुपात में रीसायकल करना अत्यन्त मुश्किल होता है। विश्व में कई देश कूड़े का ढेर बन चुके हैं

जो कि एक बड़ी समस्या के रूप में लोगों के सामने आ रही है। रीसायकल की इन्ही समस्याओं से निपटने के लिए स्क्रेप आर्ट एक बेहतरीन विकल्प है जोकि की अपशिष्ट पदार्थ निस्तारण के साथ ही हमारे आस-पास की जगह को सुन्दर एवं आकर्षक बनाता है।

समकालीन कला के क्षेत्र में कुछ कलाकार स्क्रेप मैटेरियल्स को



उपयोग में लाकर कलाकृतियों की रचना का माध्यम बना रहे तथा अपने भावों की अभिव्यक्ति इन कृतियों द्वारा कर रहे हैं।

ये कलाकृतियां स्कैप मैटेरियल्स के बेहतरीन उपयोगिता का सूचक हैं तथा पर्यावरण को सुन्दर बनाने का काम भी कर रही हैं। स्कैप से बनी कलाकृतियां लोगों को सोचने पर मजबूर कर रही हैं कि जिसे वे अनुपयोगी समझ कर निष्कासित कर देते थे। वही वस्तु उनके आस पास के वातावरण बाग-बगी, चों, घरों, चौराहों आदि को सुंदर बनाने का काम कर रही हैं। इस प्रयास से लोग न सिर्फ सुन्दरता का आनन्द उठाते हैं बल्कि अनचाही और बेकार वस्तुओं का महत्व भी समझने लगे हैं तथा इससे सीख लेकर खुद भी उसका संरक्षण करने के साथ उसके उपयोग के बारे में सोचते हैं।



जिस तरह पर्यावरणीय चुनौतियों पर व्यापक बहस होती जा रही है उसी तरह भारतीय कलाकारों की संख्या बढ़ रही है जो धातु के स्कैप की ओर रुख कर रहे हैं। ये कलाकार अपनी कलाकृतियों द्वारा पर्यावरण को बचाने के लिए निरन्तर प्रयासरत हैं। विश्व बैंक की एक रिपोर्ट में 2016 में ठोस अपशिष्ट प्रबंधन से 1.6 बिलियन टन कार्बनडाईऑक्साइड समतुल्य (CO_2 -समतुल्य) ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन का अनुमान लगाया गया है। इस क्षेत्र में सुधार के बिना ठोस अपशिष्ट से संबंधित उत्सर्जन 2.6 बिलियन टन CO_2 -(2050) तक बढ़ने का अनुमान है।

अपशिष्ट प्रबंधन का स्वर्ण नियम '3R'

- 1- कम करें- कम उपयोग करें।
- 2- पुनः उपयोग-पुनः उपयोगकरें।
- 3- रीसायकल- फिर से करें।

वाक्यांश : कम करना, पुनः उपयोग करना, रीसायकल करना, सामग्री के बेहतर उपयोग के लिए गतिविधियों के अनुशंसित अनुक्रम को कम नुकसान पहुंचा सकें। हमारे पर्यावरण के लिए प्राथमिक लाभों

के अलावा, ये 3R अन्य लाभ भी प्रदान करते हैं जैसे— वित्तीय बचत।

कचरे को कम करने के 3 नियम हैं :

1— **Reduce**— इसका मतलब है उन संसाधनों का बचत जो भविष्य के लिए अधिक उपयोगी हैं।

उदाहरण— बिजली बचाने के लिए उपयोग न होने पर लाइट स्विच ऑफ करना इत्यादि।

2— **Reuse** - यह रणनीति उत्पाद की सामग्री को बार-बार उपयोग करने के लिए होता है।

उदाहरण— भंडारण कंटेनर के रूप में कार्य करने के लिए पुरानी बोतलों या जार का पुनः उपयोग।

3— **Recycle**— दैनिक उत्पाद की चीजों को बनाने के लिए नई सामग्री का उपयोग न करके पुरानी

ही वस्तुओं को एकत्र कर उनका प्रयोग करना।

उदाहरण : बेकार प्लास्टिक की बोतल से फूलदान बनाना इत्यादि।

3'R का महत्व : बढ़ती आबादी के साथ, यह हमारे प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण हो गया है जो दीर्घकालिक में अनवीकरणीय हैं, और इसलिए आज उन्हें किफायती तरीके से उपयोग करने की तत्काल आवश्यकता है।

संसाधनों के किफायती उपयोग से यह भी सुनिश्चित होता है कि वैश्विक कार्बन फुटप्रिंट कम हो गया है और इसलिए ग्लोबल वार्मिंग को रोका जा सकता है।

शोध निराकरण :

- भारत की राजधानी नई दिल्ली में, सराय काले खान पड़ोस में स्थानीय कारीगरों ने कचरे और स्क्रेप धातु के ढेर एकत्र किए हैं जिससे दुनिया के सात अजूबों की प्रतिकृतियां बनाई



है। जिसमें ताजमहल का मॉडल, एफिल टॉवर के साथ, स्टैच्यू ऑफ लिबर्टी, पीसा की झुकी मीनार, ब्राजील में क्राइस द रिडीमर की प्रतिमा, गीजा के महान पिरामिड और रोम के प्रसिद्ध कोलोसियम का भी निर्माण किया है। जिसे लगभग 100–150 टन ठोस अपशिष्ट धातुओं से बनाया है जो अनुपयोगी हो चुके थे।

- भोपाल मंडल, मे अशोकनगर रेलवे स्टेशन पर कलाकारों ने ट्रेन के डिब्बों के स्क्रेप को मोर की आकृति में बना कर तथा सुंदर रंगों से सजा कर पूरे रेलवे स्टेशन के परिसर में इन मोरों को स्थापित किया है।
- पूर्व मध्य रेल के समस्तीपुर मंडल में सहरसा रेलवे स्टेशन पर पर्यावरण को ध्यान में रखते हुए एक ऑक्सिजन पार्क बनाया गया है इस पार्क में स्क्रेप के जरिए कई कलाकृतिया बनाई गई है। जिसमें मेक इन इण्डिया के स्वहव के तौर पर पहचाना जाने वाला शेर की आकृति को बनाया है जिसे कलाकार ने सुनहरे रंग से पेंट किया है।
- रेल व्हील फैक्ट्री ने ट्रेनों के खराब हो चुके पहियों और उसमें लगे एक्सेल तथा अन्य पुर्जों के इस्तेमाल से खूबसूरत कलाकृतियों का निर्माण किया है। इन कलाकृतियों को बंगलुरु स्थित रेल व्हील फैक्ट्री के परिसर में सजाया गया

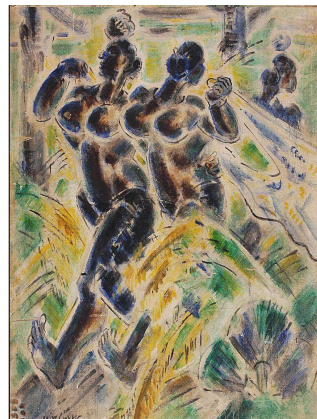


है। खराब हो चुके ट्रेन के पहियों को जोड़कर और उन्हें खूबसूरत रंगों से पेंट करके उन पर पानी की बचत करने, ऊर्जा की बचत करने सहित कई अन्य संदेश लिखे गए हैं।

- अयोध्या में स्थित डॉ० राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय में प्रत्येक वर्ष लगभग 10 टन के करीब ठोस अपशिष्ट स्क्रेप सामग्री निकलती है, विश्वविद्यालय परिसर में स्थिति ललित कला (फाईन आर्ट्स) विभाग विगत 5 वर्षों से इन अपशिष्ट पदार्थों का उपयोग स्क्रेप कलाकृतियों को बनाने में कर रहा है। विभागीय शिक्षकों के सहयोग से छात्र-छात्राएं स्क्रेप सामग्री का प्रयोग कर प्रतिदिन नई-नई कलाकृतियों का निर्माण कर रहे हैं। जिसमें प्रमुख रूप से नवग्रह वाटिका का निर्माण, किया गया है जिसमें अपशिष्ट धातु के प्रयोग से एक विशाल वटवृक्ष की संरचना की गई है और नौ ग्रहों को उनके निश्चित आकार, मान, एवं दरों के अनुसार वेल्डिंग के द्वारा वटवृक्ष पर सजाया गया है। इसके अलावा अन्य कलाकृतियों में स्क्रेप सामग्री से— Seacow, Peacock Series, The family of mosquitoes, Maternity, Cockroach, The sheephead Balloonist, Play dog, Buffalo, The tease, The swiper, Hippopotamus, Dr- Lohia portrait इत्यादि अनेकों सुन्दर कलाकृतियों की रचना की गई है।

निष्कर्ष : स्क्रेप आर्ट के द्वारा हम अपना पर्यावरण “इको फ्रेंडली” बनाने के साथ-साथ बहुत ही सुन्दर बना सकते हैं तथा आने वाली पीढ़ियों को अपशिष्ट कचरे से निजात दिला सकते हैं।

स्क्रेपआर्ट के द्वारा अपशिष्ट निवारण के साथ ही कलाकार अपने कला को एक



नवीन स्वरूप प्रदान करने तथा अपनी कला को एक नए आयाम तक पहुंचा सकते हैं। आने वाले वर्षों में अगर भारत के साथ-साथ विश्व के अन्य कलाकार स्क़्रैप आर्ट पर काम करें तो सुनिश्चित ही बड़े पैमाने पर अपशिष्ट निवारण में अपना महत्वपूर्ण योगदान प्रदान कर सकते हैं तथा पर्यावरण को शुद्ध करने के साथ कलाकार अपनी सृजनात्मकता में भी वृद्धि कर सकेंगे।

तकनीकी शब्द सूची –

1. Scrap—अनुपयोगी वस्तु
2. Assemblege Art—संयोजन कला
3. Ready made Art—पहले से तैयार कलाकृति
4. Junk Art—जंक कला
5. Installation Art—स्थापना कला
6. Lubrication—लुब्रिकेशन सिद्धांत
7. Seacow—दरियाई घोड़ा
8. Peacock series—मोर श्रंखला
9. The family of mosquito—मच्छरों का परिवार
10. Maternity—मातृत्वा
11. Cockroach—तिलचट्टा
12. The sheephead—भेड़ का बच्चा
13. Balloonist—गुब्बारे वाला
14. Paly dog—खेलता हुआ कुत्ता
15. Baffalo—भैंस
16. The tease—चिढ़ाना
17. The Swiper— झाड़ू वाला
18. Hippopotamus—जलहस्ती
19. Dr- Lohia portrait—डॉ० लोहिया जी का व्यक्तिचित्र

संदर्भ सूची :

- scrapshilpee-com
- knocksense-com
- wikipedia
- dict-hinkhoj-com
- arc&sf-com

दतिया की छतरियों में बुंदेली कला का अध्ययन

— बृजेश पाल (शोधार्थी)

ललित कला संस्थान, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी उ.प्र.

सम्पर्क, 9598390017, ईमेल— palbrajesh72@gmail-com

डॉ० श्वेता पाण्डेय (सहा. प्रवक्ता)

ललित कला संस्थान, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी उ.प्र.

Email : shwetapandeygkp@gmail-com

सार

कला का विकास मानव सभ्यता के साथ-साथ अनवरत चलता रहा है। प्राचीन काल से ही मनुष्य अपनी हृदय की भावनाओं को रंगों व रेखाओं के माध्यम से चित्रों के रूप में उन्हें साकार करता रहा है। इस प्रकार मानव जाति के इतिहास की पृष्ठभूमि में कलाओं का अपना विषिष्ट स्थान रहा है।

चित्र मानवीय भावनाओं की सहज सशक्त अभिव्यक्ति का सुन्दर आधार है। यही कारण है कि मानव इतिहास के साथ ही चित्रकला का विकास अविच्छिन्न रूप से समृद्ध रहा है। चित्रकार रेखा और रंग के सहारे किसी आधारभूत सतह पर अन्तर्जगत और बाह्य जगत के उद्भूत भावों को साकार करता है। शिल्प शास्त्रों में चित्रकला को अन्य कलाओं में श्रेष्ठ माना गया है। भारत में भित्तिचित्रकला का प्रारम्भ जोगीमारा की गुफाओं से माना जाता है। इसके उपरान्त अजन्ता, बाघ, बादामी, सित्तनवासल आदि स्थानों पर भित्तिचित्रण किया गया। बुन्देलखण्ड में जहां मूर्तिकला, स्थापत्यकला एवं चित्रकला जैसी अनेक कला विधाओं का बहुमुखी विकास हुआ है। वहीं



बुन्देलखण्ड में भित्ति चित्रकला का विकास कई स्थानों पर हुआ है जिनमें ओरछा व दतिया मुख्य रूप से भित्ति चित्रकला के संरक्षक माने जाते हैं।

बीज शब्द : बुन्देलखण्ड, छतरियाँ, दतिया, भित्तिचित्र, बुन्देला, राधा-कृष्ण, गोपियाँ, राम दरवार, शिव, चित्र शैली

इतिहास : बुन्देलखण्ड में दतिया का ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान रहा है। पुराणों में दतिया का सम्बन्ध महाभारत के कुख्यात दैत्य दन्तवर्क से जोड़ा जाता है। माना जाता है कि इसी दैत्य के नाम पर इस नगर का नाम दतिया पड़ा। खंगार राजा को हरा कर बुन्देला शासक सोहनपाल ने गढ़कुण्डार को अपनी राजधानी बनाया और सोहनपाल के वंशज राजा रुद्रप्रताप ने सन् 1631 ई. में गढ़कुण्डार से अपनी राजधानी ओरछा में स्थानान्तरित कर दी। दतिया, ओरछा और अन्य रियासतों पर रुद्रप्रताप का अधिकार था। रुद्रप्रताप के पश्चात मधुकर शाह राजा हुए जिन्होंने अपनी कुशलता और साहस से ओरछा को समृद्धशाली बनाया। मधुकर शाह के पश्चात ओरछा के राजा रामशाह हुए और उनके बाद वीर सिंह जू देव ओरछा के महाराजा हुए।

दतिया का सांस्कृतिक इतिहास ओरछा के राजा वीर सिंह जू देव के पुत्र भगवान राव के साथ शुरू होता है। सन् 1628 ई. में भगवान राव ने दतिया की स्थापना की। सन् 1640 ई. में भगवान राव की मृत्यु हो गई। भगवान राव की मृत्यु के पश्चात शुभकरन राजा बने। शुभकरन मुगलों से युद्ध करते हुए सन् 1679 ई में मारे गए। शुभकरन की मृत्यु के पश्चात उसका बड़ा पुत्र दलपत राव दतिया का शासक बना। दलपत राव ने मुगलों का भरपूर सहयोग किया और मुगलों की ओर से युद्ध भी लड़े। दलपत राव के बाद रामचन्द्र दतिया की गद्दी पर बैठा। रामचन्द्र ने अनेक युद्ध लड़े और लड़ाई में घायल होने से उसकी मृत्यु हो गई। रामचन्द्र की मृत्यु के पश्चात रामसिंह गद्दी पर बैठे और रामसिंह के पश्चात उसका पौत्र इन्द्रजीत सिंहासन पर बैठा।

इन्द्रजीत ने अनेक युद्ध लड़े। सन् 1762 ई में उसकी मृत्यु के बाद

उसका पुत शत्रुजीत दतिया का राजा बना। शत्रुजीत के पश्चात सन् 1801 ई. उसका पुत्र राजा पारीछत दतिया का उत्तराधिकारी हुआ। राजा पारीछत के पश्चात भी दतिया में कई राजा बने। जिनमें भवानी सिंह और राजा गोविन्द सिंह आदि के नाम महत्वपूर्ण हैं। देश के स्वतन्त्र होने के पश्चात दतिया भारत का अंग बन गया तथा 1 नवम्बर 1956 को राज्यों के पुनर्गठन के परिणामस्वरूप दतिया को वर्तमान मध्य प्रदेश राज्य में मिला दिया गया।

दतिया के छतरियों के चित्रण : दतिया की कला में क्षेत्रीय कला की झांकी दिखाई पड़ती है, जिसका उदय और विकास समय-समय पर होता रहा है।

में राजस्थानी, ढढूंर, हड़ौती बुन्देलखण्ड क्षेत्रों में विषय पर प्रस्तुत सन् 1601 रसिक प्रिया आधार पर व्यापक पैमाने



बुन्देली चित्रकला मारवाड़, मेवाड़, कला को के अलग-अलग वस्तु के आधार किया गया है। ई0 मे कविप्रिया, की रचनाओं के चित्रकारों ने पर उनपर आधारित

चित्र बनाये। कछवाहा के राजा, राजा इन्द्रजीत के दरबारी कवि आचार्य केशव के साहित्य को चित्रकला का एक ऐसा वरदान मिला जिससे उनकी एक-एक पंक्ति चित्रों पर उभरने लगी।

कवि केशव के काव्य पर आधारित बुन्देली रागमाला चित्रकला के अंतर्गत दो शैलियों ने जन्म लिया। जिनमें एक तो स्त्रियों के 'सोलह शृंगार का अलंकरण' और दूसरा 'बारहमासी ऋतुओं के गीतों' का विषय प्रमुख है। सोलहवीं शताब्दी में चित्रकला का रूप बदल गया। तत्कालीन चित्रों में जीवन का उत्साह व स्फूर्ति रंगों के बोध के साथ सौन्दर्यानुभूति को एक नये मोड़ पर ला दिया। जिस प्रकार महाकवि सूर और तुलसी ने साहित्य में जो प्रभाव

पैदा किया वही चित्रकारों ने राम और कृष्ण की बाल-लीलाओं और क्रीड़ाओं को चित्र स्वरूप अंकित किया। मुगल कला में लौकिक विषय ही चित्रित हुये हैं, यही कारण है कि बुन्देली कला मध्यकालीन संस्कृति के विकास में एक कड़ी के रूप में कार्य करती है। यहाँ पर 'तैल-चित्रण पद्धति' के प्रादुर्भाव के पूर्व 'टेम्परा पद्धति' अन्य भित्ति-चित्रण के साथ एक लोकप्रिय पद्धति थी।

दतिया की चित्रकला इसका साक्षात् प्रमाण है। यहाँ के चित्रकार ने बाहरी प्रेरणाओं को विदेशी कहकर छोड़ा नहीं वरन् उदार हृदय से अपनी शैली में प्रदर्शित किया। बुन्देली चित्रकला को विभिन्न राजाओं ने राजकीय संरक्षण और अपना महत्वपूर्ण योगदान प्रदान कर समृद्धशाली बनाया। मध्यकाल में बुन्देली कलम का एक स्वतन्त्र और नया रूप विकसित हुआ। बुन्देलखण्ड के शासक योद्धा, पराक्रमी, शूरवीर होने के साथ-साथ कलानुरागी और कला-संपोषक थे। जिनके संरक्षण में विकसित बुन्देली कलम और इण्डो-इस्लामिक स्थापत्य शैली ने भारतीय कला में एक नये आयाम का सूत्रपात किया। इन बुन्देली शासकों के संरक्षण में पुष्पित-पल्लवित कला के मुख्य केन्द्र के रूप में हम ओरछा और दतिया का विशेष उल्लेख कर सकते हैं।

दतिया चित्रकला में धार्मिक प्रभाव : दतिया के चित्रों का अध्ययन करने पर ऐसा प्रतीत होता है कि यहाँ पर निर्मित चित्र पड़ोसी राज्य ओरछा से प्रभावित थे। दतिया चित्रकला शैली में रामायण, महाभारत, भागवत पुराणों से संबन्धित धार्मिक चित्रों के अतिरिक्त स्थानीय राजाओं के जीवन से संबन्धित घटनाओं के चित्रण भी देखे जा सकते हैं।

मध्य भारत में बुंदेली चित्रकला की अपनी विशिष्टताएँ हैं, जो उन्हें अन्य क्षेत्र की चित्रकला से अलग बनाती हैं। बुंदेली चित्रकला के सबसे उत्तम प्रमाण ओरछा और दतिया में देखे जा सकते हैं। बुन्देलखण्ड में धार्मिक आस्थाओं और मान्यताओं का इतिहास अत्यन्त प्राचीन है। इस क्षेत्र में समय-समय पर विभिन्न धर्मों और सम्प्रदायों का विकास और संरक्षण हुआ। जिसके अंतर्गत यहाँ पर धार्मिक सम्प्रदायों के रूप में शैवमत, शक्ति उपासना, मातृपूजा, शक्तिवाद, जैन धर्म, बौद्धधर्म, भागवतधर्म, रामानुज सम्प्रदाय इत्यादि

प्रमुख थे।

बुन्देली शासकों की वंशावली के अनुसार यहाँ पर बुंदेलों का शासन प्रथम शासक रुद्रप्रताप (1501 ई०-1531 ई०) से शुरू होता है। इसके बाद इनके उत्तराधिकारी भारती चन्द्र (1531 ई० से 1554 ई०) हुये, इनके पश्चात् बुन्देली शासन की बागडोर राजा मधुकरशाह बुन्देला (1554 ई० से 1592 ई०) के हाथों आयी। बुन्देला शासकों में मधुकरशाह पहले राजा थे, जो कि वैष्णव धर्म के समर्थक थे। इनके ही समय में बुन्देली भित्ति चित्रों का विकास शुरू हुआ था। इसीलिए इनके समय में यहाँ के भित्ति चित्रों में 'वैष्णव धर्म' से संबन्धित चित्रों का अधिक चित्रण किया गया।

दतिया चित्रकला की पटल तैयार करने की विधि : चित्रकला के लिए पटल तैयार करना सबसे महत्वपूर्ण कार्य होता है। दतिया चित्रकला में चित्रों को निर्मित करने से पहले पटल को प्लास्टर के रूप में तैयार किया गया है। क्योंकि किसी भी चित्र की गुणवत्ता और उसकी सुंदरता में चित्र पटल का महत्वपूर्ण योगदान होता है। इसलिए चित्र की लम्बी आयु के बहुत महत्वपूर्ण होता है, कि जिस जगह पर उसका चित्रण करना है, पहले उसे इस प्रकार तैयार किया जाये, कि उस पर निर्मित किए जाने वाले चित्र एक लंबे समय तक सुरक्षित रहें। भारतीय कला में भित्ति चित्रण पद्धति के इन प्रमाणों को अजन्ता, एलोरा, बाघ, बादामी, सित्रलवासन आदि की गुफाओं में देखा जा सकता है।

अजन्ता में गुफा की खुरदुरी भित्ति पर चूने का पलस्तर चढ़ा कर

टेम्परा शैली में रंगांकन किया गया है। यहाँ सर्वप्रथम रेखांकन किया गया है फिर स्थानीय रंगों को तैयार कर समतल रूप से भर कर गोलाई एवं उभार देने के लिए आसपास गहरे रंगों का प्रयोग किया गया है। काले, सफेद तथा हिरोंजी रंगों से



उत्तम आलेखन बने हे तथा लाल, नीले और पीले विरोधी रंगों का भी प्रयोग हुआ है।

जबकि बादामी गुफा का वर्ण विधान भी अजंता एवं बाघ गुफाओं के समान है किन्तु सिंगरिया गुफा चित्रों की शैली अजंता के निकट होते हुए भी भिन्न है। यहाँ गीली दीवार पर लाल अथवा काले रंग से रेखांकन करने के उपरांत रंग भरे गए हैं। इसके अतिरिक्त इस पद्धति का आंशिक प्रभाव जैन चित्र शैली और पाल चित्र शैली में भी देखा जा सकता है।

उपरोक्त के परिप्रेक्ष्य में यदि हम मध्य युगीन भारतीय कला के व्यापक पटल की समीक्षा करें तो उस युग में राजस्थानी, मुगल, पहाड़ी और बुन्देली चित्र शैलियों में भी भित्ति चित्रण परम्परा का इस विधि का अनुशीलन किया जाता रहा है। यद्यपि बौद्ध कालीन भित्ति चित्रों से इनकी रचना विधान में कुछ भिन्नतायें थीं। लेकिन इन सब ऐतिहासिक स्थलों पर चित्रण से पहले चित्रण के पटल को तैयार किया गया है। भारत में भित्ति चित्रों बुन्देली चित्रकला स्वतन्त्र रूप से विकसित चित्र शैली तो नहीं कही जा सकती, लेकिन इस शैली को राजपूत और मुगल शैलियों ने आधार प्रदान किया, जिसमें स्थानीय रीति-रिवाज, त्योहार, धार्मिक मान्यतायें, स्थानीय वेश-भूषा, आभूषण और अलंकरण जैसे तत्वों ने चित्रकारों को प्रेरित किया। जिनके संयोग और सामंजस्य से बुन्देली चित्रकला अपनी पहचान बना सकी।

चित्रकारी से पहले चित्रकार भूमि को प्लास्टर या वृजलेप से तैयार करते थे। शिल्प-शस्त्र में इसे 'भूमि बन्धनम' कहा गया है। बुंदेलखण्ड में इसे 'भीत' तैयार करना कहते हैं। प्लास्टर बनाने के लिए 'वृषभ चलित प्रस्तर चक्की' द्वारा वर्तुलाकार दो फीट गहरी नाली में दो दिन तक पीसा और



घोंटा जाता था। इसको शक्तिशाली बनाने के लिए इसमें जो घटक मिलाये जाते थे, उनमें बेल का गूदा, लभेड़ा, कपिथ, उड़द की दाल का जल, तथा गुड़, इत्यादि, जिसे शिल्पी लोग ऋतु के अनुसार इस्तेमाल किया करते थे।

राजा परीक्षित की छत्री : दतिया में स्थित समस्त समाधियों या छतरियों में राजा पारीक्षित की छत्री सबसे सुदृढ़ अवस्था में है। यह छत्री 25'48" अक्षांश और 70'28'7" देशांतर पर दतिया में करण सागर तालाब के किनारे पर स्थित है। इस छत्री में दतिया राजवंश के दूसरे अन्य राजाओं की अपेक्षा अधिक चित्रकला के प्रमाण मिलते हैं।

इस स्मारक का मुख्य प्रवेश द्वार पूरब मुखी है। इस स्मारक में निर्मित चित्रों में बैगनी, नीला, आसमानी, हरा, लाल, कथई, कला, नारंगी रंग से चित्रों को चारों तरफ की दलानों, अंदर की दीवारों एवं गुम्बद के अंदर की छत में निर्मित किया गया है। सबसे ऊपर की किनारी पर गोपियों के साथ नृत्यरत कृष्ण पूरी पट्टी पर चित्रित किए गए हैं। ये अंकन बहुत ही मनोहारी है वर्तमान में इनका रंग बहुत ही धूमिल हो गया है। इस छतरी के चारों ओर दालानों में चित्र बनाए गए हैं।

पूर्वी दालान के चित्र : पूर्वी दालान में कृष्ण का गोपियों के साथ बैठना, कृष्ण का राधा का हाथ पकड़ कर नृत्य करना, कृष्ण का मटकी फोड़ना, शिव विवाह का दृश्य, राम दरबार का दृश्य, आदि का अंकन किया गया है। उत्तरी दालान में बलराम कौरव सेना युद्ध चित्रण किया गया है।

पश्चिमी दालान के चित्र : कृष्ण का गोवर्धन पर्वत को उठाना, दक्षिणी दालान के चित्र कृष्ण का गोपियों के वस्त्र चुराना एक सीख, कृष्ण का कदंब के वृक्ष नीचे बांसुरी बजाना, कृष्ण बलराम का मल्लयुद्ध, आदि। इसके अलावा अन्दर की दीवाल पर भी चित्रों को उकेरा गया है। जिसमें शिव-उमा का चित्रण, राधा कृष्ण का चित्रण, गोपियों का होली खेलना, चार भुजाधारी गणेश जी का चित्रण, इसके सामने सरस्वती को अपने वाहन हंस पर वीणा के साथ दिखाया गया है। इस चित्रण के दायीं तरफ राजा परीक्षित के दरबार का चित्रण किया गया है, जिसमें राजा को अपने दरबार में अपने मंत्रियों के साथ दरबार में बैठे हुये दिखाया गया है। ठीक इसके बायीं तरफ

राजा परीक्षित के राजमहल का चित्रण भी किया गया है।

विजय बहादुर की छतरी : यह छत्री 25'40"7" अक्षांश और 78'28'7" देशांतर पर दतिया में करण सागर तालाब के किनारे पर राजा परीक्षित की छत्री के दक्षिण में स्थित है। महाराजा परीक्षित के निःसंतान होने के कारण उन्होंने कुंवर विजय बहादुर को गोद लिया था। जिन्होंने सन् 1839 ई. से सन् 1857 ई. तक शासन किया। उनके पश्चात महाराजा भवानी सिंह उनके उत्तराधिकारी हुए, जिन्होंने इस छतरी का निर्माण कराया।

यह छतरी वर्गाकार प्रांगण में बनी है। छतरी की बाहरी दीवारों पर विभिन्न प्रकार के बेलबूटे का अलंकरण है। अलंकरणों के साथ-साथ हाथी, घोड़े, अंग्रेज, वांसुरी बजाते कृष्ण, पहलवान, घुड़सवार, साधु, हनुमान व शेर के हैं। समाधि के ऊपरी भाग में अष्टकोणीय स्थापत्य के बीच वृत्ताकार परिधि में अंकन किया गया है।

वृत्त के चारों ओर कृष्ण व गोपियों को एक-दूसरे के हाथ पकड़ कर नृत्य करते हुए चित्रित किया गया है। सभी के चेहरे एक चश्म बनाए गए हैं। कृष्ण को मुकुट पहने दिखाया गया है। उनकी वेशभूषा प्रत्येक आकृति में अलग-अलग है। सभी आकृतियों में बुन्देलखण्डी पटका स्पष्ट दिखाई देता है।

महाराजा भवानी सिंह की छतरी : महाराजा भवानी सिंह के पुत्र महाराजा गोविंद सिंह ने उनकी स्मृति में एक छतरी का निर्माण करवाया था। छतरी के प्रवेश द्वार के दोनों ओर बने हुए विभिन्न बेलबूटों के अल्पनाओं से अलंकृत है। बीच के प्रवेश द्वार के ऊपर वाली वर्गाकार भित्ति पर दो हाथियों को सूड़ उठाए चित्रित किया गया है। छतरी के पीछे की भित्ति पर भी एक सुन्दर अंकन किया गया है। जिसमें दो हाथी आमने-सामने खड़े चित्रित किए गए हैं। उनका एक पांव मगर के जबड़े में है। बीच में एक वृत्त बना हुआ है। वर्गाकार आकारों के ऊपर एक लम्बी पट्टी आकल्पनाओं की बनी है। जिनमें भगवान गणेश, मराठा सरदार, शेर व हाथी के चित्र अंकित हैं।

ऊपर की ओर बड़े वृत्त के बाहरी घेरे में नृत्यरत कृष्ण व गोपियों का अंकन किया गया है। उसके नीचे की ओर एक साधु की धुमिल आकृति है तथा उसके पार्श्व में एक वृक्ष है जिसके ऊपर सारस अंकित किए गए

हैं। इनके अलावा मयूर व अन्य पक्षियों का भी अंकन किया गया है। इसके अलावा एक स्थान पर गदा उठाए मुकुटधारी हनुमान का भी अंकन किया गया है। एक कोने पर भगवान शंकर जिनकी जटा से गंगा निकलते हुए अंकित है।

उनके साथ एक घुड़सवार को भी अंकित किया गया है। इसके अलावा इस स्थान पर भगवान राव राजा पारीछत, शत्रुजीत और गोविन्द सिंह आदि राजाओं की समाधियाँ बनी हुई हैं। इन छतरियों में अब देख-रेख के अभाव में चित्रकला के नमूने देखने को नहीं मिलते हैं।

निष्कर्ष : दतिया की सम्पूर्ण छतरियों का अध्ययन करने के पश्चात यह निष्कर्ष निकलता है कि सम्पूर्ण छतरियों में राधा-कृष्ण, शिव, राम, हनुमान आदि देवी - देवताओं का चित्रण बुंदेली शैली में किया गया है। बुंदेली शैली की विशेषता है कि यहाँ पर चित्रों में रंग सरल, सपाट व चमकदार लगाए गए हैं। यहाँ के भित्तिचित्रों में भावों को अधिक महत्व दिया गया है।



इस शैली में नायक-नायिकाओं का अंकन सामान्य मनुष्य के रूप में न बनाकर कृष्ण और राधा के रूप में दिखाया गया है। चेहरे एक चश्म, माथा छोटा और धंसा हुआ तथा नाक और माथा एक ही सपाट प्रभावपूर्ण रेखा से बनाये गए हैं। चित्रों में उर्दू भाषा से नाम लिखा गया है।

दतिया के चित्रों में मुगल व राजस्थानी शैली का समन्वय देखने को मिलता है। इन चित्रों में विधान तथा रंग भित्तिचित्रों के विधान जैसे सरल व सपाट हैं।

सन्दर्भ :

1. डॉ० काशी प्रसाद त्रिपाठी, ओरछा राज्य (इतिहास एवं विरासत) लीला प्रकाशन, नई दिल्ली, (2020) पृ.23-30

2. बुन्देलखण्ड के भित्तिचित्र डॉ० भट्ट, शुभेश, बुन्देलखण्ड की चित्र-साधन, खण्ड-3, जनकशिल्प दीर्घा, वीर बुन्देलखण्ड प्रेस झाँसी (1981), पृ०6।
3. चुन्नू शिल्पी, जन्म 1899 ई० भदौरिया की खिड़की, दतिया के शोध छात्र का साक्षात्कार।
4. विष्णुधर्मोत्तर पुराण- तृतीय खण्ड, अध्याय-4, गीता प्रेस गोरखपुर, (1998), पृ.138।
5. के०वी०एल०पाण्डेय- दतिया उद्भव और विकास, श्री श्यामसुंदर "श्यामला" जन सहायता और सामुदायिक विकास संस्थान, प्रबंधक सम्पादक, बाबूलाल गोस्वामी, (1981) पृ.2
6. डॉ. रीता प्रताप-भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, (2019) पृ.93।
7. डॉ० कुमकुम माथुर एवं दिव्य खरे- मयथोलोजिकल मिनीएचर पेंटिंग ऑफ ओरछा-दतिया 17-18 सेंचुरी, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस रिसर्च एण्ड देवलपमेंट(2018) पृ.410-412
8. डॉ.रामनाथ मिश्र (1973) -"मध्यकालीन भारतीय कलायें एवं उनका विकास", राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर पृ.9।
9. प्रेमशंकर द्विवेदी-भारतीय भित्तीय चित्रकला, कला प्रकाशन, बी.एच.यू. वाराणसी-5, प्रथम संस्करण-2010, पृ.30।
10. वाचस्पति गैरोला-"भारतीय चित्रकला" मित्र प्रकाशन उत्तर प्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी इलाहाबाद (1963), पृ.228।
11. नर्मदा प्रसाद उपाध्याय-"बुन्देलखण्ड के भित्तिचित्र" मध्य प्रदेश जनजातीय संग्रहालय, श्यामला हिल्स, भोपाल, मध्य प्रदेश (2021)
12. शोधार्थी द्वारा सर्वेक्षण के दौरान प्राप्त जानकारी के आधार पर, सर्वेक्षण तिथि 08/12/2020
13. प्रेम चन्द्र गोस्वामी,- भारतीय कला के विविध स्वरूप, प्रथम संस्करण-, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, (1997) पृ.16-20।
14. MADHU SAXENA & BUNDELKHAND PAINTING Sharda Publishing House Delhi (2004), P-111
15. डॉ अविनाश बहादुर वर्मा- भारतीय चित्रकला का इतिहास, राज प्रिंटर्स मेरठ, (2020), पृ.210-211

बुन्देलखण्ड क्षेत्र से प्रकाशित समाचार पत्र 'खबर लहरिया' का विवरणात्मक अध्ययन

विजया

सहायक आचार्य, शोधार्थी, भास्कर जनसंचार एवं पत्रकारिता संस्थान,
बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी (उ.प्र.)

डॉ.उमेश कुमार

सह आचार्य, जनसंचार एवं नव मीडिया विभाग,
जम्मू केन्द्रीय विश्वविद्यालय, जम्मू

शोध सारांश

बुन्देलखण्ड मध्य भारत का प्राचीन क्षेत्र है। जो कि उत्तरप्रदेश व मध्यप्रदेश में विस्तारित है। पत्रकारिता के क्षेत्र में बुन्देलखण्ड का योगदान 1857 की क्रांति से माना जाता है। खबर लहरिया बुन्देलखण्ड के चित्रकूट से छपने वाला एकमात्र बुन्देली भाषा का समाचार पत्र है जिसको पूर्ण रूप से महिलाओं द्वारा संचालित किया जाता है। खबर लहरिया



समाचार पत्र का सम्पूर्ण काम महिलाओं द्वारा किया जाता है। छापने से लेकर बेचने तक की जिम्मेदारी इसमें कार्यरत महिलाओं की है।

खबर लहरिया पत्र को प्रमुख रूप से गरीब, आदिवासी और कम-पढ़ी लिखी महिलाओं की मदद से चलाया जा रहा है। इसमें कार्य करने के लिए आठवीं पास होना आवश्यक है।

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य बुन्देलखण्ड क्षेत्र से प्रकाशित समाचार पत्र 'खबर लहरिया' का विवरणात्मक अध्ययन करना है, जिसमें प्राथमिक आंकड़ों तथा द्वितीयक आंकड़ों का उपयोग किया गया है। प्राथमिक आंकड़ों के लिए समाचार पत्र तथा वेबसाइट और द्वितीय आंकड़ों के लिए खबर लहरिया से

जुड़ी खबरों का अध्ययन किया गया है।

प्रस्तावना

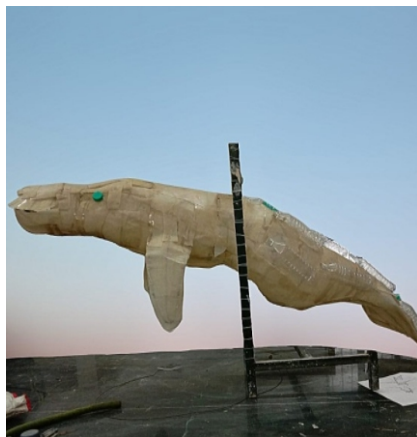


बुन्देलखण्ड मध्य भारत का प्राचीन क्षेत्र है जो कि उत्तरप्रदेश व मध्यप्रदेश में विस्तारित है। उत्तर प्रदेश में जालौन, झाँसी, ललितपुर, महोबा, चित्रकूट, बाँदा तथा हमीरपुर आते हैं तथा मध्यप्रदेश में सागर, छत्तरपुर, पन्ना, टीकमगढ़, दतिया, भिंड, दमोह, लहार, विदिशा, रायसेन तथा ग्वालियर के मांडेर तहसील आती हैं। अतः बुन्देलखण्ड बहुत विस्तारित क्षेत्र माना जाता है।

वैश्विक पटल पर

बुन्देलखण्ड की शान 'खजुराहो' छत्तरपुर में बुंदेला शासकों द्वारा निर्मित विश्वप्रसिद्ध है। ये हिन्दू व जैन धर्म के लिए विशेष महत्व रखता है। कुण्डलपुर जैन धर्म का महत्वपूर्ण स्थल है। मैहर माँ शारदे का मंदिर 52 शक्तिपीठों में शामिल है। झाँसी में झाँसी का किला रानी लक्ष्मीबाई की वीरता को प्रदर्शित करता है। ओरछा प्रसिद्ध हिन्दू तीर्थों में से एक है जहाँ राम राजा मंदिर व रानी गणेशवती का किला झाँसी की भव्यता को दर्शाता है। चित्रकूट का मंदिर बेहद सुंदर है तथा सोनागिरी प्रसिद्ध जैन तीर्थों में शामिल है। कुतुबे बुन्देलखण्ड 'हजरात बाबा निजामी कम्हरिया शरीफ मौदाह' हमीरपुर की प्रसिद्ध दरगाह है। इसके अलावा पन्ना राष्ट्रीय उद्यान, बरुआसागर, बेलासार, सतना आदि प्रसिद्ध स्थल हैं।

बुन्देलखण्ड में पत्रकारिता का इतिहास : 1857 के प्रथम





स्वतंत्रता संग्राम से ही बुन्देलखण्ड में पत्रकारिता ने विस्तार किया जिसके लिए समाचार पत्रों का प्रकाशन है। हैण्डप्रेस तथा लिथोग्राफी द्वारा किया गया।

बुन्देलखण्ड का प्रथम समाचार पत्र कहाँ और कब छपा यह ठीक से नहीं कहा जा सकता। उपलब्ध जानकारी के अनुसार 1871 में बुन्देलखण्ड अखबार में 'विचारवहन' मासिक सागर से

प्रकाशित हुआ। इसके संपादक श्री नारायण बालकृष्ण थे। 1894 में साप्ताहिक 'पंच' तथा 1891 में 'प्रभात' मासिक और 1896 में 'विचार वेदांत' साप्ताहिक झाँसी से प्रकाशित होते थे। श्री अयोध्या प्रसाद ने 'संसारदर्पण' समाचार पत्र निकला। बीसवीं सदी में सागर से 'दैनिक प्रकाश' का प्रकाशन भगवान प्रिन्टिंग प्रेस से प्रारम्भ हुआ। इसके संपादक मास्टर बलदेव प्रसाद जी थे। इस पत्र के मुख्य शीर्ष में निम्न पंक्तियाँ थी—“देश दशा दर्शन देता, यह मनोभाव नितकरे विकास, राष्ट्रप्रेम स्वतंत्र मानवहित, पढिये दैनिकपत्र प्रकाश”। हिंदी पत्रकारिता के क्षेत्र में अग्रगण्य योगदान कोटरा-जालौन निवासी बाबू मूलचंद अग्रवाल का है। इन्होंने कलकाता से 'दैनिक विश्वमित्र' का प्रकाशन किया। कोंच से 'सत्यप्रकाश' मासिक पत्र छपा। इसके अलावा भास्कर, देहाती, उद्बोधन (गोपनीय पत्र था), उत्साह, लोकमत, पन्ना गजट, उदय, समालोचक, (उदय व समालोचक पत्र ने गाँधी जी के असहयोग आन्दोलन का समर्थन किया)। जातिय पत्रों की शुरुआत 1918-19 के बाद हुआ।

कोंच से 'वैश्य शुभचिंतक', मऊरानीपुर से जुझौतिया प्रभाष, झाँसी से 'सना हितकारी', मौठ से 'नाई मित्र' पत्रिका, सागर से भृगु पत्रिका का संपादन किया।

जैन समाज ने सागर से 'गोलपुर जैन' का प्रकाशन किया। वैद्य नाथीराम शर्मा

ने 'गृहहस्थ जीवन' तथा 'वैद्यकल्पद्रुम' पत्रिका निकाली। 1914 में दमोह नगर से मासिक 'मोहिनी' पत्रिका का प्रकाशन किया गया। 1924 में श्री नन्द किशोर वर्मा ने 'लोकमान्य' केसरी प्रेस बाँदा से प्रकाशित कराया, इसके मालिक नारायण प्रसाद थे। श्री बाल प्रसाद ने 'स्वाधीन' जनजागृति हेतु निकाला गया। झाँसी से 'झाँसी समाचार पत्र' तथा कोंच से 'निर्भय' पत्र निकला। इसके सहयोगी पत्र 'रसाल' हैं। 'भारतीय लोकमत' उरई से निकला जो दस वर्षों तक लगातार छपता रहा है।

सन् 1920 में सागर से आठ किमी. पश्चिम 'रतौना' ग्राम में अंग्रेजों ने कसाई खाना खोलने का पट्टा कलकत्ता की डेवनपोर्ट कम्पनी को प्रदान किया। 1400 पशु काटने का उन्हें लाइसेन्स मिला। इसी प्रकार का एक कसाई खाना दमोह में भी स्वीकृत हुआ था। इनको बन्द कराने का बीड़ा समाचार पत्रों ने उठाया। साप्ताहिक पत्र 'कर्मवीर' जबलपुर के सम्पादक पं. माखनलाल चतुर्वेदी, 'वन्देमातरम' के सम्पादक लाल लाजपतराय, उरई के समाचार पत्र 'ताज' के सम्पादक श्री ताजुद्दीन तथा श्री शारदा ने आवाज बुलन्द की। पं. मदनमोहन मालवीय, श्री केशवराम चन्द्र खण्डेकर — सागर — स्वामी कृष्णानन्द आदि के संघर्षों से विवश होकर सरकार को सभी कसाईखाने बन्द करना पड़ा। यह पत्रकारिता की महान विजय थी।

साइमन कमीशन की वापसी 'नमक कानून का उल्लंघन' इन सबका समाचार पत्रों ने सहयोग देकर प्रचार किया। 1930 में पन्ना से 'पतित पावन' साप्ताहिक पत्र निकाला। 1932 में श्री भगवानदास 'बालेन्दु' के निर्देशन में श्री रामगोपाल गुप्त — मादहा — श्री श्याम बिहाबी चौबे तथा मास्टर नारायण प्रसाद — बाँदा — ने मिलकर 'बुन्देलखण्ड केसरी' निकाला, जिसमें जोशीले गीत, राष्ट्रीय समाचार पत्रों की समीक्षा आदि निकलती थी। अधिकतर यह अखबार साइक्लो स्टाइल से छपता था। इसका प्रकाशन उरई से भी होने लगा। 1932 में 'गहोई मित्र' झाँसी से प्रकाशित हुआ। स्वाधीन प्रेस झाँसी से जुलाई 1962 में 'ग्राम सुधारक' पत्रिका छपने लगी। इसके सम्पादक श्री शारदा चरण तथा प्रकाशक श्री अयोध्या प्रसाद शर्मा थे। सागर से 1938 में 'देहाती दुनिया' तथा केसरी प्रेस बाँदा से साप्ताहिक 'मुखिया' का प्रकाशन

प्रारम्भ किया। इसका मुख्य शीर्ष मानस की पंक्ति दृ“मुखिया मुख सो चाहिए, खान पान को एक, पीला पोपे सकल अंग, तुलसी सहित विवेक”.

इसके बाद आनंद, वीरेंद्र, दर्शक, प्रहरी, पुकार, देशी राज्य, जीवन, मधुकर, विजय, विन्ध्य भूमि, विन्ध्य केसरी, पराक्रम, किसान पंचायत प्रकाशित हुए।

स्वतंत्रता के बाद साप्ताहिक दिग्विजय, लोकमत, जयहिंद, हलचल, बुंदेला, संगठनका प्रकाशन शुरू हुआ। बाँदा में क्रांतिकारी आन्दोलन का प्रभाव व्यापक था। जिसके कारण ‘सत्यग्रही’ गुप्त रूप से छपता था। लोकमान्य तथा बुन्देलखण्ड केसरी सम्पादित कर ‘केसरी प्रेस’ बाँदा से छपा। श्री रामनाथ ने “कान्यकुब्ज वैश्य हितकारी” मासिक पत्रिका निकाली। पत्रदुखिया किसान, सत्यग्राही, दिवाकर सत्याग्रही प्रेस से छपते थे।

श्री पन्ना लाल श्रीवास्तव ने ‘लीडर’, ‘अमृत बाजार पत्रिका’, ‘नार्दन इण्डिया पत्रिका’ के सह सम्पादक के रूप में प्रशंसनीय कार्य किया है। इन पत्रों की ग्राहक संख्या कम होने के कारण अधिकांश समाचार पत्रों को आर्थिक संकट झेलना पड़ता था। इन पत्रों ने – साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक – स्थानीय रचनाकारों को पर्याप्त प्रोत्साहन प्रदान किया। स्थानीय महत्व के ऐतिहासिक स्मारक, पर्यटन स्थल, लोकगीत आदि सार्वजनिक प्रकाश में आए। इन सबका योगदान स्मरणीय है तथा बुन्देलखण्ड का पत्रकारिता के क्षेत्र में अविस्मरणीय योगदान है।

वर्तमान में बुन्देलखण्ड से 17 समाचार पत्र छपते हैं जिनके नाम इस प्रकार हैं— दैनिक जागरण, दैनिक अमर उजाला, दैनिक जन-जन जागरण, दैनिक स्वदेश, दैनिक राष्ट्रबोध, दैनिक डी.एल.ए., दैनिक इन्किशाप उर्दू, दैनिक हिंदुस्तान, दैनिक लोकपंथ, दैनिक आज, दैनिक विश्व परिवार, सांध्य दैनिक महाकाल, दैनिक राष्ट्रिय सहारा, दैनिक जनता यूनियन, दैनिक भास्कर, दैनिक सदा-ए-नवी-उर्दू, दैनिक शुभ भास्कर आदि हैं।

साहित्य समीक्षा : शिवकांत तिवारी (2002) ने अपने शोध पत्र “बुन्देलखण्ड क्षेत्र में मिशनरी विद्यालयों के शैक्षणिक योगदान का आलोचनात्मक अध्ययन ” में पाया कि बुन्देलखण्ड की संस्कृति विविधताओं से भरी हैं। राजनीतिक और भौगोलिक सीमाओं में भले ही बदलता रहता है परन्तु इसका

आन्तरिक स्वरूप अपरिवर्तित हैं। जिसमें महिलाओं को देवी का दर्जा प्राप्त हैं। स्त्री को रानी लक्ष्मीबाई का अंश व दुर्गा स्वरूप माना जाता हैं। यहाँ की मिट्टी स्वतंत्रता की महक बिखेरती हैं तथा आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देती हैं। यहाँ की महिलायें कई प्रकार के घरेलु कार्य कर स्वयं अपने परिवार का पालन पोषण करने में सक्षम हैं।



राजेन्द्र शुक्ला (2014) ने अपने शोध पत्र "बुन्देलखण्ड में महिलाओं की स्थिति" में पाया की बुन्देलखण्ड में दलित समाज में पुरुषों का वर्चस्व है जिस कारण महिलाएं स्वतंत्र विचार अभिव्यक्त नहीं कर पाती हैं। वह अपने सभी कार्यों के लिए पुरुषों पर आश्रित हैं। उनको घर के बाहर की स्वतंत्रता नहीं हैं। जिससे यहाँ की महिलाओं में शैक्षिक योग्यता की कमी हैं। यहाँ का दलित व आदिवासी समाज आज भी अपने अधिकारों से अनभिज्ञ हैं। मानवाधिकारों से यहाँ की महिलायें परिचित नहीं हैं। घर में बड़े-बूढ़ों की सीख ही सर्वोपरि हैं। यहाँ महिलाओं को अपने अधिकार जानने के लिए जागरूक करने की आवश्यकता हैं। ऐसी स्थिति में महिलाओं को जागरूक होने की आवश्यकता है जिससे वहां की आने वाली पीढ़ी की महिलाएं समाज में अपनी सही पहचान एवं सही स्थान बना सके। अपने जीवन में स्वालंबी बन सके।

शोध उद्देश्य : प्रस्तुत शोध का उद्देश्य बुन्देलखण्ड के चित्रकूट से छपने वाले एकमात्र बुन्देली भाषा का समाचार पत्र है "खबर लहरिया" का विवरणात्मक अध्ययन करना हैं। जिसके लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक आंकड़ों का उपयोग किया गया है।

समाचार पत्र खबर लहरिया का परिचय : खबर लहरिया बुन्देली भाषा में प्रकाशित एक आंचलिक समाचार पत्र है। इसकी शुरुआत 2002 में



गैर— सरकारी संगठन द्वारा की गयी। यह आठ पेजों का साप्ताहिक स्थानीय भाषा का समाचार पत्र है, जो चित्रकूट से छपता है। खबरलहरिया का पहला अंक मई 2002 में कर्वी से प्रकाशित किया गया।

इस पत्र को सन् 2009 के यूनेस्को साक्षरता पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया है। यह पत्र दलित ग्रामीण महिलाओं द्वारा निरन्तर अशासकीय संस्था के प्रोत्साहन से निकाला जाता है। इस अखबार को इलाके की बेहद गरीब, आदिवासी और कम—पढ़ी लिखी महिलाओं की मदद से निकाला जा रहा है। संपादन और समाचार का पूरा काम महिलाएं करती हैं। अखबार बांटने के काम में पुरुष हाँकर मदद करते हैं। ग्रामीण महिलाओं के इस अखबार में काम करने के लिए कम से कम आठवीं कक्षा पास होना जरूरी है, लेकिन नव साक्षर भी जुड़ सकते हैं।

खबर लहरिया की विषयवस्तु : इस अखबार में सभी तरह की खबरें होती हैं विशेषकर ग्रामीण क्षेत्र, पंचायत, महिला सशक्तीकरण, ग्रामीण विकास की खबरों को ज्यादा महत्व दिया जाता है। समाचार स्थानीय बुंदेली बोली में और बड़े अक्षरों में छापे जाते हैं ताकि नवसाक्षर महिलाएं आसानी से पढ़ सकें। इसका प्रकाशन बुंदेलखंडी बोली में चित्रकूट से आठ वर्षों से तथा बांदा से तीन वर्षों से हो रहा है। इसका प्रकाशन स्वयंसेवी संस्था निरंतर कर रही हैं तथा यह समाचार पत्र स्वयंसेवी संस्था 'निरंतर' द्वारा वित्तपोषित है। शुरुआत में 'निरंतर' ऐसी महिलाओं की मदद करता था जो घरेलू प्रताड़ना सहती थीं।

समाचार पत्र से सम्बंधित प्राप्त आंकड़ों के अनुसार इसकी प्रसार संख्या 4500 तथा पाठक संख्या 20000 एवं मूल्य — दो रुपए है। चित्रकूट से खबर लहरिया की लगभग 2500 प्रतियाँ छपती हैं और बाँदा से 2000. आंकड़ों



के मुताबिक लगभग 20000 से ज्यादा लोग इस पत्र को पढ़ते हैं। वर्तमान में खबर लहरिया का डिजिटल नेटवर्क भी है। जो खासतौर पर सरकार की ग्रामीण विकास और सशक्तीकरण के लिए बनाई गई योजनाओं के दावों और उनकी हकीकत के बीच के अंतर को उजागर करता है। खबर लहरिया का टैगलाइन— हमारी खबर, हमारी भाषा में ये है खबर लहरिया की खासियत। खबर

लहरिया के डिजिटल प्लेटफार्म पर महिलाओं के खिलाफ हिंसा, औरतों पर काम, जासूस या जर्नलिस्ट जैसे गंभीर मुद्दों को कवर करता है।

खबर लहरिया की डिजिटल वेबसाइट www-khabarlahariya-org है। यहाँ सभी प्रकार के विषयों से समावेश हैं। जिसमें आपकी आवाज नमक विकल्प में— विकास, महिलाओं के खिलाफ हिंसा, औरतें काम पर, दा कविता शो, एडिटर देगी जवाब, जासूस या जर्नलिस्ट, क्राइम, भ्रष्टाचार, कोरोना वायरस शामिल हैं। नेतानगरी नमक विकल्प में राजनीति, चुनाव, पंचायती राज से सम्बंधित खबरों को शामिल किया गया है। जिससे क्षेत्र की हर प्रकार की राजनीतिक खबर को लोगों तक पहुंचाया जा सके। तफरीबाजी में मनोरंजन, खेलकूद, जवानी दीवानी, पर्यटन आदि से सम्बंधित सूचनाओं और जानकारीयों से लोगों को मनोरंजित किया जा रहा है। अंग्रेजी में विषयवस्तु को पसंद करने वाले दर्शकों के लिए अंग्रेजी में खबरे व जानकारी उपलब्ध हैं जिसमें मूल रूप से विकास, लिंग, जाति, युवा, संस्कृति, बुन्देलखण्ड आदि



से सम्बंधित जानकारीयों का समावेश किया गया हैं। डिजिटल प्लेटफार्म पर भी सभी कार्य केवल महिलाओं द्वारा ही संपन्न किया जाता हैं। यह महिलाओं को सशक्त बनने तथा सदैव विकास की रह पर चलने के लिए प्रेरित करता हैं।

खबर लहरिया का उद्देश्य गाँव देहात की महिलाओं में आत्मविश्वास जगाना हैं। अपना विकास अपने हाथ की नीति को प्रचारित करना है।



अगर कोई महिला गाँव से है या कम पढ़ी लिखी है इसका ये मतलब नहीं की वह स्वयं को अभिव्यक्त नहीं कर सकती प्रत्येक स्त्री के पास आने संघर्षों की अलग कहानी होती हैं जिससे लाखों महिलाओं को उम्मीद दी जा सकती है और इन्ही महिलाओं की आवाज खबर लहरिया के माध्यम से देश में गूँज रही हैं। भारत ही नहीं विदेशों में भी खबर लहरिया का बोलबाला हैं। खबर लहरिया बुन्देलखण्ड की ओर विश्व का ध्यान केंद्रित करना चाहता हैं ताकि यहाँ की संस्कृति से सभी को अवगत कराया जा सके।

सम्मान और पुरस्कार : खबर लहरिया को प्राप्त होने वाले सम्मान इस प्रकार हैं— 2004 में, खबर लहरिया को सामने लाने वाली महिला पत्रकारों की सामूहिक पत्रकारिता में महिलाओं के लिए प्रतिष्ठित चमेली देवी जैन पुरस्कार से सम्मानित किया गया. 2009 में, अखबार को यूनेस्को किंग सेजोंग साक्षरता पुरस्कार से सम्मानित किया गया. इसके बाद अखबार के विस्तार, मीडिया पुरस्कार जीता। इसके अलावा, उसी वर्ष भारतीय समाचार चैनल टाइम्स नाउ ने अद्भुत भारतीय पुरस्कार से खबर लहरिया. 2013 में अखबार को कवि कैफी आजमी की याद में कैफी आजमी पुरस्कार प्रदान किया गया था. यह पुरस्कार ऑल इंडिया कैफी आजमी अकादमी द्वारा हर

साल उनकी पुण्यतिथि पर प्रदान किया जाता है।

निष्कर्ष : उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश की सीमा पर स्थित बुंदेलखंड है जो देश के पिछड़े इलाकों में से है। यहां का समाज बिल्कुल अलग है, राजनीतिक और आर्थिक शक्तियां भी ऐसी हैं कि यहां किसी संवाददाता के लिए काम करना आसान नहीं है। इस इलाके से खबर निकालने का मतलब है शक्तिशाली राजनीतिज्ञों से लोहा लेना है। ऐसे अखबार के लिए बहुत कम गुंजाइश बनती है जो पूरी तरह दलित, मुस्लिम और आदिवासी समुदाय की महिलाएं चलाती हैं। इन दलित महिलाओं को अखबार की नौकरी से खुद को सशक्त बनाने और अपने तरीके से जीने में मदद मिली है।

परेशानियों के बावजूद ये महिलाएँ डटकर खबर लिखती हैं— चाहे वो दलितों के साथ दुर्व्यवहार का मामला हो, खराब मूलभूत सुविधाएँ हों, नरेगा की जाँच पड़ताल हो, पंचायतों के काम करने के तरीके पर टिप्पणी हो, या फिर सूखे की मार से परेशान किसानों और आम आदमी की समस्या हो, सूखे की वजह से लोगों की पलायन की कहानी हो, या फिर बीमारी से परेशान लोगों के लिए स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी। खबर लहरिया का डिजिटल प्लेटफार्म पर महिलाओं के खिलाफ हिंसा, औरतों पर काम, जासूस या जर्नलिस्ट जैसे गंभीर मुद्दों को कवर करता है। यहाँ की रिपोर्टर बेबाकी की मिसाल पेश करती हैं। यह समाचार पत्र पेड न्यूज के पूर्णता खिलाफ है एवं पेड न्यूज की निंदा करता है। महिलाओं को सशक्त बनाने में खबर लहरिया का योगदान अतुलनीय है।

सन्दर्भ ग्रन्थ —

- <https://khabarlahariya.org/khabar-lahariya-in-the-media/>
- https://www.theguardian.com/global-development/2016/aug/10/india-all-female-newspaper-khabar-lahariya-gender-taboos-old-news?CMP=share_btn_tw
- <https://m-hindi.webdunia.com/article/bbc-hindi-news/%E0%A4%96%E0%A4%AC%E0%A4%B0%E0%A4%B2%E0%A4%B9%E0%A4%B0%E0%A4%BF%E0%A4%AF%E0%A4%BE->

- <https://www.thehindu.com/todays-paper/tp-features/making-waves-with-news/article4426550.ece>
- <https://www.firstpost.com/living/up-to-bihar-why-a-group-of-rural-women-journalists-went-online-624914.html>
- <https://www.theguardian.com/journalismcompetition/manini-sheker-shortlist-2011>
- <https://www.aljazeera.com/news/2009/9/8/reading-the-future>
- https://archives.cjr.org/behind_the_news/postcard_from_chitrakoot.php?page=all
- <https://bundelkhand.in/bundelkhand-research-frodkar%202021%20cqsunk.M%7Bks=esa%20fe%20kujhfokysa%20ds%20%20kf.kd%20ksxnku%20dkvkykspukRedv%20;u%20%20cqsunk.Mfo%20fokyA%20%20kqDyk%20jktsUae%202014%20%20cqsunk.Mesaefgykvksadhflfrs%20thokthfo%20ofokyA%20>

Studies on Replacement of Water by Butter Milk to Prepare Chapatti

Shubhangi Nigam & Riya

Assistant Professor & student

Department of Food Technology

Institute of Engineering and Technology

Bundelkhand University, Jhansi -284128 (UP) India

Email: shubhangi.nigam@gmail.com

Abstract

The investigation was undertaken to explore the possibility of utilization of buttermilk in chapatti making. Water was substituted in dough during chapattis making with buttermilk. Buttermilk was incorporated in chapattis dough at levels of 0 to 100 percent. The effect of water substitution was studied on dough handling and quality characteristics of chapattis. The dough handling was improved with augmented level of buttermilk. The augmented incorporation of buttermilk enhanced protein, fat and ash contents in the chapattis so prepared and therefore, improved their nutritional value. The effect of various levels of buttermilk on sensory attributes of appearance, color, flavor, mouth feel and over all acceptability of chapattis was found to be non-significant except for texture which was found to improve with increased level of buttermilk inclusion.

Index Terms - Buttermilk, Chapatti, Dough handling, Sensory characteristics

1. Introduction

Butter milk and separated milk are obtained during the manufacture of butter and cream respectively. Buttermilk contains almost all other milk solids except fat, and is produced while butter and ghee are manufactured. Buttermilk has been used in the preparation of Ice-cream, bakery related products, yoghurt, dahi and beverages (Chopra and Gandhi, 1989). Buttermilk is a good source of proteins, carbohydrates, minerals, vitamins A- tocopherol and cholesterol (Tylkin et al., 1975). Production of buttermilk in India is estimated as 275.0 million kg per annum containing more than 25.0 million kg milk solids. An increased trend in the use of

skim milk, buttermilk and whey in western countries for enriching milk products and as a basis for manufacturing other food products has been observed. Due to urbanization and advancement in technology, the food habits of people are changing. The trend is more towards the convenience foods. Therefore, the utilization of buttermilk in chapatti making will improve the nutritive value of chapatti at a cheaper rate. In spite of the new technologies having being involved full utilization. Different types of bread are made widely throughout the middle east and the Indian subcontinent (Hui, 1992). So substitution of chhana and paneer whey and buttermilk in chapatti will not only enhance the nutritive value but will solve the problem of waste disposal and also help in providing precious nutrients to the health conscious people. The work on the above is very scanty. Therefore, the present investigation to replace water with buttermilk in chapatti making was undertaken to utilize buttermilk.

2. Material and Methods

Materials- whole wheat flour and buttermilk were collected from the local market of Jhansi.

Blend formation-water was replaced in the chapattis with buttermilk levels of 0, 20, 40, 60, 80, 100 percent.

Steps of Chapatti Making

- **Preparation of dough-** chapatti dough was prepared by mixing 100 gm of flour with the predetermined amount of water for 3 minute. It was allowed to rest for 15 minute.
- **Rolling the dough-** The dough was divided into four equal proportions. It was rounded in to a ball and placed in the centre of a specially designed platform. The dough was rolled to uniform thickness with a wooden rolling pin, to a circle 15 cm in diameter.
- **Baking of chapatti-** the chapatti was baked by traditional method on cast iron skillet (tawa)for 60 seconds giving first and second turning after 15 to 30 seconds, respectively, allowing each side to bake for equal time.
- **Chapatti Storage-** four chapattis were packed in a polyethylene bag and heat sealed. All samples were stored at 22 C

temperature and 55 percent relative humidity.

- Physico- chemical characteristics of chapattis- The protein content of flour was determined by Kjeldahl method AOAC (1984), using a nitrogen to protein conversion factor of 5.71 for wheat. Moisture, fat, ash and crude fibre in the sample were estimated according to AACC (1990) methods. Phosphorus and iron were determined by colorimetric method as described by AACC (1990), while calcium was determined by AACC (1990) method, after precipitating Gluten content of plain and blended flour was determined according to the methods of AACC (1990). Pliability of chapattis was determined as per the method of Verkateswara Rao et al., (1986) using a pliability tester. Water Hydration capacity was determined as per the method of Martin et al., (1991) .
- Sensory characteristics- The Organoleptic characteristics of chapattis such as appearance, texture, mouth feel and over all acceptability were evaluated by an untrained panel of ten judges on a nine-point hedonic scale. Hedonic ranges from like extremely (9) to dislike extremely (1) for each organoleptic characteristic as suggested by Ranganna (2003).
- Storage studies –Chapattis were stored at room temperature (30-45C) and under refrigeration (2-5C) conditions. These were judged at regular intervals for shelf life of products.
- Statistical analysis- The data were statistically analyzed a per the analysis of variance technique using two-way analysis without interaction (snedecor and Cochran, 1968).

3. Result and Discussion

The present investigation was envisaged to utilize the milk byproducts namely buttermilk in chapatti. The samples of buttermilk were analyzed for chemical composition i.e., for the estimation of ash, fat, protein, total solids and sugars. Water was substituted in the chapattis with buttermilk level of 20, 40, 60, 80 and 100 percent. Effect of buttermilk incorporation on dough handling, physico-chemical characteristics (moisture, puffing and hydration capacity)

and sensory score (appearance, texture, mouth feel, and overall acceptability) of buttermilk incorporated chapattis was studied.

Chemical Composition of Raw Material –The chemical composition of buttermilk and whole wheat flour (Atta) is presented in Table 1. Buttermilk contained 10 percent total solids. The protein, fat and ash content of buttermilk were 3.98, 0.67 and 0.32 percent, respectively. The values are similar to those as reported by Nutting et al., (1970). The gluten content was 7.39 percent in whole wheat flour. The whole wheat flour containing 10.21 percent protein and 1.44 percent ash.

Table - 1 Physic- chemical composition of buttermilk and whole wheat flour.

Attribute (%)	Buttermilk	Whole Wheat flour
Moisture	90	12.09
Total solids	10	87.91
Protein	3.98	10.21
Fat	0.67	1.19
Wet Gluten	----	22.23
Dry Gluten	----	7.39
Carbohydrate (by difference)	5.03	75.07
Ash	0.32	1.44
Minerals	Mg/100gm	
Calcium	406.81	
Fe	3.42	
Potassium	265.82	
Mg	67.31	
Phosphorous	382.11	
Sodium	0.12	

The minerals content varied appreciably in buttermilk. Calcium content of buttermilk was 406.81 mg/100g. Iron content of buttermilk is 3.42. Magnesium, phosphorous and sodium were also found in buttermilk 67.31, 382.11 and 0.12 mg/100g, respectively.

Chapatti Making – Effect of replacement of water with buttermilk on dough making /handling and physic-chemical properties of chapatti such as moisture, puffing, hydration capacity, pliability and overall acceptability are presented in Table 2

Dough Characteristics and Handling- The replacement of water with buttermilk from 0 to 100 percent, proportionately improved the smoothness and decreased the stickiness of dough . Control sample of dough was slightly sticky during handling i.e. for ball and chapatti making . Incorporation of buttermilk at increasing levels improved its handling by making it smooth and pliable. Moreover, the dough was devoid of stickiness during mixing, ball making and sheeting. This was because of incorporation of casein through buttermilk that eliminated the problem of stickiness (Buchanan, 1979).

Table -2 Effect Of Buttermilk Incorporation On Dough Handling And Chapatti Characteristics

Replacement (%)	Mixing	Ball making and sheeting	Increase in size of brown spots
0	Slightly sticky	fair	normal
20	smooth, good	good	fair/slight
40	smooth, good	good	fair to moderate
60	Smooth and pliable, good	good	moderate to high
80	Smooth and pliable, very good	very good	High
100	smooth and highly pliable, excellent	Excellent	High

Improvement in dough characteristics on addition of milk solids was also observed by **Milosz and kowalczuk (1989)** . This was due to additional moisture held by protein of buttermilk . Earlier Bilgin et al.,(2006) observed an improvement in dough properties with the replacement of 50 and 100 percent water with whey and buttermilk. The improvement was greater with 100 percent buttermilk. Puffing of chapattis during baking was also improved with the incorporation of buttermilk. The puffing improved proportionately with increase in the amount of buttermilk . However increasing level of water replacement with buttermilk enhanced number and size of brown spots. This might be due to enhanced maillard reaction during baking with increased protein content in dough. To explore the possibility of exploring WPC as a functional ingredient in Indian traditional product south Indian parotta investigation were made by

Inidrani et al., (2007) to study the effect of replacement of wheat flour with 5, 10 and 15 percent WPC on the dough characteristics of wheat flour, quality of parotta, and microstructure of baked parotta. The quality characteristics of parotta showed that the spread ratio decreased and shear force values increased significantly above 5 percent level. Control parotta and parotta with 5 percent WPC were soft, possessed thin and transparent layers where as parotta beyond 5 percent WPC had thick, fused and opaque layers.

Proximate component of chapattis -The proximate components of chapattis changed with the incorporation of buttermilk as shown in Table -3. The fat content increased from 0.56 to 1.33 percent by incorporation of buttermilk and protein from 9.61 to 11.23 percent. Ash content was also enhanced from 1.31 to 1.86 percent. The fat content exhibited a high variation consequent upon incorporation of buttermilk with the CV value being 32.06 %. Similar enhancement was observed in protein and ash content of chapattis. The overall mean values as a result of replacements were observed to be 0.86, 9.79 and 1.61 percent for fat, protein and ash contents respectively with very low values for coefficient of variation.

Moisture content of chapattis - Effect of water replacement with buttermilk on moisture content of fresh chapattis and changes during storage is presented in Table - 4. Replacement of water with higher percentages of buttermilk added during the dough mixing process though improved the moisture content of chapattis, the differences were not found to be statistically significant ($P < 0.01$). The moisture content of fresh chapattis ranged from 38.06 to 38.46 percent on freshly prepared chapattis, with an increase in the replacement from 0 to 100 percent by buttermilk.

Table -3 Effect Of Water Replacement With Buttermilk On Proximate Components Of Chapattis.

Replacement (%)	Fat (%)	Protein (%)	Ash (%)	Moisture (%)
0	0.56	9.61	1.31	38.06
20	0.67	10	1.42	38.21
40	0.86	10.32	1.51	38.4
60	1.05	10.64	1.65	38.4
80	1.21	10.92	1.75	38.42
100	1.33	11.23	1.86	38.46
Mean	0.946	10.45	1.58	38.26
CV	32.06	5.72	12.97	0.404

Table -4 Effect Of Water Replacement With Buttermilk On Moisture Content (%) Of Chapattis And Changes During Storage At Room Temperature

Replacement (%)	Storage (Hours)					
	0	24	48	72	Mean	CV
0	38.06	36.4	36.24	35.15	36.46	3.04
20	38.21	36.42	36.35	35.3	36.57	3.3
40	38.4	36.52	36.36	35.51	36.69	3.31
60	38.4	36.59	36.47	35.57	36.75	3.21
80	38.42	36.62	36.54	35.69	36.82	3.24
100	38.46	36.71	36.61	35.89	36.92	3.01
Mean	38.26	36.54	36.42	35.52		
CV	0.404	0.323	0.378	0.744		

Chapattis were stored thereafter in polythene bags which ultimately showed a significant ($P < 0.01$) loss in moisture content on storage, being minimum in samples containing 100 percent buttermilk Table - 4. **Eaelier Rao et al., (1986)** observed negligible moisture loss in chapattis stored either in a polyethylene pouch or plastic containers for three days, whereas, those wrapped in waxed paper showed a considerable loss. it was also observed that drop in moisture content was significant during storage from 0 to 24 hours, and thereafter a gradual decline was witnessed in case of buttermilk replacements. The estimates of co-efficient of variation percent values indicated that variation in moisture content was higher consequent upon storage than substitution by milk by-products (Table 6). The findings are in accordance with Kaur and

Bajwa (2000) who observed that the storage caused a significant ($P<0.01$) drop in the moisture content of chapattis with and without liquid buttermilk which was further followed conventional and microwave reheating.

Pliability of chapattis– Pliability of chapattis improved significantly ($P<0.01$) with the inclusion of buttermilk in the dough (Table 5). It improved from 4.00 cm to 4.20 cm on conclusion of 100 percent buttermilk possibly due to additional protein storage of chapattis also had a significant ($P<0.01$) effect on pliability. Control chapattis had a pliability of 1.30 after 72 hours of storage. Pliability of chapattis decreased significantly after 24, 48 and 72 hours storage, in all the samples. After 72 hours it decreased from 4.00 to 1.30 cm in control and from 4.20 to 2.98 in sample containing 100 percent buttermilk.

This implied that decline in moisture content was more than twice in control compared to the buttermilk incorporation chapattis. It was also evident from the results that decline in pliability was steep from 24 to 48 hours of storage buttermilk replacement. Storage period caused high variability in pliability of chapattis reaching up to 53.4 percent in the control sample causing a significant ($P<0.01$) decline. Similar results were observed in whey incorporated samples as evident from the CV value.

Earlier, Rao et al., (1986) also observed a decrease in pliability value of chapatti during three days of storage in waxed paper. Improvement to pliability value of chapattis containing milk byproduct may be attributed due to the presence of phospholipids in buttermilk and soluble proteins of whey causing more retention of moisture during storage. An investigation was undertaken to study the effect of refreshing procedures on the quality characteristics of stored chapattis prepared with and without liquid buttermilk **by Kaur and Bajwa (2000)**. They observed that pliability of chapattis was adversely affected after storage. However it improved significantly ($P<0.01$) following refreshing.

Table -5 Effect Of Water Replacement With Buttermilk On Pliability (Cm) Of Chapattis And Changes During Storage At Room Temperature

Replacement (%)	Storage (Hours)					
	0	24	48	72	Mean	CV
0	4	3.36	2.14	1.3	2.27	54.4
20	4.01	3.6	2.4	1.97	2.99	32.25
40	4.1	3.88	2.58	2.5	3.27	25.76
60	4.13	3.94	2.68	2.6	3.34	24.32
80	4.16	3.97	2.75	2.68	3.39	23.03
100	4.2	4.06	2.98	2.98	3.5	18.95
Mean	4.1	3.8	2.59	2.33		
CV	1.88	7.01	11.19	26		

Hydration capacity – Hydration capacity of chapattis differed significantly with levels of buttermilk as also with the storage period (Table 6). Hydration capacity improved with the incorporation of milk byproducts, whereas it decreased significantly ($P < 0.01$) with storage. Hydration capacity of control was 2.42 and 2.41 which increased to 2.46 and 2.44 with incorporation of 100 percent buttermilk in freshly prepared chapattis, After 2 hours of storage. Control sample showed a decline of 3.30 percent in hydration capacity whereas; decrease was negligible in sample containing milk byproduct. The revealed that the effect of storage was significant ($P < 0.01$) in buttermilk replacements. The drop in hydration was significant ($p < 0.01$) only after 48 hours of storage. In an investigation undertaken to study the effect of refreshing procedures on the quality characteristics of stored chapattis prepared with and without liquid buttermilk.

Table - 6 Effect Of Water Replacement With Buttermilk On Hydration Capacity Of Chapattis And Changes During Storage At Room Temperature

Replacement (%)	Storage (Hours)					
	0	24	48	72	Mean	CV
0	2.42	2.34	2.4	1.61	2.2	17
20	2.45	2.44	2.37	1.9	2.29	36.53
40	2.45	2.44	2.37	1.91	2.29	36.53
60	2.45	2.44	2.39	1.91	2.3	36.37
80	2.46	2.46	2.4	1.91	2.31	36.21
100	2.46	2.46	2.41	2.01	2.33	30.34
Mean	2.45	2.43	2.39	1.88		
CV	0.577	1.84	0.724	7.52		

Kaur and Bajwa (2000) observed that the water hydration capacity and soluble solids were found to be affected significantly ($P < 0.01$) with the storage and refreshing treatments.

Sensory characteristics of chapattis -

Appearance scores - Appearance scores of chapattis have been shown in Table 7. Appearance of chapattis slightly deteriorated with the incorporation of buttermilk in the freshly prepared chapattis. It caused more brownish /blackish spots on the surface of chapattis during baking on the tawa. However, this effect was not reflected in sensory scores which did not differ significantly. Analysis of variance showed that storage resulted in significant ($P < 0.01$) lowering of appearance scores in buttermilk. The appearance of more number of brownish /blackish spot on the surface of chapattis could be because of enhanced maillared reaction due to the presence of more amino group and carbonyl groups and lactose contributed by buttermilk.

Table - 7 Effect Of Water Replacement With Buttermilk On Appearance Scores Of Chapattis And Changes During Storage At Room Temperature

Replacement (%)	Storage (Hours)					
	0	24	48	72	Mean	CV
0	7.85	7.56	7.15	7.05	7.4	5
20	7.55	7.56	7.15	7.1	7.34	3.39
40	7.55	7.49	7.28	7.18	7.37	2.35
60	7.57	7.8	7.15	7.12	7.41	4.47
80	7.57	8	7.17	7.15	7.47	2.14
100	7.58	7.72	7.42	7.2	7.48	2.95
Mean	7.61	7.69	7.22	7.13		
CV	1.55	2.46	1.52	0.77		

Incorporation of buttermilk at 80 percent levels had the best effect on the appearance of chapattis even after being storage for 14 hours.

Texture Score - Incorporation of buttermilk in dough improved the texture of chapattis, although the effect of incorporation of even higher levels was found to be non significant (Table 8). Improvement in texture of test chapattis may be attributed to the presence of phospholipids as a result of buttermilk incorporate on during dough making. Swortfigure (1962), Hlynka (1964) and Hertz (1965) further observed that in baked products containing milk solids, hydrated

casein acts as a reservoir of water necessary for the thermal gelation of starch and continue to function in thus, may retard the staling phenomenon. This could be another reason for better textured chapatti having buttermilk/ whey. Storage of chapattis resulted in significant ($P < 0.01$) deterioration of texture Table 8.

Chapattis became hard on storage and thus obtained poor rating for sensory attributes of texture. However obtained poor rating for sensory attributes of texture. However incorporation at 100 percent levels not only improved the texture but also maintained it up to 24 hours. Baking products have a limited shelf life because they undergoes staling phenomenon (**Kulp and Ponte 1981**). The starch fraction is generally considered as the primary factor for the staling of bread, progress of which could be measured by measuring crumb firmness (**Colwell et al., 1969**). Shortening and emulsifier are known to reduce crumb firmness by binding with starch and hence, improve the texture. Therefore, the retention of water and improvement in texture of test chapattis may be attributed to the presence of phospholipids as a result of buttermilk incorporate on during dough making.

Table - 8 Effect Of Water Replacement With Buttermilk On Texture Scores Of Chapattis And Changes During Storage At Room Temperature

Replacement (%)	Storage (Hours)					
	0	24	48	72	Mean	CV
0	6.7	7.01	6.02	6	6.43	7.77
20	7.7	7.15	6.4	6.1	6.83	10.55
40	7.56	7	6.82	6.3	6.92	7.5
60	7.5	7.08	6.69	6.21	6.87	7.97
80	7.79	7.72	6.72	6.28	7.13	10.49
100	7.91	7.87	6.84	6.32	7.23	10.89
Mean	7.53	7.3	6.58	6.2		
CV	5.78	5.3	4.8	2.04		

Swortfiguer (1962), Hynka (1964) and Hertz (1965) further observed that in breads containing milk solids, hydrated casein acts as a reservoir of water necessary for the thermal gelation of starch and continue to function in thus, may retard the staling phenomenon. This could be another reason for better textured chapattis having buttermilk. **Indrani et al., (2007)** explored the possibility of using WPC as a functional ingredient in Indian traditional product- South Indian parotta, at 5, 10, and 15 percent. The parottas with 5 percent

WPC were rated good. The quality characteristics of parotta were adversely affected beyond 5 percent level of WPC. The microstructure of the top and middle layer of baked parotta with 5 percent WPC showed that there was a disruption in the continuity of the gluten matrix.

Mouth Feel Scores- Mouth feel scores of chapattis as affected by level of buttermilk and storage are presented in Table 9. Mouth feel scores were not affected significantly ($P < 0.01$) though showed some improvement as a result of incorporation of milk byproducts at various levels. However, scores decreased significantly with the storage ($P < 0.01$). Incorporations of buttermilk and whey at 20 percent levels reflected best mouth feel scores in the freshly prepared chapattis.

Table - 9 Effect Of Water Replacement With Buttermilk On Mouth Feel Scores Of Chapattis And Changes During Storage At Room Temperature

Replacement (%)	Storage (Hours)					
	0	24	48	72	Mean	CV
0	6.28	6.86	6.14	6.05	6.21	2.21
20	7.69	6.84	6.4	6.1	6.76	10.23
40	7.38	7.1	6.42	6.15	6.76	8.48
60	7.36	7.16	6.44	6.2	6.79	8.21
80	7.3	7.3	6.56	6.2	6.81	7.7
100	6.86	7.32	6.43	6.15	6.51	4.6
Mean	7.14	6.88	6.39	6.14		
CV	7	4.82	2.15	0.892		

Overall – acceptability- over all acceptability scores have been presented in Table 10 which are simple averages of appearance, color, texture and mouth feel scores. Over all acceptability of chapattis was not affected significantly with the incorporation of buttermilk in chapatti dough. However, storage had a significant ($P < 0.01$) effect in decreasing the acceptability scores of chapattis.

Overall acceptability as a result of storage while incorporations had almost negligible effect on this trait. **Kaur and Bajwa (2000)** investigated the effect of refreshing procedures on the quality characteristics of stored chapattis prepared with and without liquid buttermilk. The overall acceptability scores were significantly ($P < 0.01$) affected with the levels of buttermilk, storage and reheating process

Table - 10 Effect Of Water Replacement With Buttermilk On Overall Acceptability Scores of Chapattis And Changes During Storage At Room Temperature

Replacement (%)	Storage (Hours)					
	0	24	48	72	Mean	CV
0	6.94	7.04	6.44	6.14	6.64	6.38
20	7.64	7.18	6.66	6.36	6.96	8.12
40	7.49	7.19	6.84	6.4	6.98	6.71
60	7.47	7.34	6.76	6.4	6.99	7.15
80	7.38	7.37	6.81	6.45	7	6.54
100	7.15	7.13	6.76	6.42	6.86	5.04
Mean	7.34	7.21	6.71	6.36		
CV	3.47	1.75	2.15	1.79		

Conclusion

It was concluded that substitution o water with milk byproducts. Buttermilk facilitated dough handling and baking characteristics of chapattis improved appearance and texture scores. They certainly helped improve the quality characteristics and overall acceptability during storage of the baked products. The augmented incorporation of buttermilk enhanced protein, fat and ash contents in the chapattis so prepared and therefore, improved their nutritional value. This suggested a simple and safe way of better utilization of buttermilk rather than dumping into sewers, sea , rivers and grounds as their disposal is not only a wastage of nutrients but causes environment pollution as well.

4. References

1. AACC(1990) Approved methods. American association of cereals chemists, st paul, Minn, USA.
2. G. Chopra and I. Gandhi (1989) improving the nutritional value of bread and pastry. Khlebopekarnaya I Konditerskaya Promyshlennost 4 : 414-15
3. P Tylkin (1975) Effect of wheat bran and polydextrose on the sensory characteristics of biscuits,. Cereal Chem. 67 (6): 545-47.
4. C. Hui (1992) Proximate and mineral content of selected baked products. Cereals Food World. 27 (7): 108-13

5. Verkateswara Rao (1991) Nutritional evaluation of products prepared from composite flour containing wheat , breadfruit and soybean, peanut flours. J . of Cereal Chem. Vol – 1, 203-207.
6. F. Martin (1991) Factors affecting the mixing requirements of a sourdough bread made with acid whey. Baker's Digest 47 (3) :16-18.
7. G.W Snedecor and W. Cochran (1968) . Statistical methods, Oxford and IBH Publishing company, New Delhi, pp339
8. H. Nutting (1970) Process and additive for producing a rapidly acting bakery dough and the products obtained Abstr. In FSTA 17 (7): 138.
9. R.A Buchanan (1979) The Australian milk biscuits. Agric Sci Rev 9 (1) : 19. (FSTA 3: 11G413, 1971).
10. Earlier Bilgin "Properties and composition of Turkish flat bread supplemented with barley flour and wheat bran", J of Food Sci. Vol 4 pp- 45-150, (2006) .
11. K Milosz and M. Kowalczuk, "Loaf volume and protein content of hard winter and spring wheat's". Cereals Chem. 25: 291-301, (1989)
12. S. Indrani (2007), Studies on the quality of some improved varieties of Indian wheat, J of the Soci. Food Agric, 16, 526.
13. S. Eaelier Rao (1986) Non fat dry milk and whey protein concentrate- versatile dairy proteins in economical forms. Food Processing 53 (5): 124-32.
14. Kaur and N Bajwa (2000) Proximate composition and content of minerals linoleic and tocopherols in soymilks. J Japanese society Fd Sci Tech 37 (4): 293-97.
15. A. K Swortfiguer (1962), Utilization of byproducts of dairy industries- whey and buttermilk. Indian dairyman 37(11)507
16. N. Hynka (1964) and B. Hertz (1965) Rheological characteristics of dough for the production of special Azerbaidzhan bread. J Food Sci , Vol -27:pp 233.

Developing Ethical Frameworks for AI Rooted in Indigenous Values of Reciprocity, Responsibility, and Relationality

Vijaya

Research Scholar,

Bhaskar Institute of Mass Communication and Journalism,
Bundelkhand University Jhansi Uttar Pradesh

Dr. Umesh Kumar

Associate Professor,

Department of Mass Communication and New Media,
Central University of Jammu, J&K

Abstract

This paper discusses the creation of ethical frameworks for artificial intelligence (AI) based on Indigenous values around reciprocity, responsibility, and relationality. Standard AI ethics may be productively critiqued as reflecting Western-centric frameworks and values with inadequate consideration of the cultural, social, and historical contexts of Indigenous peoples. This manuscript discusses a theoretical and literature-based approach, leading to a discussion of Indigenous epistemologies as a conceptual foundation for ethical AI development. The paper positions Indigenous values territory as part of the fabric of ethical development, and cultural-pluralistic AI frameworks for ethical AI that emphasise a move away from individualistic-anthropocentric ethics and as much toward a relational-community ethics reflexive of the relationship's communities, formal and informal, have to everything. The concept of “embedded ethics” in AI development is also reframed from an Indigenous perspective to suggest its pervasive inclusion at every stage of the AI lifecycle, from design, research and development, to deployment and governance. Building an ethical AI framework from Indigenous values territory involves not only values of relational accountability, cultural preservation, ecological stewardship, and recognition of the primacy of Indigenous knowledge systems and information sovereignty in respect of the development and deployment of complex systems and knowledge, it also validates critiques of how issues with AI ethics like bias, transparency and data sovereignty, can be viewed from an Indigenous perspective and provide just and equitable pathways and ongoing reconciliatory solutions. In this paper, case studies demonstrate the applied relevance of Indigenous knowledge for areas such as environmental observation, health cultures, and language revitalisation. To

conclude, this paper advocates for inclusive and participatory approaches that allow Indigenous communities to act as co-designers of ethical AI. I assert that integrating Indigenous values in AI ethics is an ethical responsibility, but also an opportunity to think about reimagining AI towards collective well-being and sustainability on the planet.

Keywords: AI, Indigenous Values, Ethical Frameworks, Reciprocity, Responsibility, Relationality

Introduction

The fast development of artificial intelligence technology offers hitherto unheard-of possibilities and problems that need careful ethical analysis to guarantee fair and responsible use (McLennan et al. 2020). Though most policies overlook the values and viewpoints of Indigenous people, ethical issues in AI development have become more and more important and should be included into the various cultural, social, and financial settings (Morley et al. 2021). This exclusion can lead to the development and deployment of AI that is culturally inappropriate, insensitive, and perpetuates exists biases and inequities, negating the potential of AI to benefit all members of society (Khan et al. 2022). Thus, the overall argument discussed in this paper is that designing and developing AI systems founded upon the Indigenous values of reciprocity, responsibility, and relationality, can lead to more ethically sound and culturally relevant AI development (Williams et al. 2022). In this case, reciprocity is a two-way exchange between humans and AI systems where AI is beneficial to all parties and not being exploitative or marginalizing (Ferrer et al. 2021). Responsibility puts emphasis on being accountable for the design, development, and deployment of AI with the intent to minimize harm and maximize positive outcomes for others today and in the future. Relationality highlights the interconnectedness of living beings and landscapes and will encourage the application of relationality in AI in a manner that respects and protects those relationships toward sustainability and ecological balance.

The paper addresses the existing ethical guidelines related to AI and their failures to directly address the specific challenges of Indigenous Communities. The proposed framework accounts for Indigenous values as part of the AI development life cycle - we call this "embedded ethics" in which ethical deliberation is active at the front-end (McLennan et al. 2022). In this paper we will explore the philosophical features of Indigenous values and how they are used in practice as part of an AI development endeavour. This perspective

would push the development of AI toward processes that would not only have advanced technological consideration but also sound ethical judgement, culturally sensitive engagement and a socially responsible approach to outcomes. We cannot ignore the considerations of bias and ethical implications of an AI system in terms of fair access, equity, and response to responsible technology use (Saheb & Saheb 2024). The paper will look at meaningful case studies where values from Indigenous Peoples developed technology, suggesting best practices and lessons learned. The intention of this research and engagement is to develop a more inclusive and ethical AI approach by introducing Indigenous values to a landscape that may be ethically practiced in recognizing cultural diversity, supporting social justice, and creating reciprocity in all engagement with communities.

Literature Review

Though a major gap still exists in addressing the ethical dimensions unique to different cultural settings, especially those of Indigenous people (Diantama 2023; Luengo-Oroz 2019; Saheb & Saheb 2024), the growing field of Artificial Intelligence ethics has seen a surge in rules and principles suggested by various organisations, governments, and technology companies (Diantama 2023). Western-centric values abound in current AI ethical models, which might not sufficiently address the particular needs, values, and worldviews of Indigenous peoples (Jobin et al. 2019). This disconnect can result in the creation and implementation of artificial intelligence systems unintentionally supporting historical injustices, cultural prejudices, and social inequalities these people experience. Rising AI applications have brought many advantages but also ethical questions including privacy violations, algorithmic discrimination, and openness problems (Barton & Pöppelbuß 2022; Corrêa et al. 2023). Indigenous people, where historical marginalisation and cultural disturbance make them especially vulnerable to the unintended consequences of artificial intelligence technologies, have these issues especially heightened.

Indigenous knowledge systems provide a strong basis for ethical artificial intelligence development that stresses community well-being, environmental sustainability, and cultural preservation by means of great insights into reciprocity, responsibility, and relationality. Including Indigenous values into AI ethics helps one to build not only highly technologically advanced but also culturally sensitive, socially conscious, and in line with justice and equity AI systems. This calls for a more complex and context-specific approach that acknowledges the diversity of Indigenous cultures and their special contributions to ethical AI development instead of a one-size-fits-all one. The present dominant neo-liberal democratic

and late-capitalist setting of artificial intelligence technology calls for a more comprehensive analysis of its consequences, so guiding the evaluation of AI with well defined ethical principles and strong consensus (Raquib et al. 2022).

Given its extensive use in many applications, the study of AI ethics is vital; some studies indicate that ethical values, including respect for autonomy, prevention of harm, justice, explicability, and privacy, are routinely neglected in AI development and deployment (Amedior 2023; Borenstein & Howard 2020; McLennan et al. 2022). Beyond service-oriented public values, the idea of AI ethics has changed to reflect concerns of human rights and cultural legacy, so addressing the wide society effects of AI systems (Aizenberg & Hoven 2020). Better AI governance can result from the development of comprehensive impact assessment systems and machine ethics (Chen et al. 2023). The growing use of artificial intelligence in fields directly affecting Indigenous people, including natural resource management, healthcare, education, and cultural preservation, highlights even more the urgency of this research (Schultz & Seele 2022). Ignoring Indigenous values into these artificial intelligence systems runs the danger of aggravating already existing disparities and compromising Indigenous peoples' autonomy. Thus, this study aims to close the gap between mainstream AI ethics and Indigenous knowledge systems by suggesting a framework that supports the creation of technologically advanced AI solutions grounded in Indigenous values, so bridging the two.

Methodology

Using Indigenous epistemologies as a theoretical framework, especially with regard to reciprocity, responsibility, and relationality—as fundamental ethical constructions—this study follows Inspired by works challenging Western-centric AI models, the approach is conceptual rather than empirical, seeking to synthesise current research on Indigenous knowledge systems and ethical artificial intelligence. Reorients it through an Indigenous lens to suggest a whole ethical framework for AI development, building on the "embedded ethics" approach as discussed by McLennan et al. (2022). Decolonial theory and relational ethics inform this conceptual investigation, which emphasises the need of community, land-based knowledge, and non-anthropocentric values in the development and governance of AI technologies. This approach actively interacts with scholarly literature, case studies, and Indigenous philosophical traditions rather than data collecting to build a normative framework that might direct ethical artificial intelligence methods. It uses thematic study of current frameworks and narratives about artificial intelligence ethics to find epistemic

gaps where Indigenous values might provide transforming insights. Indigenous worldviews are not only necessary for reimagining ethical AI systems but also central in this theoretical synthesis rather than as additional tool. By means of this literature-based, values-driven approach, the research adds to a growing conversation aiming at decentralising prevailing paradigms and advancing ethically grounded, socially conscious, and ecologically conscious methods of artificial intelligence ethics.

Reciprocity, Responsibility, and Relationality

Indigenous values of reciprocity, responsibility and relationality provide a fuller ethical foundation for AI design and development. At the centre of reciprocity is the principle of balanced exchange or mutual benefit (Jain 2010). In this case, AI systems should also incorporate give-back to the community that either the data is extracted from, or the community the AI system is intended to provide a service to, thus creating a sense of mutual benefit or respect (Hoorfar & Ilten 2021).

Responsibility is more than accountability; this also includes moral obligation to do what is best for others and the environment. Developers, actors, policy makers, and users of AI should consider their position in the ethical discipline AI in ensuring that the AI system is not used unethically and does not cause harm or injustice (Stahl & Eke 2023). Finally, relationality emphasizes a belief in the interconnectedness of all things. The familiarity with Indigenous approach to relationality allows for the creation of relational governance framework as an alternative to the individualistic and anthropocentric biases (often admitted into Western AI ethics), while recognizing our relationships and responsibilities to each other, to living things, and to the natural world. In convergence, these principles provide a framework that puts community well-being, environmental sustainability, and cultural continuity at the forefront. We can design, develop, and implement AI systems that are innovative, ethical, and socially responsible, by designing these principles and values.

Incorporating Indigenous Knowledge into AI Development

Incorporating Indigenous knowledge into AI design and development requires a multilayered approach that honors the rights of Indigenous communities and their integrity as independent peoples. The design needs a process of authentic consultation and collaboration, so Indigenous perspectives are not only mingled but valued throughout the full AI life cycle, from the design stage, through development and deployment, to evaluation (Hernández 2024). At the core of this is recognition of Indigenous data sovereignty, which

identifies that Indigenous people have the rights to own, control, access and possess their own data in relation to their people, culture and territory. The longer-term (200-year) goal is to establish data governance frameworks that are appropriate for the Indigenous peoples and community to ensure their data is only used in ways that benefit them, and are in accordance with their values and priorities. Further, AI developers/manufacturers need to be trained on Indigenous cultures, histories, and worldviews - appropriate because it takes into account the nuances and complexities that exist in Indigenous knowledge systems and spaces, both prior to and in addition to satisfying the risks and harms that will occur relating to stereotypes and cultural harm. Ultimately, the aim is to engage with Indigenous communities through respect, genuine partnership, and commitment to their rights, in order to utilize the potential of AI to respect for Indigenous self-determination, culture, and sustainability.

Integrating Indigenous Knowledge in Ethical AI Frameworks

Since indigenous knowledge is intrinsically relational and stresses the interdependence of all living entities and the surroundings. This relational view offers a more complete approach to artificial intelligence ethics that takes into account the wider ecological and social effects of AI systems, so contrasting sharply with the individualistic and anthropocentric viewpoints sometimes ingrained in Western ethical systems. Indigenous values of reciprocity, responsibility, and relationality provide a complete paradigm for directing the ethical evolution and application of artificial intelligence. Emphasising the value of mutual exchange and balance in relationships, reciprocity highlights how AI systems should not only help their creators but also improve the welfare of the communities they service.

Responsibility draws attention to the responsibilities of artificial intelligence users and creators to guarantee that their systems are applied in ethical, sustainable, and respectful of cultural values. Emphasising the interdependence of all things, relativism supports artificial intelligence systems that support good interactions between people, technology, and the environment. Concerns about the effects of artificial intelligence on important systems—including financial, governmental, legal, educational, and diverse knowledge systems—are growing (Gluckman & Sridhar, 2024) thus a thorough framework for AI ethics is increasingly necessary.

When establishing ethical frameworks for AI, it is necessary to include the collaborative aspect of humans and AI agents; therefore, the ethical dimensions not only lie with agents acting independently,

but also with the ethical duties that arise as a result of their collaboration with one another (Cañas 2022). There is an expressed need for future AI developers and other stakeholders to be educated on the ethical implications of AI to acknowledge their responsibilities and obligations to reduce the possible harms and increase the benefits of AI (Borenstein & Howard 2020). Furthermore, the issue of biases also appears to originate from human fallibility as human beings are responsible for the design and use of AI, which, as Borenstein & Howard mention, should be addressed so that AI systems do not reinforce any societal inequalities present in humans (Borenstein & Howard 2020). This is especially important because with the incorporation of these Indigenous values; AI can be developed to achieve social justice, environmental sustainability, and cultural preservation, while aligning with the objectives of ethical AI development.

Including Indigenous values into artificial intelligence ethics calls for a cooperative and inclusive strategy involving Indigenous people, artificial intelligence developers, legislators, and scholars. Respect, trust, and mutual understanding must form the foundation of this cooperation so that Indigenous voices take front stage throughout the development process. Honouring Indigenous data sovereignty—that which upholds the right of Indigenous people to control the gathering, use, and distribution of data concerning their lands, resources, and cultures—is a fundamental component. Although developers and users usually control AI systems, as autonomy rises ethical responsibility in their design and implementation becomes more important (Dignum 2017). Essential are clear policies for data governance, privacy, and security as well as for acquiring free, prior, and informed permission. Furthermore, inclusive design approaches that give Indigenous viewpoints top priority help to guarantee that AI technologies are useful, culturally appropriate, and accessible (Abujaber& Nashwan 2024). In the end, encouraging varied and cooperative teams will help to reduce bias and include more of a range of viewpoints into AI systems (Araujo et al. 2020).

Addressing Bias and Ensuring Fairness in AI Systems

A major ethical issue in artificial intelligence systems is bias, which can result in discriminating results and upholds of current inequality (Resnik & Hosseini 2024; Sreerama& Krishnamoorthy 2022). Data-learning artificial intelligence systems amplify and replicate biases in the data that arise (Gurevich et al., 2022). This is especially troublesome in sectors like education and healthcare where biased AI systems can profoundly affect people and communities (Harry & Sayudin 2023; Ueda et al. 2023). Addressing the underlying

causes of bias in data collecting, algorithm design, and model evaluation will help to minimise bias and guarantee justice in artificial intelligence systems (Leavy et al. 2020). Many times, developed on non-representative samples and evaluated based on limited criteria, artificial intelligence algorithms create difficulties ensuring that biomedical AI benefits different populations (Zou & Schiebinger 2021). Biassed data (Gichoya et al. 2023) is one of the main causes of bias in artificial intelligence systems. Since historical data often reflects current society prejudices, artificial intelligence systems learn and spread these prejudices as well. Data used in artificial intelligence research should guarantee privacy as well as economic and environmental sustainability of the algorithms depending on it (Kusters et al. 2020). Carefully curating and preprocessing data will help to remove or minimise biases, so addressing this problem. To guarantee that the data is representative of the population it is meant to serve, this can call for methods including data augmentation, re-weighting, or sampling. Furthermore, one should be aware of the possibility of sampling bias, in which case the data used to train an artificial intelligence system is not reflective of the population it will be used to make decisions concerning (Chenais et al. 2022). Furthermore, contributing to unfair results in AI systems is algorithmic bias. This can happen when certain groups are favoured over others in the design of the algorithms meant for training the AI system. Using transparent, explainable AI models that let developers know how the AI system is making decisions helps to reduce algorithmic bias.

Explainable AI methods can assist in the identification and reduction of AI system prejudices, so guaranteeing their fairness and equity (Ferrara 2023). Moreover, it is crucial to assess artificial intelligence systems with criteria sensitive to justice and equity, such demographic parity and diverse impact analysis. Carefully addressing these ethical issues will help to create artificial intelligence systems that advance justice, equity, and fairness as well as benefit society.

From data collecting to model deployment, mitigating strategies must be carried out at several phases of the artificial intelligence pipeline addressing algorithms, data, and human decisions (Ferrara 2023). An active area of research, defining, spotting, measuring, and reducing bias in artificial intelligence systems is absolutely vital (Srinivasan & Chander 2021). Important mitigating techniques that help to create an inclusive and fair AI ecosystem are transparent model development processes and algorithmic auditing.

Transparency, Accountability, and Ethical Guidelines in AI Development

Ethical development of artificial intelligence depends critically on openness and responsibility. Transparency in artificial intelligence refers to the degree to which human understanding and explainability of the AI system's decision-making procedures match (Dhopte&Bagde 2023). This covers sharing of details on the algorithms applied in decision-making, the data used to train the artificial intelligence system, and the evaluation standards applied to assess system performance. Conversely, accountability describes the systems in place to guarantee that artificial intelligence systems are used responsibly and that damage results (Cheong 2024). Building confidence and guaranteeing that artificial intelligence systems are applied in line with human values depend on transparency in AI systems. By offering insights into how the AI system is making decisions, explainable artificial intelligence methods can help to increase transparency of AI systems. It helps academics to better grasp the logic behind AI outputs, so enabling the identification of mistakes and inadvertent prejudices (Pagano et al. 2022). Transparency is a crucial AI quality that can help to build human trust in AI by means of which development of Apart from openness and responsibility, ethical rules are also indispensable for the growth of responsible artificial intelligence. Human rights ideas should form the foundation of these rules, which should also cover non-discrimination, privacy, and security.

Ensuring that artificial intelligence systems follow ethical norms calls for legislative projects and governance structures (Petković2023). Transparency and responsibility in the development and implementation of AI systems should be guaranteed by AI government (Hate 2024). While workflow transparency in training, testing, and evaluation is vital for reproducibility, interpretability, explainability, and responsibility define the trustworthiness of AI systems (Baradwaj et al. 2024). By revealing information including the design goals, data sources, hardware needs, and expected usage (Li et al. 2021), transparency should be kept all through the lifetime of an artificial intelligence system.

Transparency can improve human agency and help users to develop suitable degrees of trust. By means of data collecting, processing, model building, training, fine-tuning, evaluation, and deployment—that is, by means of transparency—documentation can realise it is imperative to define unambiguous lines of responsibility and channels of redress when artificial intelligence systems inflict damage (Manning et al. 2022; Vakkiri et al. 2019). Mechanisms for tracking and auditing artificial intelligence systems

help to guarantee that they are running as expected and that they are not generating negative effects. Transparency helps institutions build trust by which to encourage a favourable environment for the integration of artificial intelligence (D'Souza et al. 2024). Another important value is truthfulness, which guarantees that artificial intelligence technologies give consistent knowledge and do not mislead consumers (Corrêa et al.2023). By offering understanding of the operation of the system, openness can foster acceptance and trust.

Explainable AI and Interpretability Techniques

Understanding how artificial intelligence systems decide depends on explainable artificial intelligence and interpretability strategies (Warner & Sloan 2021). Explainable artificial intelligence (Lima et al. 2022) is the application of techniques and approaches meant to increase human understanding of AI systems by means of their transparency. Conversely, interpretability is the degree to which an artificial intelligence system's decision can be understood by a human. These are especially crucial in high-stakes applications where artificial intelligence systems are applied to make decisions having a major influence on individuals' life.

By revealing the rationale behind AI decisions, explainable artificial intelligence methods can help to detect possible biases and mistakes. While interpretation relates to the capacity to give significant explanations for the AI model's predictions and behaviour, explainability is the degree to which humans can grasp the decision-making process of an AI model (Muhammad &Bendechache 2024). Explainable artificial intelligence also advances human understanding, confidence in decision making, and fair and objective decisions (Das & Rad 2020). Moreover, interpretability and explainability are absolutely essential to ensure that artificial intelligence systems match ethical standards, legal requirements, and society values (Zhang et al. 2022). By increasing the openness of healthcare algorithms, explainable artificial intelligence helps doctors to trust in their decision-making procedures (Muhammad &Bendechache 2024). Additionally seen as a means of safeguarding patient safety and guaranteeing professional responsibility is explainable artificial intelligence (Sendak et al. 2019). When artificial intelligence lacks explainability in clinical decision support systems, it can endanger fundamental ethical values in medicine and maybe have negative effects on public and individual health (Amann et al. 2020).

A step towards trustworthy AI, explainable artificial intelligence has

the ability to solve problems with lack of openness and can help to overcome from a medical perspective, it is imperative to distinguish between knowledge of how the system reaches conclusions and clarifying the training process that helps the system to learn and generate outputs (Jeyaraman et al. 2023). By offering clear, understandable insights into how an AI model gets at conclusions, explainable artificial intelligence helps users trust and validate results (Muhammad & Bendechache 2024). The capacity of a human to grasp the link between the features acquired by an artificial intelligence program and its predictions defines AI interpretability (Reyes et al. 2020).

Explainable artificial intelligence is crucial in the healthcare sector, for instance, to confirm that machine learning models are trained properly and that the parameters they depend on match the knowledge of medical professionals (Sadeghi et al. 2023). Systems audits and model troubleshooting benefit from explainability techniques, which also help to either increase model performance or find common failure modes or biases (Ghassemi et al. 2021). Either considering models that are naturally interpretable or post hoc "explainability" techniques that can be applied to black-box models, one can reach model interpretability (Bobadilla et al. 2024).

Discussion

Speak about Western philosophical traditions have mostly shaped the debate on artificial intelligence ethics, sometimes excluding the unique ethical systems found in Indigenous civilisations. Though vital, conventional artificial intelligence ethics models often centre on ideas like justice, openness, and responsibility, which do not always fit the overall, community-centred values of Indigenous people. The values underline the need of combining efforts on guideline-development with thorough ethical analysis and suitable application plans (Jobin et al. 2019). Many Indigenous worldviews centre reciprocity, responsibility, and relationality—which emphasises how closely people, environment, and technology interact. In Indigenous context, reciprocity emphasises a balanced and mutually beneficial relationship between people and the environment as well as among individuals and communities, transcending simple transactional interactions.

Deeply ingrained in Indigenous cultures, responsibility goes beyond personal accountability to include group responsibility for the welfare of present and future generations, so requiring a long-term view in the decision-making process on artificial intelligence development

(Weber-Lewerenz, 201). Relationality emphasises the interdependence of all living entities and the surroundings, so fostering a whole awareness of the effects of technology on ecosystems and societies. Including these values into artificial intelligence development calls for a change from a merely anthropocentric (human-centred) perspective to one that recognises the intrinsic worth of the surroundings and the need of preserving harmonic interactions with them.

An “embedded ethics” approach—that which suggests that ethical issues should be included into every phase of the AI lifecycle—from design and development to deployment and evaluation—is suggested in order to properly include Indigenous values into AI development. Engaging Indigenous people in the AI development process will help to guarantee that their knowledge, values, and viewpoints will be fundamental in determining the technology. Grounding such participation in free, prior, and informed consent will help to guarantee that Indigenous people have the right to participate in decisions impacting their territory and way of life. Moreover, it calls for the formation of multidisciplinary teams comprising Indigenous knowledge holders, ethicists, artificial intelligence developers, and legislators so promoting a cooperative environment where many points of view may be shared and combined. Including Indigenous people in the design and development of artificial intelligence will help researchers and developers to guarantee that the technologies are culturally appropriate, socially conscious, and fit for community needs and aspirations (Hedges et al. 2020).

Case studies emphasising effective partnerships between Indigenous people and technology developers help to show the pragmatic application of Indigenous values in artificial intelligence development. For environmental monitoring, for example, AI-powered tools under development in collaboration with Indigenous people track changes in ecosystems, monitor biodiversity, and identify pollution (Dignum 2017). By combining modern sensing technologies with traditional ecological knowledge, these tools offer a more complete and complex view of environmental changes. AI is helping remote Indigenous people have access to culturally relevant healthcare services in the healthcare industry. In another context, AI-driven translating tools are under development to support cultural continuity and intergenerational knowledge transfer by means of preservation and revitalisation of Indigenous languages.

Ethical issues remain formidable challenges. As artificial intelligence systems become more commonplace, issues surrounding data security, algorithmic bias, and discrimination against marginalized

groups need to be considered (e.g., Indigenous communities) and addressed, as well as developing solutions for the digital divide to ensure that Indigenous communities have equitable access to the tools and the accessibility of the technological infrastructure to participate in the digital economy. Policy solutions, ethical frameworks and aspects for and with communities should be developed with an understanding that artificial intelligence may exacerbate existing inequities, and efforts should be made to mitigate the risks (Ochasi et al. 2024). While it is important to develop AI applications geared for areas of health within populations contending with inadequate healthcare provision, exploring the potential of AI in creating pathways for frontline workers in the Global South, as well as how best to develop designs for disadvantaged populations remains important (Okolo 2022). Furthermore, the predominance of Western languages by artificial intelligence can marginalise non-dominant languages, so reducing the availability of instructional materials to speakers of Indigenous languages (Nyaaba et al. 2024). AI's effects on education, teaching, and learning imply that in the next few years it will transform learning, instruction, and instruction (Gudonienė et al. 2023). These instruments should also be tailored to the particular cultural settings and learning styles of Indigenous people so that technology improves rather than compromises cultural identity and traditional knowledge systems. These tools have to be tailored to the particular cultural settings and learning styles of Indigenous people so that technology improves rather than compromises traditional knowledge systems and cultural identity.

The ethical evolution of artificial intelligence ultimately calls for Indigenous people, researchers, developers, and legislators to commit themselves to continuous communication, cooperation, and mutual learning (Jeyaraman et al. 2023). Maintaining their accuracy, relevance, and alignment with changing educational goals calls for ongoing algorithm monitoring and update as well (Joshi 2023). Adopting a comprehensive, inclusive, and ethical attitude will help us to use artificial intelligence to produce a more fair, equitable, and sustainable planet for all (Allam et al. 2023). Developing ethical frameworks for artificial intelligence must thus address the possible prejudices and injustices these technologies could cause (Ayana et al. 2023). To guarantee that artificial intelligence systems are applied in ways that support justice and fairness, this calls on a dedication to openness, responsibility, and continuous evaluation (Ishengoma 2022; McKay & Macomber 2021; Roshanaei et al. 2023; Shuaib 2024). Incorporating ethical values including beneficence, justice/fairness, non-maleficence and autonomy, AI systems should

be developed and applied for the good of mankind (Kaas 2024). Embedding these values into artificial intelligence development will help us to guarantee that these technologies are applied in ways that support human flourishing and respect of all cultures.

Case Studies Examples

Many students have not been able to profit from technology due to the digital divide and current inequality (Bulathwela et al. 2024). Globally, AI education has to be facilitated to guarantee inclusiveness and equity; locally contextualised to assure sensitivity to the needs of people of all ages, genders, races and cultures (Samuel et al. 2023). Particularly in regard to justice, responsibility, transparency, bias, autonomy, agency, and inclusion, the flood of artificial intelligence systems in educational settings begs serious ethical questions (Holmes et al. 2021). By bridging access and resources, especially in underdeveloped areas, artificial intelligence has the potential to democratise education (Leon 2024). AI can enable customised learning experiences that fit different learning styles and speeds by using a student-centric approach and customising instructional content to meet individual needs. It can, for instance, give teachers data-driven insights, automated administrative tasks, and tailored learning opportunities. By means of tailored curricula, adaptive assessments, and real-time feedback, AI-driven platforms can be made to provide each student with focused support and direction. AI systems can find learning gaps, project academic results, and suggest suitable interventions by means of extensive databases of student performance. Driven by artificial intelligence, personalised learning platforms can change to fit particular student requirements and provide tailored support and paths of learning. Carefully introduced to teachers and students, the AI-driven personalised learning experiences and automated assessment systems must be Based on student performance, adaptive learning systems can change the pace and content of instruction, so offering individualised support and remedial action. These systems guarantee that students get focused support by means of real-time feedback and tailored instruction, so addressing various learning styles. By means of personalised recommendations and resources, AI-driven platforms can examine student data to pinpoint areas of struggle and so promote equity in learning outcomes (Roshanaei et al. 2023). By means of AI-driven platforms, student learning can also be evaluated and feedback given, so

freeing teachers' time for more personalised instruction (Kamalov & Gurri 2023). AI can, for example, create customised quizzes and assignments, assess student work, and offer comments, so freeing teachers to concentrate on more difficult chores including mentoring and facilitating debates.

Current AI ethics frameworks

Individual rights and autonomy are sometimes given top priority in current systems, which might not entirely fit Indigenous values stressing group well-being and connectivity. Therefore, ethical frameworks for AI must be adjusted to the particular cultural settings and values of Indigenous people, so guaranteeing that these technologies are used in ways that support cultural preservation, social justice, and community empowerment. It also implies a need of caution regarding the design and execution of these systems. Usually emphasising justice, openness, and responsibility, current artificial intelligence ethics models also These ideas might not, however, adequately address the particular ethical issues that arise in Indigenous settings, such the possibility for artificial intelligence to support historical injustices, compromise cultural sovereignty, or aggravate already-existing inequality. Therefore, ethical models for artificial intelligence have to be anchored in Indigenous values including reciprocity, respect, and responsibility (Akgün & Greenhow 2021).

Moving Beyond Current Ethical Frameworks

Existing ethical frameworks quantify the varied needs and values of Indigenous communities in the context of artificial intelligence, but they often lack the ability to fully account for the unique conditions and values of Indigenous people. Ethical frameworks for artificial intelligence based on Indigenous values of reciprocity, responsibility, and relationality require attention to some important issues. Indigenous knowledge systems are not just data but form the core of all ethical artificial intelligence development and deployment. Ethical frameworks for artificial intelligence should include actionable recommendations to the idealistic ethical principles unjust altogether ignore. Indigenous perspectives and ethical considerations should be integrated into as many stages of the artificial intelligence lifecycle (designing, developing, deploying, and evaluating) as feasible along the steps. Together with Indigenous knowledge and insights, artificial intelligence can become more culturally responsive, socially just, and environmentally sustainable.

Indigenous communities need to be given an important voice in the design, development, and governance of AI systems that impact

their lives. These considerations are some of the elements of a comprehensive approach to ethical AI development that included AI ethics addressing issues raised by new digital technologies (AI, Big Data analytics, and blockchain technologies) (Kazim & Koshiyama 2021). These elements are key to moving toward important practices of acknowledging and addressing ethics throughout the lifecycle of AI. It is vital to build transparency and accountability into the AI lifecycle, and mechanisms to monitor and assess AI systems for their impact on Indigenous communities. For AI practices to be considered responsible, developers and organizations must operate within defined ethical guidelines and principles (Leslie 2019). Ethical AI can only be developed with partnerships between Indigenous communities, AI developers, policymakers, and others.

For AI systems to be aligned with Indigenous values, developers must properly consult Indigenous communities and include their perspectives in the design process. Organizations may use the framework to develop and implement practices for how they might use AI in a socially and ethically responsible way (Mäntymäki et al. 2022). Special emphasis should be placed on human-centred design methods that contemplate the compound effects of different AI forms (Hernández 2024). An ethical impact assessment before the introduction of an AI system can help avoid unintended and unforeseen risks or costs (Hernández 2024). Organizations should invest in educational and training programs aimed at closing the gap in digital literacy while also ensuring that Indigenous communities and individuals engage with AI technologies at their own discretion (Okolo 2020). These educational and workforce initiatives can support responsible AI innovation and development. The overarching belief is that if AI is developed safely and responsibly, it can have a positive impact on society; however, this will depend on a regulatory system that allows for ongoing responsiveness and promotes innovation, while allowing companies to stay engaged in assurance of their AI developments (Walsh 2019).

Including indigenous values into artificial intelligence ethics calls for confronting prejudices and advancing fairness in AI algorithms (Abujaber & Nashwan 2024). AI algorithms ought to be assessed for fairness and prejudices; hence, actions should be done to minimise any discriminating consequences (Hernández 2024). This could call for using different datasets, applying fairness-aware machine learning methods, and always watching AI systems for bias following deployment. Clear lines of responsibility for the development and implementation of artificial intelligence systems—including systems for redress when AI-related damage results—must be established by companies. Institutions can guarantee responsible AI practices

and reduce possible risks connected with artificial intelligence technologies by defining explicit procedures and guidelines. Maintaining openness and responsibility also depends on open channels for reporting and handling ethical issues about artificial intelligence systems. Furthermore, the focus should be on building artificial intelligence systems that enhance human capacities and advance cooperation between people and robots. Dealing with the ethical issues raised by artificial intelligence calls for a proactive strategy including ethical considerations all through the development process (McLennan et al. 2020). The transforming possibilities of artificial intelligence call for a thorough approach to ethical issues including addressing problems with data privacy, algorithm bias, and possible job displacement (Khan et al. 2022; Lu et al. 2022). It also advocates more money for multidisciplinary research on the moral, legal, and social ramifications of artificial intelligence (Farhud&Zokaei 2021; Ferrer et al. 2021; Singh 2024; Stahl & Eke 2023).

In the final analysis, it is about making policies, creating laws, and activating other directions to help foster responsible AI development. AI systems will need to be developed to protect individual privacy and data security while recognizing the collectivity of interests in Indigenous communities. Companies should focus on developing AI based on the things that reflect diversity, inclusion, and cultural awareness, to ensure that AI benefits society as a collective. To truly promote the responsible use of AI, organizations should focus on using a proactive approach, like embedding ethical thinking into the design and development of the pieces of AI from the start, while anticipating ethically salient challenges that may continue to arise throughout any phase (McLennan et al. 2022). Organizations should also create strategies to ensure privacy-preserving technologies and data governance systems limit the potential risks associated with breaches and subsequent unauthorized access to sensitive information. Further, the kinds of AI systems development have evolved from machine-learning to neural networking to natural language processing regimes, which is being applied at critical mass levels across various fields and domains (Saheb & Saheb 2024).

The creation of strong regulatory frameworks and ethical guidelines is essential to support appropriate AI innovation and AI deployment (Sharma 2024). It involves taking next steps that are ethically appropriate to help with successful long-term use of AI technologies (Barton & Pöppelbuß 2022). In doing so, it is of course important to

ensure transparency and accountability in decision-making with AI and for ensuring the respect for human rights and dignity (Araujo et al. 2020). While addressing ethical issues of AI it is important to take a proactive approach that includes ethical issues through the entire development journey. This requires a commitment to working across boundaries between teams and, importantly, developing the bonds between teams and ensuring the connections involve technical teams, legal experts, ethicists, and business stakeholders. All of these stakeholders need to be a commitment to ethical principles and regulatory frameworks in AI to ensure that AI technologies are developed and used ethically and in compliance with the law (Camilleri 2023). To achieve these objectives as a sector will require the efforts of the global community including governments, international organisations and civil society.

Challenges and Future Directions

Although the need of including Indigenous values into the ethics of artificial intelligence is becoming more and more evident, putting these values into use still presents difficulty. Though there are many difficulties, two particularly important ones are the lack of consistent policies and methods to better grasp the ethical implications of artificial intelligence on Indigenous people and making sure Indigenous people have sufficient means and capacity to participate fully in AI governance and decision-making. One way could be a participatory design approach whereby end users—among other stakeholders—actively help to create artificial intelligence systems (Hernández 2024). It gives end users agency, reflects several points of view, builds acceptance and trust, and so helps them (Stahl & Eke 2023). One approach proposed would have artificial intelligence models constantly changing to precisely remain of human value. Regarding AI ethics, the goal of the future is to realise Indigenous values in the design, development, and implementation of AI by means of a meaningful reconciliation between principles and practices, so fostering actionable practices.

Conclusion

In conclusion, our investigation of ethical frameworks for AI that is rooted in Indigenous values provides a path forward for responsible innovation. By embracing reciprocity, responsibility, and relationality as key principles to forge a different AI future, we do more than to respect Indigenous rights and cultures; we also contribute to a tech

society that is more fair, accessible, and sustainable. We must address the potential impacts of AI compounding existing inequities, and mitigate these risks by enacting actual policies and ethical frameworks and community-led solutions. At the end of the day, ethical AI requires ongoing dialog, collaboration and shared learning with Indigenous communities, researchers, developers and policy makers. We need a multi-faceted approach that is grounded on Indigenous values and that reflects and continues to evolve through collective involvement to ensure AI empowers communities, preserves cultures and supports community's collective well-being.

References

Abujaber, AA, & Nashwan, A J (2024) Ethical framework for artificial intelligence in healthcare research: A path to integrity. In *World Journal of Methodology* 14 (3) . <https://doi.org/10.5662/wjm.v14.i3.94071>

Aizenberg, E, & Hoven, J van den. (2020) Designing for human rights in AI. *Big Data & Society* 7 (2) . <https://doi.org/10.1177/2053951720949566>

Akgün, S, & Greenhow, C (2021) Artificial intelligence in education: Addressing ethical challenges in K-12 settings [Review of Artificial intelligence in education: Addressing ethical challenges in K-12 settings]. *AI and Ethics* 2(3): 431. Springer Nature. <https://doi.org/10.1007/s43681-021-00096-7>

Allam, H, Dempere, J, Akre, V, & Flores, P (2023) Artificial Intelligence in Education (AIED): Implications and Challenges. In *Atlantis highlights in social sciences, education and humanities/Atlantis Highlights in Social Sciences, Education and Humanities* (p. 126). Atlantis Press. https://doi.org/10.2991/978-94-6463-286-6_10

Amann, J, Blasimme, A, Vayena, E, Frey, D, & Madai, V I (2020) Explainability for artificial intelligence in healthcare: a multidisciplinary perspective. *BMC Medical Informatics and Decision Making* 20(1). <https://doi.org/10.1186/s12911-020-01332-6>

Amedior, N C (2023) Ethical Implications of Artificial Intelligence in the Healthcare Sector. *Advances in Multidisciplinary & Scientific Research Journal Publication* 36 (1) .

<https://doi.org/10.22624/aims/accrabespoke2023p1>

Araujo, T, Helberger, N, Kruikemeier, S, & Vreese, C H de (2020) In AI we trust? Perceptions about automated decision-making by artificial intelligence. *AI & Society* 35(3):611. <https://doi.org/10.1007/s00146-019-00931-w>

Arnold, M, Bellamy, R, Hind, M, Houde, S, Mehta, S, Mojsilovic, A, Nair, R, Ramamurthy, K N, Reimer, D, Olteanu, A, Piorkowski, D, Tsay, J, & Varshney, K. R (2018) FactSheets: Increasing Trust in AI Services through Supplier's Declarations of Conformity. *arXiv* (Cornell University). <https://doi.org/10.48550/arxiv.1808.07261>

Ayana, G, Dese, K, Daba, H, Mellado, B, Badu, K., Yamba, E I, Faye, S L, Ondua, M, Nsagha, D S, Nkweteyim, D, & Kong, J D (2023) Decolonizing global AI governance: Assessment of the state of decolonized AI governance in Sub-Saharan Africa. *SSRN Electronic Journal*. <https://doi.org/10.2139/ssrn.4652444>

Baradwaj, S S, Gilliland, D G, Rincon, J, Hermjakob, H, Yan, Y, Adam, I, Lemaster, G, Wang, D, Watson, K E, Bui, A, Wang, W, & Ping, P (2024) Building an Ethical and Trustworthy Biomedical AI Ecosystem for the Translational and Clinical Integration of Foundational Models. *arXiv* (Cornell University). <https://doi.org/10.48550/arxiv.2408.01431>

Barton, M -C, &Pöppelbuß, J (2022). Prinzipien für die ethischeNutzungkünstlicherIntelligenz. *HMD Praxis Der Wirtschaftsinformatik* 59(2): 468. <https://doi.org/10.1365/s40702-022-00850-3>

Bobadilla, A V P, Schmitt, V, Maier, C S, Mensing, S, &Stodtmann, S (2024) Practical guide to SHAP analysis: Explaining supervised machine learning model predictions in drug development [Review of Practical guide to SHAP analysis: Explaining supervised machine learning model predictions in drug development]. *Clinical and Translational Science*, 17(11). Wiley. <https://doi.org/10.1111/cts.70056>

Borenstein, J, & Howard, A (2020) Emerging challenges in AI and the need for AI ethics education. *AI and Ethics*, 1(1): 61. <https://doi.org/10.1007/s43681-020-00002-7>

Bulathwela, S, Pérez□Ortiz, M, Holloway, C, Cukurova, M, & Shawe

Taylor, J (2024) Artificial Intelligence Alone Will Not Democratise Education: On Educational Inequality, Techno-Solutionism and Inclusive Tools. *Sustainability* 16(2):781. <https://doi.org/10.3390/su16020781>

Camilleri, M A (2023) Artificial intelligence governance: Ethical considerations and implications for social responsibility. *Expert Systems* 41(7). <https://doi.org/10.1111/exsy.13406>

Cañas, J J (2022) AI and Ethics When Human Beings Collaborate With AI Agents [Review of AI and Ethics When Human Beings Collaborate With AI Agents]. *Frontiers in Psychology*, 13. *Frontiers Media*. <https://doi.org/10.3389/fpsyg.2022.836650>

Chen, Y, Ahn, M J, & Wang, Y (2023) Artificial Intelligence and Public Values: Value Impacts and Governance in the Public Sector. *Sustainability* 15(6):4796. <https://doi.org/10.3390/su15064796>

Chenais, G, Lagarde, E, & Gil-Jardiné, C (2022) Artificial Intelligence in Emergency Medicine: Viewpoint of Current Applications and Foreseeable Opportunities and Challenges [Review of Artificial Intelligence in Emergency Medicine: Viewpoint of Current Applications and Foreseeable Opportunities and Challenges]. *Journal of Medical Internet Research* 25. *JMIR Publications*. <https://doi.org/10.2196/40031>

Cheong, B C (2024) Transparency and accountability in AI systems: safeguarding wellbeing in the age of algorithmic decision-making. *Frontiers in Human Dynamics* 6. <https://doi.org/10.3389/fhumd.2024.1421273>

Corrêa, N K, Galvão, ., Santos, J W., Pino, C D, Pinto, E P, Barbosa, C, Massmann, D, Mambrini, R, Galvão, L, Terem, E, & Oliveira, N de (2023) Worldwide AI ethics: A review of 200 guidelines and recommendations for AI governance [Review of Worldwide AI ethics: A review of 200 guidelines and recommendations for AI governance]. *Patterns* 4(10):100857. *Elsevier BV*. <https://doi.org/10.1016/j.patter.2023.100857>

D'Souza, R, Mathew, M, Mishra, V, & Surapaneni, K M (2024) Twelve tips for addressing ethical concerns in the implementation of artificial intelligence in medical education. *Medical Education Online* 29(1). <https://doi.org/10.1080/10872981.2024.2330250>

Das, A, & Rad, P (2020) Opportunities and Challenges in Explainable Artificial Intelligence (XAI): A Survey. arXiv (Cornell University). <https://doi.org/10.48550/arxiv.2006.11371>

Dhopte, A, & Bagde, H (2023) Smart Smile: Revolutionizing Dentistry With Artificial Intelligence [Review of Smart Smile: Revolutionizing Dentistry With Artificial Intelligence]. Cureus. Cureus, Inc. <https://doi.org/10.7759/cureus.41227>

Diantama, S (2023) Pemanfaatan Artificial Intelegent (AI) Dalam Dunia Pendidikan. DEWANTECH Jurnal Teknologi Pendidikan 1(1):8. <https://doi.org/10.61434/dewantech.v1i1.8>

Dignum, V (2017) Responsible Autonomy. arXiv (Cornell University). <https://doi.org/10.48550/arxiv.1706.02513>

Farhud, D D, & Zokaei, S (2021) Ethical Issues of Artificial Intelligence in Medicine and Healthcare. In Iranian Journal of Public Health. Knowledge E. <https://doi.org/10.18502/ijph.v50i11.7600>

Ferrara, E (2023a) Fairness And Bias in Artificial Intelligence: A Brief Survey of Sources, Impacts, And Mitigation Strategies. arXiv (Cornell University). <https://doi.org/10.48550/arxiv.2304.07683>

Ferrara, E. (2023b) Fairness and Bias in Artificial Intelligence: A Brief Survey of Sources, Impacts, and Mitigation Strategies. Sci 6(1): 3. <https://doi.org/10.3390/sci6010003>

Ferrer, X, Nuenen, T van, Such, J M, Coté, M, & Criado, N (2021) Bias and Discrimination in AI: A Cross-Disciplinary Perspective. IEEE Technology and Society Magazine 40(2):72. <https://doi.org/10.1109/mts.2021.3056293>

Ghassemi, M, Oakden-Rayner, L, & Beam, A L (2021) The false hope of current approaches to explainable artificial intelligence in health care [Review of The false hope of current approaches to explainable artificial intelligence in health care]. The Lancet Digital Health 3(11). Elsevier BV. [https://doi.org/10.1016/s2589-7500\(21\)00208-9](https://doi.org/10.1016/s2589-7500(21)00208-9)

Gichoya, J W, Thomas, K J, Celi, L A, Safdar, N, Banerjee, I, Banja, J D, Seyyed-Kalantari, L, Trivedi, H, & Purkayastha, S (2023) AI pitfalls and what not to do: mitigating bias in AI [Review of AI pitfalls and what not to do: mitigating bias in AI]. British Journal of Radiology 96(1150). Wiley. <https://doi.org/10.1259/bjr.20230023>

Gluckman, P D, & Sridhar, H (2024) A guide for policy-makers: Evaluating rapidly developing technologies including AI, large language models and beyond. <https://doi.org/10.24948/2024.07>

Gudonienė, D, Stanevičienė, E Buksnaitis, V, & Daley, N (2023) The Scenarios of Artificial Intelligence and Wireframes Implementation in Engineering Education. *Sustainability* 15(8): 6850. <https://doi.org/10.3390/su15086850>

Gurevich, E, Hassan, B E, & Morr, C E (2022) Equity within AI systems: What can health leaders expect? *Healthcare Management Forum* 36(2):119. <https://doi.org/10.1177/08404704221125368>

Harry, A, & Sayudin, S (2023) Role of AI in Education. *Interdisciplinary Journal and Humanity (INJURY)* 2(3):260. <https://doi.org/10.58631/injury.v2i3.52>

Hate, C for C D (2024) The Double-Edged Sword of AI: How Generative Language Models Like Google Bard and ChatGPT Pose a Threat to Countering Hate and Misinformation Online. *Harvard Data Science Review*. <https://doi.org/10.1162/99608f92.be4e28f0>

Hedges, J, Garvey, G, Dodd, Z, Miller, W E, Dunbar, T, Leane, C, Mitchell, A, Hill, I, & Jamieson, L (2020) Engaging with Indigenous Australian communities for a human papilloma virus and oropharyngeal cancer project; use of the CONSIDER statement. *BMC Medical Research Methodology*, 20(1). <https://doi.org/10.1186/s12874-020-00981-5>

Hernández, E (2024) Towards an Ethical and Inclusive Implementation of Artificial Intelligence in Organizations: A Multidimensional Framework. *arXiv (Cornell University)*. <https://doi.org/10.48550/arxiv.2405.01697>

Holmes, W, Porayska, Pomsta, K, Holstein, K, Sutherland, E, Baker, T T, Shum, S B, Santos, O C, Rodrigo, Ma M T, Cukurova, M, Bittencourt, I I, & Koedinger, K R (2021) Ethics of AI in Education: Towards a Community-Wide Framework. *International Journal of Artificial Intelligence in Education* 32(3): 504. <https://doi.org/10.1007/s40593-021-00239-1>

Ishengoma, F (2022) Artificial Intelligence in Digital Health: Issues and Dimensions of Ethical Concerns. *Innovación y Software*, 3(1):81. <https://doi.org/10.48168/innosoft.s8.a48>

Jain, R K (2010) *Diaspora, Trans-Nation and Nation: Reflections from India*. *Sociological Bulletin*, 59(1): 3. <https://doi.org/10.1177/0038022920100101>

Jeyaraman, M, Balaji, S, Jeyaraman, N, & Yadav, S (2023) *Unraveling the Ethical Enigma: Artificial Intelligence in Healthcare [Review of Unraveling the Ethical Enigma: Artificial Intelligence in Healthcare]*. *Cureus*. *Cureus*, Inc. <https://doi.org/10.7759/cureus.43262>

Jobin, A, Ienca, M, & Vayena, E (2019) The global landscape of AI ethics guidelines. *Nature Machine Intelligence* 1(9):389. <https://doi.org/10.1038/s42256-019-0088-2>

Joshi, M (2023) *Adaptive Learning through Artificial Intelligence*. *SSRN Electronic Journal*. <https://doi.org/10.2139/ssrn.4514887>

Kaas, M H L (2024) The perfect technological storm: artificial intelligence and moral complacency. *Ethics and Information Technology* 26(3). <https://doi.org/10.1007/s10676-024-09788-0>

Kamalov, F, & Gurrib, I (2023) *New Era of Artificial Intelligence in Education: Towards a Sustainable Multifaceted Revolution*. *arXiv (Cornell University)*. <https://doi.org/10.48550/arxiv.2305.18303>

Kazim, E, & Koshiyama, A (2021) A high-level overview of AI ethics [Review of A high-level overview of AI ethics]. *Patterns* 2(9):100314. Elsevier BV. <https://doi.org/10.1016/j.patter.2021.100314>

Khan, A A., Badshah, S, Liang, P, Waseem, M, Khan, B, Ahmad, A, Fahmideh, M, Niazi, M, & Akbar, M A (2022) *Ethics of AI: A Systematic Literature Review of Principles and Challenges*. 383. <https://doi.org/10.1145/3530019.3531329>

Kusters, R, Misevic, D, Berry, H, Cully, A, Cunff, Y L, Dandoy, L, Díaz-Rodríguez, N, Ficher, M, Grizou, J, Othmani, A, Palpanas, T, Komorowski, M, Loiseau, P, Frier, C M, Nanini, S, Quercia, D, Sébag, M, Fogelman, F, Taleb, S, & Wehbi, F (2020) *Interdisciplinary Research in Artificial Intelligence: Challenges and Opportunities*. *Frontiers in Big Data*, 3. <https://doi.org/10.3389/fdata.2020.577974>

Leavy, S, O'Sullivan, B, & Σιαπέρα, E (2020) *Data, Power and Bias in Artificial Intelligence*. *arXiv (Cornell University)*. <https://doi.org/10.48550/arxiv.2008.07341>

Leon, Z C (2024) *Education and Artificial Intelligence: Revolutionizing Learning as a Unique Tandem*. *SSRN Electronic Journal*. <https://doi.org/10.2139/ssrn.4721768>

Leslie, D (2019) Understanding artificial intelligence ethics and safety. arXiv (Cornell University). <https://doi.org/10.48550/arxiv.1906.05684>

Li, B, Qi, P, Liu, B, Di, S, Liu, J, Pei, J, Yi, J, & Zhou, B (2021) Trustworthy AI: From Principles to Practices. arXiv (Cornell University). <https://doi.org/10.48550/arxiv.2110.01167>

Lima, G, Grgić-Hlača, N, Jeong, J K, & Cha, M (2022) The Conflict Between Explainable and Accountable Decision-Making Algorithms. 2022 ACM Conference on Fairness, Accountability, and Transparency, 2103. <https://doi.org/10.1145/3531146.3534628>

Lu, Q, Zhu, L, Xu, X, & Whittle, J (2022) Responsible-AI-by-Design: a Pattern Collection for Designing Responsible AI Systems. arXiv (Cornell University). <https://doi.org/10.48550/arxiv.2203.00905>

Luengo-Oroz, M (2019) Solidarity should be a core ethical principle of AI. *Nature Machine Intelligence* 1(11):494. <https://doi.org/10.1038/s42256-019-0115-3>

Manning, L, Brewer, S, Craigon, P J, Frey, J G, Gutiérrez, A, Jacobs, N, Kanza, S, Munday, S, Sacks, J, & Pearson, S (2022) Artificial intelligence and ethics within the food sector: Developing a common language for technology adoption across the supply chain. *Trends in Food Science & Technology*, 125(33). <https://doi.org/10.1016/j.tifs.2022.04.025>

Mäntymäki, M, Minkkinen, M, Birkstedt, T, & Viljanen, M (2022) Putting AI Ethics into Practice: The Hourglass Model of Organizational AI Governance. arXiv (Cornell University). <https://doi.org/10.48550/arxiv.2206.00335>

Markus, A F, Kors, J A, & Rijnbeek, P R (2020) The role of explainability in creating trustworthy artificial intelligence for health care: A comprehensive survey of the terminology, design choices, and evaluation strategies [Review of The role of explainability in creating trustworthy artificial intelligence for health care: A comprehensive survey of the terminology, design choices, and evaluation strategies]. *Journal of Biomedical Informatics* 113: 103655. Elsevier BV. <https://doi.org/10.1016/j.jbi.2020.103655>

McKay, C, & Macomber, G (2021) The Importance of Relationships in Education: Reflections of Current Educators. *Journal of Education* 203(4):751. <https://doi.org/10.1177/00220574211057044>

McLennan, S, Fiske, A, Celi, L A, Müller, R, Harder, J, Ritt, K, Haddadin, S, & Buys, A (2020) An embedded ethics approach for AI development. *Nature Machine Intelligence* 2(9):488.

<https://doi.org/10.1038/s42256-020-0214-1>

McLennan, S, Fiske, A, Tigard, D W, Müller, R, Haddadin, S, &Buyx, A (2022) Embedded ethics: a proposal for integrating ethics into the development of medical AI. *BMC Medical Ethics* 23(1). <https://doi.org/10.1186/s12910-022-00746-3>

Morley, J, Elhalal, A, Garcia, F, Kinsey, L, Mökander, J, &Floridi, L (2021) Ethics as a Service: A Pragmatic Operationalisation of AI Ethics. *Minds and Machines* 31(2): 239. <https://doi.org/10.1007/s11023-021-09563-w>

Muhammad, D, &Bendechache, M (2024) Unveiling the black box: A systematic review of Explainable Artificial Intelligence in medical image analysis [Review of Unveiling the black box: A systematic review of Explainable Artificial Intelligence in medical image analysis]. *Computational and Structural Biotechnology Journal* 24:542. Elsevier BV. <https://doi.org/10.1016/j.csbj.2024.08.005>

Nyaaba, M, Wright, AD, & Choi, G L (2024) Generative AI and Digital Neocolonialism in Global Education: Towards an Equitable Framework. *arXiv (Cornell University)*. <https://doi.org/10.48550/arxiv.2406.02966>

Ochasi, A, Mahamadou, A J D, & Altman, R B (2024) Justice in Healthcare Artificial Intelligence in Africa. *arXiv (Cornell University)*. <https://doi.org/10.48550/arxiv.2406.10653>

Okolo, C T (2020) AI in the “Real World”: Examining the Impact of AI Deployment in Low-Resource Contexts. *arXiv (Cornell University)*. <https://doi.org/10.48550/arxiv.2012.01165>

Okolo, C T (2022) Optimizing human-centered AI for healthcare in the Global South [Review of Optimizing human-centered AI for healthcare in the Global South]. *Patterns* 3(2):100421. Elsevier BV. <https://doi.org/10.1016/j.patter.2021.100421>

Pagano, T P, Loureiro, R B, Araujo, M M, Lisboa, F V N, Peixoto, R M, Guimaraes, G A de S, Santos, L L dos, Cruz, G O R, Oliveira, E L S de, Cruz, M A R da C e, Winkler, I, & Nascimento, E G S (2022) Bias and unfairness in machine learning models: a systematic literature review. *arXiv (Cornell University)*. <https://doi.org/10.48550/arxiv.2202.08176>

Petković, D (2023) It is Not “Accuracy vs. Explainability”—We Need

Both for Trustworthy AI Systems. *IEEE Transactions on Technology and Society* 4(1):46. <https://doi.org/10.1109/tts.2023.3239921>

Raquib, A, Channa, B, Zubair, T, & Qadir, J (2022) Islamic virtue-based ethics for artificial intelligence. *Discover Artificial Intelligence*, 2(1). <https://doi.org/10.1007/s44163-022-00028-2>

Resnik, D B, & Hosseini, M (2024) The ethics of using artificial intelligence in scientific research: new guidance needed for a new tool. *AI and Ethics*. <https://doi.org/10.1007/s43681-024-00493-8>

Reyes, M, Meier, R, Pereira, S, Silva, C A, Dahlweid, F-M, Tengg□Kobligh, H von, Summers, R M, & Wiest, R (2020) On the Interpretability of Artificial Intelligence in Radiology: Challenges and Opportunities [Review of On the Interpretability of Artificial Intelligence in Radiology: Challenges and Opportunities]. *Radiology Artificial Intelligence* 2(3). Radiological Society of North America. <https://doi.org/10.1148/ryai.2020190043>

Roshanaei, M, Olivares, H, & Lopez, R R (2023) Harnessing AI to Foster Equity in Education: Opportunities, Challenges, and Emerging Strategies. *Journal of Intelligent Learning Systems and Applications* 15(4):123. <https://doi.org/10.4236/jilsa.2023.154009>

Sadeghi, Z, Alizadehsani, R, Çifçi, M A, Kausar, S, Rehman, R, Mahanta, P, Bora, P K, Almasri, A., Alkhawaldeh, R S, Hussain, S, Alataş, B, Shoeibi, A, Moosaei, H, Hladík, M, Nahavandi, S, & Pardalo, P M (2023) A Brief Review of Explainable Artificial Intelligence in Healthcare [Review of A Brief Review of Explainable Artificial Intelligence in Healthcare]. <https://doi.org/10.2139/ssrn.4600029>

Saheb, T, & Saheb, T (2024) Mapping Ethical Artificial Intelligence Policy Landscape: A Mixed Method Analysis. *Science and Engineering Ethics* 30(2). <https://doi.org/10.1007/s11948-024-00472-6>

Samuel, Y, Brennan Tonetta, M, Samuel, J, Kashyap, R, Kumar, V, Kaashyap, S K, Chidipothu, N, Anand, I, & Jain, P (2023) Cultivation of human centered artificial intelligence: culturally adaptive thinking in education (CATE) for AI. *Frontiers in Artificial Intelligence* 6. <https://doi.org/10.3389/frai.2023.1198180>

Schultz, M D, & Seele, P (2022) Towards AI ethics' institutionalization: knowledge bridges from business ethics to advance organizational AI ethics. *AI and Ethics* 3(1):99. <https://doi.org/10.1007/s43681-022-00150-y>

Sendak, M, Elish, M C, Gao, M, Futoma, J, Ratliff, W, Nichols, M, Bedoya, A, Balu, S, & O'Brien, C (2019) "The Human Body is a Black Box": Supporting Clinical Decision-Making with Deep Learning. *arXiv* (Cornell University). <https://doi.org/10.48550/arxiv.1911.08089>

Sharma, N (2024) Artificial Intelligence: Legal Implications and Challenges. *Knowledgeable Research A Multidisciplinary Journal* 2(11):13. <https://doi.org/10.57067/220k4298>

Shuaib, A (2024) Transforming Healthcare with AI: Promises, Pitfalls, and Pathways Forward. *International Journal of General Medicine*, 1765. <https://doi.org/10.2147/ijgm.s449598>

Singh, D (2024) Navigating the Digital Age: Smart AI Ethics for Seamless Transformation. *International Journal of Advanced Research in Electrical Electronics and Instrumentation Engineering* 13(11). <https://doi.org/10.15662/ijareeie.2024.1311001>

Sreerama, J, & Krishnamoorthy, G (2022) Ethical Considerations in AI Addressing Bias and Fairness in Machine Learning Models. *Journal of Knowledge Learning and Science Technology* ISSN 2959-6386 (Online), 1(1), 130. <https://doi.org/10.60087/jklst.vol1.n1.p138>

Srinivasan, R, & Chander, A (2021) Biases in AI systems. *Communications of the ACM* 64(8):44. <https://doi.org/10.1145/3464903>

Stahl, B C, & Eke, D (2023) The ethics of ChatGPT – Exploring the ethical issues of an emerging technology. *International Journal of Information Management* 74:102700. <https://doi.org/10.1016/j.jinfomgt.2023.102700>

Ueda, D, Kakinuma, T, Fujita, S, Kamagata, K, Fushimi, Y, Ito, R, Matsui, Y, Nozaki, T, Nakaura, T, Fujima, N, Tatsugami, F, Yanagawa, M, Hirata, K, Yamada, A, Tsuboyama, T, Kawamura, M, Fujioka, T, & Naganawa, S (2023) Fairness of artificial intelligence in healthcare: review and recommendations [Review of Fairness of artificial intelligence in healthcare: review and recommendations]. *Japanese Journal of Radiology* 42(1):3. Springer Science+Business Media. <https://doi.org/10.1007/s11604-023-01474-3>

Vakkuri, V, Kemell, K, & Abrahamsson, P (2019) Implementing Ethics in AI: An industrial multiple case study. arXiv (Cornell University). <https://arxiv.org/pdf/1906.12307>

Walsh, T (2019) The effective and ethical development of artificial intelligence: an opportunity to improve our wellbeing. <https://apo.org.au/sites/default/files/resource-files/2019-07/apo-nid250306.pdf>

Warner, R, & Sloan, R H (2021) Making Artificial Intelligence Transparent: Fairness and the Problem of Proxy Variables. *Criminal Justice Ethics* 40 (1) : 23 . <https://doi.org/10.1080/0731129x.2021.1893932>

Weber-Lewerenz, B C (2021) Corporate digital responsibility (CDR) in construction engineering—ethical guidelines for the application of digital transformation and artificial intelligence (AI) in user practice. *SN Applied Sciences* 3(10). <https://doi.org/10.1007/s42452-021-04776-1>

Williams, R, Ali, S, Devasia, N, DiPaola, D, Hong, J, Kaputsos, S P, Jordan, B T, & Breazeal, C (2022) AI + Ethics Curricula for Middle School Youth: Lessons Learned from Three Project-Based Curricula. *International Journal of Artificial Intelligence in Education*, 33(2): 325. <https://doi.org/10.1007/s40593-022-00298-y>

Yu, L, Li, Y, & Fan, F (2023) Employees' Appraisals and Trust of Artificial Intelligences' Transparency and Opacity. *Behavioral Sciences* 13(4):344. <https://doi.org/10.3390/bs13040344>

Zhang, Z, Hamadi, H A, Damiani, E, Yeun, C Y, & Taher, F (2022) Explainable Artificial Intelligence Applications in Cyber Security: State-of-the-Art in Research. *IEEE Access*, 10, 93104. <https://doi.org/10.1109/access.2022.3204051>

Zou, J, & Schiebinger, L (2021) Ensuring that biomedical AI benefits diverse populations [Review of Ensuring that biomedical AI benefits diverse populations]. *EBioMedicine*, 67: 103358. Elsevier BV. <https://doi.org/10.1016/j.ebiom.2021.103358>

कला सोपान मल्टी डिस्प्लिनरी रिसर्च जर्नल

सदस्यता शुल्क

व्यक्तियों एवं संस्थानों के लिए For Individual / Institutions	प्रति अंक Per Issue	500/-
	वार्षिक शुल्क Annual Subscription	1800/-
विद्यार्थियों के लिए For Students	प्रति अंक Per Issue	450/-
	वार्षिक शुल्क Annual Subscription	1600/-

ग्राहक फॉर्म

सेवा में

अध्यक्ष कला सोपान,
38-सी, निजामपुर, बट्टी कुशवाहा की गली, गोरखपुर-273005
उत्तर प्रदेश (भारत)

महोदय

कृपया मुझे कला सोपान मल्टी डिस्प्लिनरी रिसर्च जर्नल (चातुर्मासिक शोध पत्रिका) का एक वर्ष पांच वर्ष के लिए.....
.....से ग्राहक बना लीजिये। मैं पत्रिका की वार्षिक सदस्यता शुल्क.....
रुपए कला सोपान, के पक्ष में, झाँसी स्थित अनुसूचित बैंक में देय डिमांड ड्राफ्ट संख्या/ऑनलाइन.....
दिनांक.....द्वारा भेज रहा हूँ/रही हूँ। कृपया पावती भिजवाएं।

नाम.....

पूरा पता.....

भवदीय

हस्ताक्षर

Fee Payment Detail -

Account Holder : Kala Sopan
Account Number : 41039820399
IFSC Code : SBIN0003808
Bank : State Bank of India
Branch : Bundelkhand University Jhansi

लेखकों के लिए दिशा-निर्देश

- शोध पत्रिका का उद्देश्य वर्तमान परिदृश्य में ललित कला, भाषा, मूलभूत विज्ञान, संचार, सामाजिक विज्ञान, मानविकी अध्ययन से संबंधित अन्तर अनुशासनात्मक संबंधी विषयों में नवाचार एवं अनुसंधान को बढ़ावा देना है।
- पत्रिका में प्रकाशन हेतु प्रेषित शोध पत्र मूल होना चाहिए और किसी अन्य पत्रिका में प्रकाशित नहीं होना चाहिए।
- लेखक को शोध पत्र के साथ घोषणा पत्र प्रस्तुत करना होगा, जिसमें स्पष्ट रूप से उल्लेख करना होगा कि शोध पत्र उनका मौलिक लेखन है और प्रकाशन के लिए अन्य को प्रस्तुत नहीं किया गया है। बेहतर होगा कि शोध पत्र लेखक अपने शोध आलेख के संबंध में प्लेगेरिज्म (Plagiarism) रिपोर्ट संलग्न कर प्रेषित करें।
- लेखकों को अपना आलेख निम्न प्रारूप में प्रस्तुत करना होगा :—
 - » शोध सारांश, प्रमुख शब्द, परिचय, शोध साहित्य की समीक्षा, शोध उद्देश्य, परिकल्पनाएं, शोध प्रविधि तालिकाएं, एवं ग्राफ परिणाम एवं विवेचना निष्कर्ष एवं संदर्भ सूची ।
 - » शोध पत्र एम. एस. वर्ड, पेपर साइज ए-4, फॉन्ट कृतिदेव 010/ Times New Roman/ यूनिकोड, फॉन्ट साइज 12 मेटर 1.5 मार्जिन स्पेस एवं जस्टीफाईड होना चाहिए और अपने शोध आलेख को ई-मेल: kalasopan@gmail-com प्रेषित करना होगा।
 - » पत्राचार के लिए लेखक को शोध पत्र प्रेषित करने के साथ ही वायोडाटा प्रस्तुत करना होगा। जिसमें शोध पत्र का शीर्षक, लेखक का नाम, पदनाम, संपर्क नम्बर, ईमेल आईडी एवं पोस्टल एड्रेस संबंधी जानकारी उपलब्ध करानी होगी।
 - » शोध का सारांश 200–250 शब्दों का होना चाहिए। मेन स्क्रिप्ट में फुटनोट नहीं होना चाहिए। शोध पत्र के अंत में सन्दर्भ APA स्टाईल में दिये जाने चाहिए। सन्दर्भ को क्रमानुसार सूचीबद्ध किया जाना चाहिए।
 - » शोध पत्र में तालिकाओं और आंकड़ों को क्रमिक रूप से क्रमांकित

किया जाना चाहिए और प्रत्येक तालिका व आंकड़ों के अंत में उसके स्रोत का उल्लेख आवश्यक रूप से करना होगा।

- » शोध पत्र में उल्लेखित तथ्यात्मक अशुद्धि और कॉपीराइट की जिम्मेदारी शोध लेखक की होगी।

घोषणा पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि.....

(लेखक का नाम) शोध पत्र/पुस्तक समीक्षा.....

(शोध पत्र का शीर्षक) मेरे द्वारा लिखा गया मौलिक शोध पत्र है। यह शोध पत्र अद्यतन कहीं भी न तो प्रकाशित हुआ है और न ही प्रकाशन हेतु प्रक्रियाधीन है। इसके साथ ही साथ साहित्य चोरी की जाँच की जा चुकी है और यह 10 प्रतिशत से कम है।

लेखक का नाम एवं हस्ताक्षर

Guidelines for Authors

- The aim of the research journal is to promote innovation and research in the current scenario on topics related to Fine Arts, Social Sciences, Language & Humanities, Basic and advanced Sciences.
- The research paper sent for publication in the journal should be original and should not be published in any other journal or not in process of publication.
- The author has to submit the declaration form, along with the research paper, clearly stating that the research paper is his/her original writing and not presented to others for publication.
- **Research paper should be in following format :**
 - o Abstract, keywords, objective, introduction, write literature review, hypothesis, research \ methodology, tables and graphs, research and analysis, conclusion, reference list.
 - o M.S. Word, Paper Size A-4, Font Style Times New Roman/ Kritidev/Unicode, Font Size 12, and 1.5 should be margin space and justified and send your research article to e-mail: kalasopan@gmail.com
- For the correspondence, the author will have to submit the research paper as well as submit the bio data. In which information related to the title of the research paper, author's name, designation, Institution name, contact number, email ID and postal address will have to be provided.
 - o The abstract of the research should be between 200-250 words. The main script should not contain footnotes. References should be given at the end of the research paper in APA style. References should be listed sequentially.
 - o Tables and figures should be numbered sequentially in the

research paper and the source must be mentioned at the end of each table and data.

- o The author will be responsible for the factual error and copyright mentioned in the research paper.

Declaration Form

Certified that
 (Name of the author) Research Paper/Book Review
 (title of research paper) is the
 original research paper written by me. This research paper has
 neither been published anywhere nor is it under process for
 publication till date. Along with this plagiarism has been checked
 and it is less than 10 percent.

Name and signature of the author



ISSN: 3107-7560

KALA SOPAN (REG.)

☎ 9935032832, 8127529762

✉ kalasopan@gmail.com  KALA SOPAN

 www.kalasopan.com  [kala sopan](https://www.instagram.com/kala_sopan)  [@kalasopan](https://twitter.com/kalasopan)